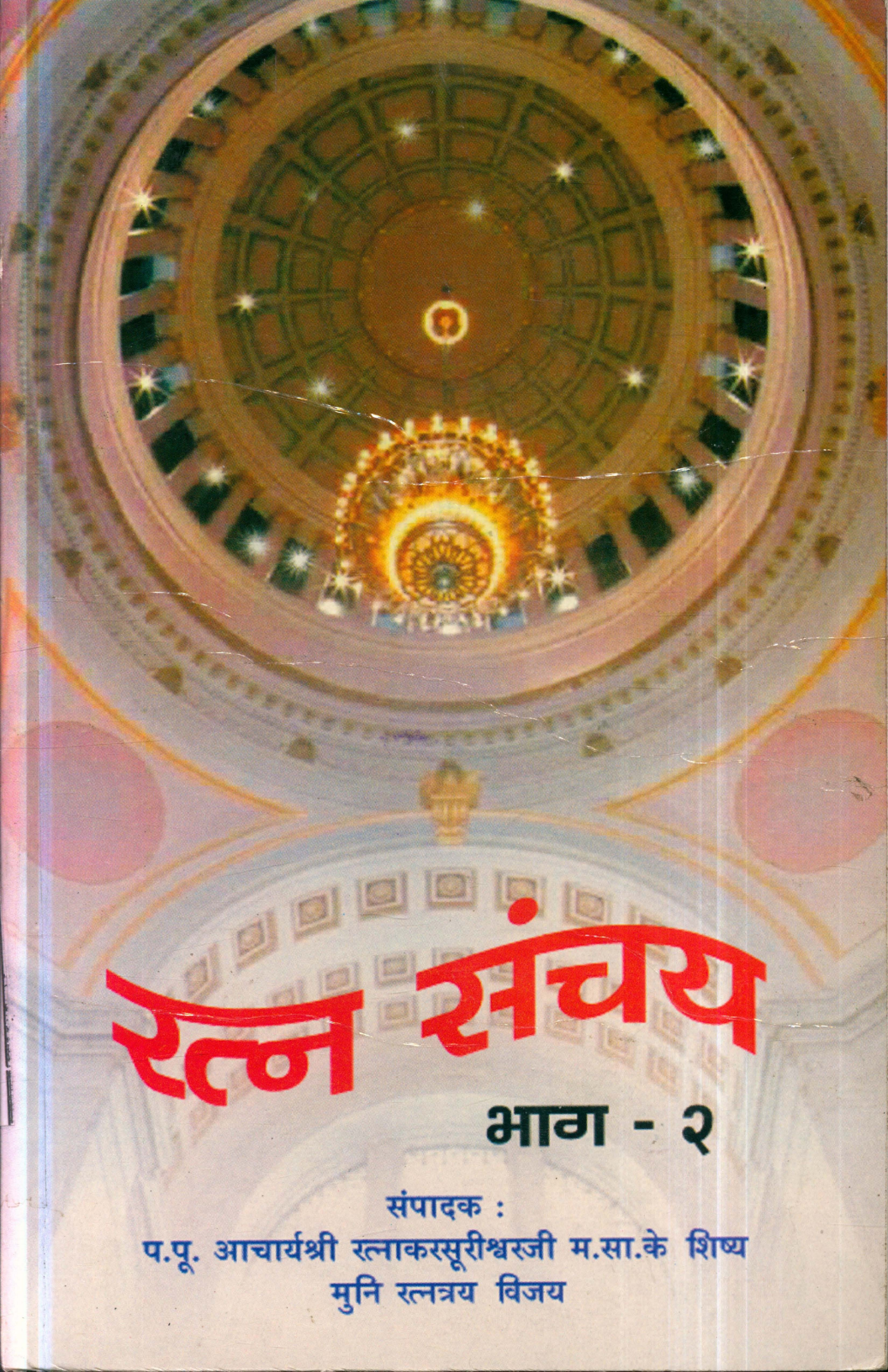

रत्न संचय

भाग - २

संपादक :
प.पू. आचार्यश्री रत्नाकरसूरीश्वरजी म.सा.के शिष्य
मुनि रत्नत्रय विजय

जयउ वीर सच्चउरिमंडण

रत्न संचय

भाग-२

दिव्याशिष दाता

स्व. आ. वि. श्री रत्नशेखर सूरीश्वरजी. म.सा.

शुभाशीर्वाद दाता

कलिकुंड तीर्थोद्धारक आ.श्री.वि राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

प्रेरणादाता

प.पू. युवाचार्य श्रीमद् विजय रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा.

संपादक

मुनि श्री रत्नत्रय विजयजी म.सा.

प्रकाशक

श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय

मालवाडा

जि. जालोर - 343 039, राजस्थान

पुस्तक नाम	:	**रत्नसंचय भाग-2**
संपादक	:	मुनिश्री रत्नत्रय विजयजी म.सा.
प्रथम आवृत्ति	:	1000 सं. : 2056 **द्वितिय आवृत्ति** : 1000 सं.: 2060
तृतिय आवृत्ति	:	2000 सं. : 2062, **चतुर्थ आवृत्ति** : 2000 सं. : 2064
किंमत	:	30-00 (तीस रुपये)

प्राप्तिस्थान **(रत्नसंचयके चारो भाग नीचेके स्थान पे मिलेगे)**

अमदावाद : **श्री पारस गंगा ज्ञान मंदिर (राजेन्द्रभाई)**
बी-104, केदार टावर, राजस्थान होस्पिटल के सामने,
शाहीबाग, अमदावाद-380004. (Mob) 9426539076

: **राजेन्द्रभाइ एन. शाह**
बी-3, रत्नधरा एपार्टमेन्ट, गिरधरनगर ब्रीज के पास,
शाहीबाग, अमदावाद-380004,
● फोन : (079) 22860247 (Mob) 9426539076

मुंबई : **श्री मणीलाल यु. शाह**
D1/203, स्टार गेलेक्सी, लोकमान्य तिलक रोड,
बोरीवली (वे.) मुंबई - 400092 ● फोन : (R) 28011469,
(ओ) 28931011, (Mob) 9920145071

अमदावाद : **श्री जैन प्रकाशन मंदिर**
दोशीवाडानी पोल, कालुपुर, अमदावाद-1
● फोन : (ओ) 25356806

पालीताणा : **श्री पार्श्वनाथ जैन पुस्तक भंडार**
फुवारा के पास, तलेटी रोड, पालीताणा-364270 (सौ.)

मुद्रक :

नवनीत प्रिन्टर्स, (निकुंज शाह) 2733,कुवावाली पोल, शाहपुर, अहमदाबाद
फोन : (मोबाइल) 98252 61177, 94273 26041

प्रस्तावना

विराट भूतकालमें अनेक बार मानव भव व धर्म सामग्री प्राप्त करने पर भी हम आत्मोन्नति से विमुख रहे । इसका कारण यह है कि हम आज तक जिनशासन की महत्ता समज नहि पाए, किसी भी पदार्थ की महत्ता जानने में आती है, तब उसके लिए जो भी योगदान जरुरी होता है उसे हम हर्षपूर्वक स्वीकार करते है ।

मुनि श्री **रत्नत्रय** विजयजीने गुरुमुख से सुना कि "जीवनमें कोई शुभ व्यसन होना चाहिये" बस गुरुदेव के उन अमोघ वचनो को हृदयमें स्थापित करके आगमग्रंथोका पूर्वाचार्यप्रणीत शास्त्रो का प्राचीन अर्वाचीन साहित्य का अवलोकन करनेका शुभ व्यसन अपने जीवन में अपना लिया इसके फलस्वरुप ग्रंथोका दोहन करके अनेक प्रकार की विशिष्ट बातो का गुंथन इस पुस्तिका में किया है

जैसे कि वीरप्रभु के श्रावकोने किस प्रकार अपना जीवन जीया कोने । उनके नियमोको ध्यान में लेकर हम भी एसा जीवन अपनाए ।

श्रावक को प्रभुभक्ति गुरुभक्ति, साधर्मिकभक्ति, श्रुतभक्ति पर कितना प्रेम था, कितना योगदान दिया । राजा महाराजाओने केसी दान गंगा बहाई । तीर्थोकी गौरगाथा वगूढरहस्य का प्रगटीकरणव वैभवशाली श्रावको को जिनशासन प्रति लगाव. एसी अनेक बातो का उल्लेख इस पुस्तक में है ।

में तो इस पुस्तक के प्रुफ को देखकर अचंभा पा गया ओहो! जिन शासन की नींव कितनी गहरी व महत्त्वपूर्ण है । धनाढ्य व्यक्ति भी इस शासन के प्रति न्योच्छावर हो गये । अपना पूरा जीवन शासन को समर्पित कर दिया ।

हम सभी इस छोटी पुस्तिका को पढते पढते शीध्रही शासनको हृदयमें बसाकर आत्मा को शिवसदन का निवासी बनाए.

यही शुभेच्छाके साथ

अनुक्रमणिका

1. भगवान महावीर के दस श्रावको की समृद्धि एवं नियम 1
2. पूजा का प्रभाव 2
3. उदार चित प्रभु भक्त 3
4. प्रभावशाली-पूर्वाचार्य 8
5. तपस्वी आचार्य 10
6. विद्वान आचार्य वसाधु 12
7. आयंबील तप के महा तपस्वी 13
8. साधर्मिक भक्ति 14
9. श्रुत भक्ति 18
10. चौदह पूर्व के नाम और पद 20
11. रात्रि भोजन महा पाप 21
12. गुरु भक्त 23
13. सती दमयंती के चमत्कार 25
14. आठ प्रकार के दान 27
15. वर्तमान चोवीशी के वासुदेवो की माहिति 27
16. गुणरत्न संवच्छर तपकी विधि 28
17. विच्छेद वस्तुए 28
18. वीश विहारमान के कल्याणक और परिवार 29
19. आर्य देशो के नाम और गांव की संख्या 30
20. नौ नारद सात कुलकर 31
21. सोलह रोगो के नाम 32
22. अभव्य को अप्राप्य भाव 32
23 विक्रम राजाके पराक्रम 33
24. विक्रम राजा के राजऋद्धि 34
25. पेथड मंत्री की पवित्रता 34

26 मांडव गढकी महिमा 35
27. कुमारपाल का कर्तव्य 37
28. कौन कहां है । 38
29. आठ मदसे आठ प्रकार की तिर्यंचगति 40
30. नरकमें पंद्रह परमाधामी की भयंकर वेदनाएँ 40
31. ग्यारह गणधरो की माहिती 41
32. सिद्धाचल की सिद्धि 41
33 शत्रुंजय की महिमा 43
34. सिद्धाचल सिद्धा साधु अनंता क्रोड 44
35. शत्रुंजय के सत्तर उद्धार 46
36. सिद्धाचल के संघपति 47
37. संघपतियो के संघका वर्णन 48
38 कुमारपाल राजा के संघकी विशिष्टता 51
39. महाऋद्धिवंत राजा और श्रावक 52
40. गुरुकृपा 56
41. विमलमंत्री का विमल वसहि 57
42. झांझण मंत्रीके संघमें विशिष्टता 58
43. देवगिरिके जिनालय के विशिष्टता 59
44. ग्यारह रुद्रो के नाम 59
45. नौ बलदेवो का परिचय 60
46. बारह चक्रवर्तियो का कोठा 61
47. नौ प्रतिवासुदेवो का कोठा 63
48. राणंकपुर तीर्थ की रम्यता 63
49. अंबादेवीने पोरवाल को दिए हुए वरदान 64
50. कौनसी नवकारवाली उत्तम कहलाती है 64
51. एतिहासिक घटनाएँ (आधार ग्रंथ के साथ) 64
52. हीरसूरिजी से बोध पानेवाले मुसलमान राजा 70
53. चेटक और कोणिकका महाभयंकर युद्ध 95

54. श्रेणिक राजा के 10 पौत्र की गति..... 96
55. अभिमन्युका चक्रावा 101
56. देवद्रव्य भक्षण के रुद्रदत्त ब्राह्मण के चौदह भव 102
57. देव द्रव्य भक्षणसे सागर शेठ के भव 102
58. पाँचसो के संख्या वाले प्रश्न..... 104
59. हजार की संख्या पासे प्रश्न..... 119
60. पद्मावती नाम के प्रश्न 125
61. 'माता' से प्रारंभ होने वाले हुए प्रश्न..... 126
62. गजराज शब्द प्रश्नोत्तरी 129
63. भाई-भाई के प्रश्न..... 131
64. जैन शासन के ज्योतिर्धर..... 133
65. कुमारपाल का संक्षिप्त परिचय 137
66. भगवान महावीर का जीवन परिचय 138
67. जगदगुरु हीरसूरिश्वरजी का परिचय 138
68. सम्राट अकबर के समय के भाव 141
69 समेत शिखर तीर्थ के मुख्य 21 उद्धार..... 141
70. समेत शिखर पर मोक्ष मे गये हुए मुनिवर 143
71. भद्रेश्वर तीर्थके सोलह जीर्णोद्धार 144
72. गिरनार तीर्थ के उद्धार..... 145
73. ऋषभदेवके 100 पुत्रके नाम..... 147
74. संयम पर्याय पालने से देवलोक का सुख..... 148
75. श्रीपाल राजा का परिचय..... 148
76. 64 इन्द्र-56 दिक्कुमारी एवं परमात्माके 250 अभिषेक 149
77 जीरावला तीर्थका जिर्णोद्धार..... 150
78. जीरावला तीर्थमे हुए चातुर्मास..... 151
79. जीरावला तीर्थमे आये हुए बडे संघ..... 151
80. जीरावला मे चमत्कार..... 153
81. वस्तुपाल तेजपाल का वैभव..... 154
82. वस्तुपाल तेजपाल का परिवार..... 154

भगवान महावीर स्वामी के दस श्रावको की समृद्धि एवं नियम

नाम	गांव	कुलधन	गोकुल	गति
1. आनंद	वानीयग्राम	12 करोड सोनामुहरे	4 गोकुल	सौधर्म देवलोक
2. कामदेव	चंपानगरी	18 करोड सोनामुहरे	6 गोकुल	सौधर्म देवलोक
3. चुल्लनी पिता	वाराणसी	24 करोड सोनामुहरे	8 गोकुल	सौधर्म देवलोक
4. सूरादेव	वाराणसी	18 करोड सोनामुहरे	4 गोकुल	सौधर्म देवलोक
5. चुल्ल शतक	आलंभिया	18 करोड सोमामुहरे	6 गोकुल	सौधर्म देवलोक
6. कुंभकोलिक	कंपिल पुर	18 करोड सोनामुहरे	1 गोकुल	सौधर्म देवलोक
7. सद्दाल पुत्र	पोलासपुर	3 करोड सोना मुहरे	1 गोकुल	सौधर्म देवलोक
8. महाशतक	राजगृही	24 करोड सोनामुहरे	8 गोकुल	सौधर्म देवलोक
9. नंदिनी पिता	सावत्थी	12 करोड सोनामुहरे	4 गोकुल	सौधर्म देवलोक
10. तेतली पिता	सावत्थी	12 करोड सोनामुहरे	4 गोकुल	सौधर्म देवलोक

- 10,000 गायोका एक गोकुल होता है ।
- ये दशो श्रावक देवलोकमेंसे च्यवन होकर महाविदेह में राजा बनकर मोक्ष जायेंगे ।
- सभी श्रावक बारह व्रत को धारण करनेवाले थे ।

(उपासक-दशांगसूत्र)

दस श्रावकों के भोग उपभोग के नियम

1. उल उतारने के लिए — जेयेष्ठ मधु की लकडी
2. दांत की सफाई के लिए — मधुवृक्ष का दातून
3. मस्तक सफाई के लिए — आंवले के फल
4. मर्दन के लिए — सहस्त्रपाक तैल
5. स्नानके लिए — आठ घडे जल
6 ओढने के लिए — एक रेशमका एकसूतका
7. लेप के लिए — केसर-चंदन-कस्तुरी
8 पुष्प में — कमल पुष्प तथा मालती की माला

9.	आभूषणमे	— बिना चित्रके कुंडल और एक अंगुठी
10	धूप	— अगर - तुरुष्क
11	भोजन मे	— मुँग और चावल की पेय
12	भक्ष मे	— शक्कर सिंचित धेबर
13	घृत में	— शरद ऋतु मे तैयार किया गया गायका घृत
14	शाक में	— रायडोडी, आंवल, आगथिया
15	कठोल मे	— मुंग, उडद और चनेकी दाल
16	फल में	— पल्लक, बिल्व वि. के फल
17	जमन में	— वडे और पुरण
18	पानी	— आकाश से पडाहुआ जल
19	तांबुल मे	— जाईफल, इलायची, कपूर, लोंग औरं कोंल
20	ओदन में	— कमोद के चावल

- 10 हाथका एक बांस । 20 बांस का एक निवर्तन और 500 हल 1250 कोष तक का क्षेत्र । 500 गाडियां यात्राके लिए, 500 गाडियां भार वहनके लिए रखते थे । **(उपासक दशांग सूत्र)**

पूजा का प्रभाव

- जिन प्रतिमाकी प्रमार्जना करने से 100 साल के उपवास का लाभ होता है ।
- जिन प्रतिमाके विलेपन करनेसे 1000 साल के उपवास का लाभ होता है ।
- जिस प्रतिमाको पुष्पोकी माला चढाने से लाख वर्षके उपवास का लाभ होता है । (धर्म-संग्रह)
- पाटण में आ. हेमचंद्राचार्यजी के सानिध्यमें विधिसहित भक्तामर की 10वी गाथा ग्रहणकर कपर्दि श्रावकने छ मास तक आराधना की (छ मास तक उसी गाथा का गान किया) जिससे उसे 32 सोनेके कुंभ प्राप्त हुए । (प्रबंध - पंचशती)

- वीर प्रभु के पाद कमलो पर सिंदुवार के पुष्प चढाने से दुर्गतानारी एकावतारी हुई ।
- गुणवर्मा राजा के सत्तर पुत्रोने साथ मिलकर सत्तर पूजामें से हरएकने एक, एक पूजा की जिसके पुण्य, प्रभावसे सत्तर पुत्रो को उसी भवमे मोक्ष प्राप्त हुआ । (सत्तर प्रकारी पूजा चरित्र)

उदारचित्त प्रभु भक्त

- पाटण में कुबेरदत्त नामक दरियाई व्यापारी था, उसके घर पर रत्नजडित जिनालय था । उसका भूमितल रत्नों से मंडित था । चंद्रकान्त मणि की जिन प्रतिमाजी थी ।

कुबेरदत्तका परिग्रह परिमाणव्रत

छ करोडसुवर्ण, 800 तोलेमोती, 10 मणिरत्न, 2000 घडे घी, 2000 खांडी अनाज, 10,000 घोडे, 80,000 गायें, 500 हल, 500 गाडियां, 500 दूकाने, 500 मकान, 500 जहाज ।

- चंद्रावती नगरी के 360 करोडपति बारीबारी से आबुजी पर के जिनालयो में पूजा करवाते थे ।
- भीमा साथरियाने नेमनाथ भगवान को बहु मुल्य जवाहरात का हार पहनाया था। साथही साथ गिरनार के जिर्णोद्धार के लिए पर लक्ष द्रव्य दिया था ।
- सती दमयंतीने वनवासके मिट्टी में से शांतिनाथ भगवान की मूर्ति बनाकर बारह साल तक पुष्प, धूप और दीपसे पूजा की थी ।

(कुमारपाल, प्रतिबोध)

- आचार्य धर्मघोषसूरिजी के सदुपदेशमे हरिषेण चक्रवर्तीने अपने सारे मंत्रियों को आज्ञा दी की भंडार में से धन लेकर हरएक गांव मे जिनालयो का निर्माण करो। आचार्य भगवंत को बुलाकर बडे ठाठ से जिनालयों की प्रतिष्ठा करवाओ । अंतमे यह हरिषेण चक्रवर्ती अपना राजपाट छोडकर संयम ग्रहणकर केवली बने और मोक्ष प्राप्त किया । **(प्रबंध - पंचशती)**

- महापद्म नामक नवमे चक्रवर्तीने भरतक्षेत्र में करोडो जिनालय बनवाये थे और 32000 राजाओ को जैन बनाये थे । **(पुष्पमाला च.)**
- महाराजा सर फतेसिंह रावने श्री केसरीयाजी तीर्थकी प्रतिमाजी के लिए सवालाख की अंगरचना (आंगी) अर्पण की थी ।

(उपदेश तरंगिणि)

- पद्मनामक चक्रवर्ती भी अपनी माता की इच्छा पूर्ण करने के लिए प्रतिदिन एक जिनालय का निर्माण करते थे ।**(उपदेश-तरंगिणि)**
- झांझण मंत्रीने सवालक्ष जिनबिंब तथा सिद्धाचल पर सर्व जिनबिंबो को रत्नजडित आभूषण चढाये थे ।
- पाटण के सिधावा नाम के सराफने स. 1428 में आठ जैन चैत्योका निर्माण किया था । **(श्राध्धविधि)**
- चारो प्रकार के देव तीन चौमासी तथा संवच्छरी पर्व के दिन नंदीश्वर द्विप में जाकर अष्टान्हिका महोत्सव करते है । **(श्राध्धविधि)**
- एक शेठने समुद्र की सफर में जानेसे पहले एक लाख का द्रव्य खर्च करके महापूजा की थी, और सफर पूर्ण करने के बाद देव द्रव्यकी वृद्धि के लिए एक करोड रुपयों का खर्च कर महापूजा का आयोजन किया था । **(श्राद्धविधि)**
- भगवानश्री रामचंद्रजीने लंका विजय के बाद अयोध्या में आकर सभी जिनालयोमे पूजा पढवाई थी । **(शत्रुंजय-कल्पवृत्ति)**
- थराद के आभूनामक संघवीने 1510 में नई प्रतिमाओं का निर्माण करवाया था। विजय सेन सूरिजी के करकमलोंसे चारलक्ष जिन बिंबोकी प्रतिष्ठा हुई थी ।
- आबू के पास चंद्रावती नगरी में 999 झालरे हररोज बजती और हररोज सवाशेर केसर पूजामें उपयुक्त होता था । **(गुजरातनुं गौरव)**
- संघवी दयाल शाहने एक करोड रुपयों का खर्च कर एक नवमंजिल जिनालय का निर्माण किया था जो आज दयालशा किला (दयालगढ) के नाम से विख्यात है **(मेवाड का इतिहास)**
- प्रहलादन राजाने नई जिन प्रतिमा बनवाई उसके स्नान जल से कुष्ट नामक रोग नष्ट होने से उन्होंने बडे भव्य जिनालय का निर्माण

करवाया जिससे सुबहमें जागते ही प्रभु के दर्शन होते । आज यही जिनालय पालनपुर में पल्लवीया पार्श्वनाथ के नाम से प्रख्यात है ।

- दोशी रत्नाशाहने चितोडके किलेमे भव्य जिनालय बनवाया था ।
- क्षुल्लक देवचंदने चक्केश्वरी देवीकी आराधना कर भव्य जिनालय निर्मित कर सेरीसा तीर्थ रुप में प्रसिद्ध किया ।
- हेमचंद्राचार्यजी के उपदेशानुसार मंत्री आम्रभट्ट (आंबड)ने उदावसहि में 24 देवकुलिका का निर्माण किया और उदयनविहार एसा नाम दिया । धोलका के शेठ धवल के पुत्रने तथा वैरसिंहने उन जिनालय पर सुवर्ण कलश चढाये ।
- मंत्री आंबडने के शकुनिका विहार का दो करोड रुपये खर्चकर जिर्णोद्धार करवाया था ।
- पाटण के शेठ सात्यकिकी पुत्री दाहीदेवीने अपनी बाल्यावस्थामे एसा नियम किया था कि हेमचंद्राचार्यजी के दर्शन और वंदन किये बिना भोजन नही करुंगी। तब वह अपनी शादी के बाद खंभात गई तो वहां ऐसा नियम किया था कि भगवान मुनिसुव्रत स्वामी और हेमचंद्राचार्यजी की चरणपादूका के पूजन किये बिना भोजन नहीं करना और इस नियम का पालन उसने आजीवन किया था।
- आभड वसाहने तीन लाख सोनामुहरे तक का परिग्रह परिमाण व्रत रखा था । जब धन की वृद्धि हुई तो उसने चौबीस भगवान के चौबीस जिनालय तथा 84 पौषधशाळाओ का निर्माण किया था और सातो क्षेत्रो मे नब्बे लाख सोना मुहरो का उपयोग किया था ।

(प्रश्नोत्तर प्रदीप)

- दीक्षार्थी गंधार श्रावक दीक्षा अंगीकार करने से पहले गुरुआज्ञा प्राप्त कर वैताढय गिरि पर स्थित गुफा में गया था । वहां 24 रत्नबिंबोको दर्शन मे एसालीन हो गया कि सारी रात बीत गई । इस बात का उल्लेख निशीथसूत्र मे भी है ।
- महाराजा श्रेणिक हररोज जिस दिशामे प्रभु विहार करते उसी दिशा मे आठ दस कदम आगे जाकर 108 सुवर्ण जव से स्वस्तिक की रचना करते थे ।

(आवश्यक सूत्र)

- आबू पर्वत पर जिनालयो की रचना हो रहीथी उस समय कारीगर मंद (धीमी) गति से काम करते थे उनका उत्साह बढाने हेतु सुश्राविका अनुपमा देवीने उन्हें कहा कि पत्थरकी घडाई करते जितना चूरा गिरेगा उतना सुवर्ण घडनेवाले को दिया जायेगा । **(प्रभावक चरित्र)**
- कलकत्ते मे इस्ट इन्डिया कंपनी का राज्य था तब एक भाई अंग्रेज की एक दूकान पर जाकर चीजों के बार बार भाव पूछने लगे तो अंग्रेजने कहा भाव क्या पूछते हो खरीदना हो तो खरीदो वरन चलने लगो । तो उस भाईने कहा सारी दूकान की क्या कीमत है ? तब अंग्रेजने गुस्से में जवाब दिया एक लाख रुपये। तब उस खरीदारने तुरंत ही एक लाख रुपयों का चैक दे दिया । सच तो यह था कि दुकान मे 20 लाख के कांच थे । अंग्रेज नामुक्कर नहीं गया । दुकान का सारा माल अजीम गंज उस भाई के यहां पहुँचा दिया । उस भाईने मातृआज्ञा पाकर ये सारे काच के (ग्लास) जो बीस लाख के थे उनको काटगोल के जिनालय में सजादिये । आज भी वहां काचके दरवाजे मौजूद है । इन कांच की यह विशेषता है कि कुछ में बारीस बरसती दिखाई देती है तो कुछ मे बर्फ गिरता दिखाई देता है । यह भक्ति संपन्न श्रीमंत शेठका नाम बाबू लक्ष्मीपती सिंहजी था ।
- कुंडकोली नगर के राजा सोमदेवने 500 सुवर्ण के और 1700 लकडी के जिन मंदिर बनवाये थे और करोडो मनुष्यो के साथ शत्रुंजय पर्वत पर जाकर भगवान आदिनाथ की स्तुति की थी ।

(शत्रुंजय-कल्प)

- देवलोक में विजय देवने एकही काषयिक वस्त्र से 108 जिन प्रतिमाओ का अंग लुछना किया था । **(जीवाजीवाभिगम सूत्र)**
- पालनपुर के जिनालयोमे हररोज 500 वीसल प्रिय द्रव्य का खर्च होता था (36 मुडाद्रम-62,20,800 वीसलप्रिय द्रल्य होता है)

(सेन प्रश्न)

- बाहड मंत्रीने 63 लाख सोनामुहरे खर्च कर गिरनारजी की सीडिया बनवाकर रास्ता बनवाया और शत्रुंजय के जिनालयो के निभाव के लिए 24 गांव तथा 24 बाग भेंट किये थे । **(कुमारपाल - चरित्र)**

- राजीया-बाजीया शेठ गांधार से आकर खंभात में बसे । व्यापार में मुनाफा होने से उन्होने खंभातमें बारह खंभों तथा छ द्वारवाला अतिभव्य जिनालय बनवाया । उसके तहखानेमे 26 देवकुलिका है । 18 हाथी तथा 8 सिंह बनाये हुए है । उन्होने खंभातमे आकर एक ही साल मे 23 लाख रुपये खर्च करके अनेक मानवों की सहायता की थी । इसीलिए कहा जाता है "गांधार के राजीया-वाजीया खंभात बंदर में गाजे (गाजीया)। **(सर्वतीर्थसंग्रह)**
- जब वस्तुपालमंत्री संघ सहित गिरनारजी जाते थे उस समय अनुपमा देवीने भावावेशमें आकर अपने गले में पहने हुए 32 लाख के झवेरात प्रभुको समर्पित कर एक करोड रुपयों के पुष्पों से प्रभुकी पूजा की । इसी से तेजपाल मंत्रीने 32 लाख के नये झवेरात बना दिये । गिरनार से शत्रुंजय जाते समय अनुपमा देवीने 32 लाख के झवेरात आदिनाथ भगवान को पहना दिये, यह देखकर वस्तुपाल की पत्नीने भी अपने 32 लाख के आभुषण भगवान को पहना दिये । घर आनेपर मंत्रीने सभीको वैसे ही आभुषण बनवाकर दे दिये **(उपदेशतरंगिणी)**
- मन्दोदरी अष्टापद पर्वत पर नृत्य करती है तब अंत:पुरकी 16,000 स्त्रियाँ भी साथ नृत्य करती है । **(उपदेशतंरंगिणी)**
- विमलमंत्री नित्य. ध्वजा, स्नात्रादि, प्रसंगोको मनाने के लिए मुण्डस्थलादी 360 गाँवों मे पोरवालोको बसाकर उनके सारे कर माफ कर उनको धनिक बना दिये। अत: सभी गाँवो के श्रावक अपने स्वद्रव्यसे भगवानकी पूजा करते थे । **(उपदेश-तरंगिणी)**
- दानवीर जगडुशाहने 108 जिनालय बनवाये थे । तीन बार शत्रुंजय के संघ निकालेथे औ भद्रेश्वर तीर्थका जिर्णोद्धार करवाया था ।
- रणवीर राजाने 1000 खंभोंवाला जिनालय शत्रुंजय पर्वत पर बनाकर भगवान आदिनाथ की मूर्तिकी स्थापना की थी ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- धर्मनंदन राजाने यक्ष द्वारा दी गई रसकूपिका से कोटीभार सुवर्ण तैयार किया और 10 भार प्रमाण सुवर्ण के 100 जिनबिंब, चांदी के एक लाख जिनबिंब, पित्तलके 9 लाख तथा पाषाण के 90 लाख जिन

बिंब भराकर जैन शासन की प्रभावना की । **(शत्रुंजय-कल्पवृत्ति)**

- सातवाहन राजाने आकाशको छूनेवाले 300 जिनालय बनवाये थे ।
- मांडवगढ के जावड शाह जो "लघु शालीभद्र" कहलाते थे उन्होने पांच जिनालय बनवाये थे । उन जिनालयों में एक ग्यारह शेर सुवर्ण के तथा दूसरी 22 शेर चांदी की एसी दो मूर्तिया बनवाई थी और उन प्रतिमाओ की प्रतिष्ठामे 11 लाख द्रव्य का खर्च किया था ।

(मांडवगढ का परिचय)

- गांधार के इन्द्रजी पोरवालने हीरसूरीजी के सदुपदेश से 36 जिनालयो का निर्माण किया था । **(सूरि-सम्राट)**
- कृष्ण महाराजाने गिरनार तीर्थ पर सोना-रुपा और मणिके जिनालय बनवाये थे। **(गिरनार कल्प)**
- दंडनायक सज्जन मंत्रीने पालीतानासे गिरनार तक की 12 योजन लंबी धजा चढाई थी । **(उपदेशतरंगिणी)**
- दशार्णभद्र राजाने 'वीर प्रभु पधारे' एसी प्रतिसूचना देनेवालों को साढे बारह लाख रौप्य द्रम तथा अपने अंग पर के सार आभूषण भेंट कर दिये थे ।

प्रभावशाली - पूर्वाचार्य

- **स्वयंप्रभसूरि :** (भीनमाल) श्रीमालनगर के राजा तथा 90,000 घरोंकी आबादी को उपदेशीत कर जैन धर्म अंगीकार करवाया था । साथही पद्मावती नगर में यज्ञ में बलि दिये जाते लाखो पशुओंको अभयदान देकर 45,000 अजैन खानदानों को जैन बनाये थे ।
- **रत्नप्रभसूरि :**

उपकेशपुरमें 3,84,000 खानदान के लोगों को मांस और शराब त्याग करवाकर जैन बनाएथे । ओसवाल वंश स्थापित कर 500 दिक्षार्थियों के साथ प्रवज्या (संयम) ग्रहण किया था । वीर निर्वाण के 84 साल के बाद ये सभी आचार्य स्वर्गमें सीधाये थे ।

(पार्श्वनाथ परंपराका इतिहास)

- **कक्कसूरि :**
  जिन्होंने कच्छ प्रदेश में विहार कर लाखों अजैनो को जैन बनाये थे और हजारों जिन बिंबोकी प्रतिष्ठा करवाई थी ।
- **सुप्रतिबद्धसूरि :**
  जिन्होंने सूरिमंत्र का जाप एक करोड बार कियाथा जिससे निग्रन्थ गच्छका नाम कोटी गच्छ रखा गया ।
- **जगत्चंद्रसूरि :**
  इस आचार्य को आघाटपुर (आयड)में राजाने 'तपा' का इलकाब दिया तभी से तपागच्छ नाम चालु हुआ । उन्होंने चित्तौड की राज्यसभामें 32 आचार्यों पर जित हासिल की थी । तथा यावत्जीवन आयंबिल तप की आराधना की थी । वि.स. 1240 से 1285 में आचार्य हुए थे । (जैन परंपरा का इतिहास)
- **सोमसुंदर सूरि :**
  राणकपुर तीर्थ की प्रतिष्ठा के कर्ता, 1800 क्रिया पात्र साधुओं के गुरु, नींदमें भी ओघासे प्रमार्जना करनेवाले, योगशास्त्र तथा उपदेश माला ग्रंथ के रचयिता ये आचार्य वि.स. 1450 में हुए थे । तारंगाजी तीर्थ की प्रतिष्ठा के समय आप की निश्रामें सात लाख मनुष्य इक्टठे हुए थे । (प्रबंध पंचशती)
- **मुनिसुंदर सूरि :**
  संतिकरं स्तोत्र के कर्ता, हमेशा 1000 श्लोक कंठस्थ करनेवाले, सहस्त्रावधानी, 25 बार सूरिमंत्रका जाप करनेवाले, राजाओंसे अमारी (अहिंसा) कां स्वीकार करानेवाले, काली सरस्वती इलकाब को धारण करनेवाले, रत्नाकर, अध्यात्म कल्पद्रुम के रचयिताये आचार्य वि.सं. 1478 में हुए थे । आपने अपने गुरु महाराज को 108 हाथ लंबा पत्र लिखा था और आपने शिरोहीमें तीडोंके उपद्रव को दूर किया था । (प्रबंध पंचशती)
- **धनेश्वर सूरि :**
  आपने धारानगरीमें राजा मुंज की सभा में विद्वत चर्चामें (वादविवादमें) विजय पाई थी । मुंज राजा आपका परम भक्त था । आपने 18 शिष्योंको आचार्य पद दिया था तबसे 18 शाखाओं का उद्‌भव हुआ था । आपने चित्तोड में 18,000 बाह्मणो को जैन बनाये थे ।

तपस्वी आचार्य

- **भद्रेश्वरसूरि :** आप पूनमिया गच्छके थे आपने छ : विगई का त्याग किया था।
- **श्री प्रभसूरि :** छः विगई का त्याग करनेवाले, आयंबिलके बाद उपवास और उपवास के बाद आयंबिल करनेवाले तथा 500 श्रावक-श्राविकाओको बारह व्रत धारण करानेवाले ये आचार्य कच्छुली गच्छ के थे ।
- **शीलभद्रसूरि** – बारह वर्ष की कम उम्रमें संयम अंगीकार करनेवाले तथा संयम ग्रहण के दिन से ही आजीवन छः विगई के त्यागी थे। आपकी देशना कभी भी निष्फल नहीं हुई थी । युग प्रधान काल सं. 1061
- **मूनिचंद्र सूरि –**
  प्रवज्या (दीक्षा) अंगीकार करने के दिन से ही जीवन पर्यंत केवल 12 द्रव्यों का ही उपयोग करते थे । प्रायः आयंबिल तप ही ज्यादातर करते थे ।
- **दादा मणिविजयजी –**
  वीर प्रभुकी 71 वी पाटपर हुए थे जो हमेशा चौविहार एकासने करते थे ।
- **कृष्णर्षिमुनि–**
  वर्षभर में 35 दिन ही एकासने करते बाकी सभी दिन चोविहार उपवास करते थे ।
- **मानदेवसूरि –**
  आचार्य पद ग्रहण करते समय नियम किया था कि आज से छः विगई का त्याग और भक्त के घर की गोचरी ग्रहण न करना ।

- **हीरसूरिश्वरजी –**

  इस आचार्यने अकबर बादशाह को प्रतिबोध किया था । आपने अपने जीवन समयमें 81 अठ्ठम, 222 छठ्ठ, 3600 उपवास, 2000 आयंबिल और 400 चोथभक्त कीये थी । ज्ञानकी आराधना के लिए 22 मास तक उपवास - आयंबिल वगैरह किए थे । चारित्र की आराधना के लिए 11 मास तक तपस्या कीथी । 12 प्रतिमाओं का वहन किया था और हररोज 2000 गाथाओंका स्वाध्याय करते थे ।

- **विद्यासागरजी –**

  आनंदविमल सूरि के शिष्य छठ के पारणे छठ करने वाले ।

- **दानसूरिजी –** यावज्जीवन घी का त्याग किया था ।
- **देवसूरिजी –** आप 11 द्रव्यसे ज्यादा का उपयोग नही करते थे । और आपने पांच विगई का त्याग किया था ।
- **कक्कसूरि –** 12 साल तक छठ्ठ के पारणे पर आयंबिल तप करते रहे थे । **(उपदेश पट्टावली)**
- **आणंद विमल सूरि –** वि.स. 1575 में हुए थे, उन्होंने जीवन में 181 उपवास, 20 स्थानक तपकी 20 बार आराधना, चोथभक्त 400 तथा वीर प्रभुके 229 छठ तथा हरेक कर्मके जितने भेद उतने उपवास नाम कर्म बिना के किये थे । **(जैन-ऐसि. गु.का)**
- **पूंजाऋषिकी घोर तपस्या** (1) बारह वर्ष तक छः विगईका त्याग, 5 वर्ष तक किसी भी तरह की ठंडमें कांबली का त्याग 5 साल तक उल्ट्य कडहवट करके सोने का त्याग.

  40 उपवास – एक बार, 14 उपवास – -14 बार, 8 उपवास – 250 बार, 30 उपवास – 50 बार, 13 उपवास – 13 बार, 3 उपवास – 1500 बार, 20 उपवास – दोबार, 12 उपवास 12 बार, 2 उपवास 70 बार, 16 उपवास – 16 बार, 10 उपवास - 24 बार, पारणे पर सिर्फ छास,

  इस ऋषिने कुल 11,321 उपवास किये थे । **(जैन परंपरा इतिहास)**

विद्वान आचार्यो - साधु

- **महोपाध्याय समयसुंदर गणि –** सं. 1652 में लाहोरमें **'राजा नो ददते सौख्यम्'** चरण के आठ लाख अर्थ किये। जो अब 'अष्टलक्षी' ग्रंथ नाम से प्रसिद्ध है।
- **देवरत्नसूरि –** नमो लोए सव्व साहूणं पदके **सव्व** शब्द के 39 अर्थ किए यह आचार्य आगमिक गच्छ के थे।
- **उपा. लाभविजय जी ग. –** 'नमो दुर्वार रागादि' पद के 500 अर्थ किए।
- **पं. हर्षकुल गणि –** 'नमो अरिहंताण पदके 110 अर्थ किए।
- **सोम प्रभसूरि –** 'कल्याणसार ...' श्लोक के 100 अर्थ किए।
- **मान सागरजी –** योग शास्त्र के 10 वे श्लोकके 100 अर्थ किए।
- **कविश्रीपाल –** 'भू भारोद्वरणो' पद के 100 अर्थ किए।
- **जयसुंदर सूरि –** योगशास्त्र के 5 वे श्लोकके 100 अर्थ किए
- **जिन प्रभसूरि –** खरतर गच्छ के हररोज नयी पांच गाथा रचने के बाद, आहार पानी करते ,
- **बप्पभट्टी सूरि –** हररोजकी 1000 गाथा करनेवाले,
- **दुर्बलिका पुष्पमित्र –** हररोजकी 700 गाथा करनेवाला
- **जित विजयजी –** यह विजयप्रभसूरि के शिष्य सिर्फ चार घडी दिन पीछेका रहे तब 360 नई गाथा कर लेते
- **धर्मघोषसूरि –** 'नमो दुर्वार रागादी के 700 अर्थ किए।
- **विजय सेन सूरि –** 'नमो दुर्वार रागादी' के 700 अर्थ किए
- **मल्लवादी सूरि –** एक ही श्लोक के आधार पर 10,000 श्लोक द्वादशारनय चक्र' ग्रंथकी रचना की और 28,000 श्लोक प्रमाण 'पद्म चरित्र' की रचना की **(उपदेश प्रसाद)**
- **उपा. यशो विजयजी –** एक ही रातमें 4000 श्लोक कंठस्थ लिए
- उपा. विनय विनयजी – सिर्फ एक ही रातमें 3000 श्लोक कंठस्थ किए। **(जैन स्तोत्र संदोह)**

आयंबिल तपके महा तपस्वी

- वर्धमान तपकी अखंड रीतिसे 100 ओलि पूर्ण करनेवाले श्री चंद्रकेवली बने । जो गई चौवीशी में दूसरे निर्वाणी प्रभु के शासनमें मोक्षमे गये । उनका नाम 800 चोवीशी तक अमर रहेगा ।
- भगवान ऋषभदेव की पुत्री सुंदरीने 60,000 वर्ष तक अखंड आंबिल किए ।
- सनत्कुमार चक्रवर्तीने पूर्वभवमें वर्धमान तपकी ओली पूर्ण करके लोकोत्तर पुण्य प्राप्त करके चक्रवर्ती होकर तीसरे देवलोकमें गये ।
- भगवान नेमिनाथ के सदुपदेश से द्वारिका का उपद्रव मिटाने 12 वर्ष तक अखंड आंबिलकी आराधना चली
- पांच पांडवोने पूर्वभवमें वर्धमान तपकी ओली की थी ।
- महासति द्रौपदीने पद्मोत्तर राजाकी आपत्तिमें से दूर / हटने के लिए छः महिने तक छठकेपारणे आंबिल किये थे । **(ज्ञातासूत्र)**
- महासति दमयंतीने पूर्वभवमें 408 अखंड आंबिल से तीर्थंकर तप करके 24 भगवान के ललाटमें/भालमे हीरो के तिलक स्थापित लिए।
- चरमकेवली जंबुस्वामीने पूर्वभवमे 12 वर्ष तक छठ के पारणे आंबिल किए ।
- धम्मिल कुमारने अगडदत मुनि के उपदेश से छ महिने लगातार आंबिल किए।
- धन्ना अणगारने जावज्जीव तक छठके पारणे आंबिल किए
- सिद्धसेन दिवाकर सूरिने 9 साल तक अखंड आंबिल किए
- वीरप्रभुकी 44 मी पाट पर आनेवाले जगत्चंद्रसूरिने जावज्जीव आंबिल किए
- संतिकर स्तोत्रके कर्ता मुनिसुंदरसूरिने जावज्जीव तक अखंड आंबिल किए
- श्री चंद्रकेवलीने सुलसके भवमें 500 आंबिल और उनकी पत्नी भद्राने 9000 अखंड आंबिल किए । **(हस्तलिखित रासमें से)**

- श्रेणीक राजाकी रानी महासेन कृष्णाने दीक्षा लेकर चौदह साल आंबिल तप करके मोक्ष प्राप्त किया ।
- श्रेणीक राजाजी काली आदि रानियोने हरेक तपकी चार परिपाटी की। 1ली परिपाटीमे पारणे विगई त्याग दी दूसरीमे विगई उपयोगमे ली, तीसरी मे विगयका लेप छोडा, चौथी मे आंबिल करके मोक्ष प्राप्त किया ।

  (यह तप पांच साल दो माह 28 दिनका होता है ।) **(अंतगड सूत्र)**
- आंबिल तप करते समय अंबड तापस अवधिज्ञान वैक्रियलब्धि, वीर्यलब्धि पाया । इसलिए हररोज 900 प्रकारके नये नये रुप करके 100 घर पर जाकर जैन धर्म - प्राप्त कराते ।
- वर्धमान सूरिने वस्तुपालके स्वर्ग गमनके बाद जावज्जीव आंबिल किए।

नवपदकी आराधना से अखंड नौ अंक प्राप्त करनेवाले श्रीपाल राजा –

- 900 साल तक राज्य किया
- 9 बार राज्य प्राप्त किया
- 9000 हाथी
- 9000 रथ
- 9 लाख घोडे
- 9 करोड पायदल
- 9 राणिये
- 9 पुत्र
- काल करके मुताबिक नौ वे देवलोकमे गए ।
- हीरामोती के गोले के साथ नवपदका उद्यापन किया ।
- नौवे भवमे मोक्षमें जायेगे । **(प्राचीन सज्झाय में से)**

साधर्मिक भक्ति

- मांडवगढमे ऐसा नियम था कि जो कोई नया साधर्मिक रहने आ जाय उसको एक ईंट और एक सोनामुहर देते । जिससे एक ही दिनमे धनाढय बन जाता ।

- थराद के आभूसंघवीने 360 साधर्मिकोको अपने जैसे बनाए ।
(सुकृत सागर)
- मांडवगढके वासी जगसिंहने 360 वणिक पुत्रोको अपने जैसे धनवान बनाए । वे हमेश एक धनाढ्य 72,000 द्रव्य खर्च करके साधर्मिक वात्सल्य करते थे । (**मांडवगढका इति**)
- जगडुशाहने 1315 के अकाल मे भिन्न भिन्न देशो मे दानशाला खोली थी । रेवाकांठा मे -33, सोरठ देशमें 22, गुजरातमे 33, लाटदेशमे 30, कच्छ मे 30, मेवाडमे-40, मालवामे 40, भालप्रदेशमें-40, उत्तरप्रदेशमे-12 और राजाओ को अन्नका दान दिया था ।
- राजा विसलदेवको -4000 मुडा, मालवाके राजाको 18,000 मुडा, सिंधके हमीरको - 12,000 मुडा, मेवाडके राजाको 32,000 मुडा, दिल्लीके सुलतान को - 21,000 मुडा (100 मण - 1 मूडा) दानमे दिया था ।
- कुमारपाल राजाने एक साधर्मिक को साधर्मिक शालामे देखभालके लिए नियुक्त किया, राजा वेष बदलकर उसी शालामे गया । वहाँ साधर्मिक को 12 गाँव और 500 घोडे भेंट मे दिए । (**प्रबंधपंचशती**)
- वस्तुपाल मंत्रीने 36,000 सोनेके तिलकसे श्रावको को विभूषित किए थे । (**उपदेश तरंगीणी**)
- सोमसुंदरसूरि के उपदेशसे खीमाइ नामकी बाईने समस्त गच्छके साधु-साध्वी को वस्त्र दिए एवं सर्व देशके साधर्मिको के घर सक्कर (साकर) बाँटके जीवन धन्य बनाया था । (**उपदेश तरंगीणी**)
- भरत चक्रवर्तीने बारह व्रतधारी श्रावक-श्राविकाओ के लिए दानशाला खोल दी थी । जो व्रतधारी जबतक जीये तब तक उसको वहाँ ही भोजन लेने का था । (**उपदेश तरंगीणी**)
- पाटणके सिधावा नामके सराफने 28,000 मण धान्य गरीब लोगोको दानमे दिया था और 9000 बंदीवानो को छुडवाये थे ।
(**श्राध्धविधि**)
- वढवाण के रत्नशेठने वस्तुपाल संघ के 7 लाख मानवोकी संघ पूजा और साधर्मिक भक्ति थी । एवं संघवी को दक्षिणावर्त शंख अर्पण

किया था । (**उपदेश तरंगीणी**)

- संप्रति महाराजाने भरत के तीनों खंडोमे प्रत्येक गांव मे साधर्मिक वात्सल्य किया था और 700 दानशाला खोल दीथी ।

(**उपदेश तरंगीणी**)

- बाहडमंत्री हरवर्ष 14 साधर्मिक वात्सल्य और पाँच बार संघपूजा करते थे । (**शत्रुंजय कल्प**)
- एकबार झांझणमंत्री 32,000 साधर्मिकोको लेकर आभूसंघवी की परीक्षा के लिए थराद आया, इस वक्त संघवी पौषधमे थे फिर भी उसका भाई जिनदासने अल्प समयमे भोजन तैयार करके सभी साधर्मिकोको खिलाकर भेंट दी । यह देखकर झांझण खुश हो गया था (**उपदेश-सप्त.**)
- गोविंदचन्द्र राजा के पुत्र जयन्तचंद्रने 18 लाख सोनामुहर दीनदु:खी लोगों के पीछे खर्च दी । (**जैन एति गु. का.**)
- संघवी समरा शाहने शत्रुंजय की प्रतिष्ठाके समय 700 चारण, 3000 बंदीवान एवं 1000 गायको को घोडे, सोनामुहर एवं वस्त्रो का दान दिया था एवं समस्त पुजारियो को इच्छित आजीविका दी थी ।

(**जैन एति गु.का.**)

- श्रीचंद्रराजा हररोज 1 लाख द्रव्य सात क्षेत्रोमे, खर्च-कर देते थे ।

(**चंद्रकेवलि च.**)

- चंद्रावती नगरी में 360 करोडपति रहते थे । वे हमेश बारीबारी से गाँव मे फले चुंदडी करते थे इसलिए प्राय: किसीको भी चूल्हा जलाना नही पडता था। और दूसरे गाँवसे जो कोई साधर्मिक आ जाय उसे एक ईट नलिया, थाली और रुपया देकर धनाढय बनाते थे ।

(**गुजरातका गौरव**)

- महाराजा अशोकने राहगीरो के लिए आधे-आधे मील तक पानीकी प्याउ खडी की थी और उनकी अन्नशालामे हररोज 60,000 ब्राह्मण भोजन लेते थे । (**सम्राट-संपत्ति**)
- दौलता बाद के करोडपति शेठ जगतसिंहने 700 वस्त्रो, 700 सोना मुहरे, श्रेष्ठ तांबुल के साथ साधर्मिको को भेट दी थी ।

(**जैन परंपराका इति.**)

- देवेन्द्रसूरि व्याख्यान दे रहे थे उस वक्त वस्तुपाल मंत्री वहाँ गये, सामायिक लेकर बैठे हुए सभी आराधको को मुहपत्ति दी थी । 18,000 मुहपत्तिए गई (**जैन परंपराका इति.**)
- वाजिया राजिया शेठ ने अपने पापों की शुद्धि करनेके लिए एसा नियम बनाया था नवकार मंत्र जाप करनेवाले प्रत्येक साधर्मिक को परवाला की माला दूँगा जिससे पाप धुल जायेगे ।
- एक बार, भोज राजा माघ कवि के महल जाता है । कवि सोनेकी थाली में राजाको खिलाता है । तब एक जोषीने कहा यह कवि 36,000 दिन जीयेगा । इसलिए राजाने उस माघ कविको 36,000 हीरेके हार देता है । और कवि उन सभी हीरोको दीन-दुखीयोको दे देता है । (**प्रबंध-चिंतामणि**)
- कुमारपाल राजाने धर्मशालामे मुहपत्ति पडिलेहण करनेवाले को 500 घोडे एवं 12 गायोका दान किया था और सभी मुहपत्ति पडिलेहण करनेवालेको 500 गाँवों का दान किया था ।

(**उपदेश रत्नाकर - 146**)

- चन्द्रपुर नगर के धनशठके पास चार करोड सोनामुहरे थी । वह धर्ममे उपयोग करता था । एक बार इस शेठ को घास खानेकी इच्छा हुई इसीलिए शेठ को विचार आया कि मुझे एसी खराब इच्छा हुई इसलिए राजा मेरा धन ले लगा इसलिए शेठने 8 करोड सोनामुहरे सप्तक्षेत्रमे खर्च कर डाली राजाको यह समाचार मिलते ही दूसरी 8 करोड सोनामुहरे शेठ को भेट दी । जितना देता है उतना मिल ही जाता है । (**प्रबंध पंचशती**)
- एक बार विक्रम राजा स्त्रियोके राज्यमे गया । वहाँ पद्मिनी शंखिनी आदि हजारो रुप लावण्य से युक्त थी । स्त्रीने राजा के पास भोगकी इच्छा व्यक्त की परंतु राजा परस्त्री पराङ्मुखी होनेसे सभी स्त्रियोने खुशहोकर चमत्कारिक 14 रत्न दिए । राजाने रास्तेमे दीन-दुखियों को दे दिए । (**प्रबंध पंचशती**)
- एक, किसानने एसा नियम किया कि खेतमें हल खेडने के एक घण्टे

बाद, दान देना इस तरह यह किसान एक - एक घण्टे के बाद दान करता था । **(प्रबंध पंचशती)**

- आभड मंत्रीने 84 पौषध शालाएं बाँध दी थी 90 लाख द्रव्यसात क्षेत्रमे खर्च किया था और प्रासुक घी दूध साधुओको देता था ।
- भरुचमें मुनिसुव्रत स्वामी के आगे आरती दीया करनेके बाद आम्रदेवने 32 लाख द्रव्य दीन-दुखियोको दिया ।

(उपदेश - तरंगीणी)

- अकबर बादशाह दरबारमे बैठता तब एक खजानची सोना मुहरकी थैली लेकर बैठता जो दीन-दु:खी आ जाय उसे सोनामुहर देता था।

(सूरी-सम्राट)

- रत्नचूड राजा पूर्वभवमे मेघनाद नामका कुमार था, जो दान, देनेका व्यसनी था । यह हररोज 18 करोड सोनामुहर दानमे देता था । **(पुंडरीक च.)**
- वाग्भट्ट मंत्रीने युद्धमे विजय पाई इसलिए कुमारपाल राजाने उस मंत्रीको 1 करोड सोनैया और 18 घोडे 9 हाथी भेंटमें दिया । राजसभासे बाहर निकलते ही मंत्रीने हाथी पर बैठकर सभी सोनामुहर उछाल दिए । घोडे भी दानमे दे दिए । सिर्फ हाथी रखा ।

(सुकृत-सागर)

श्रुत भक्ति

- जो जिनेश्वरो के आगम लिखवाते है वे गूँगे, बहरे, और अंधे नही बन है नही **(धर्म-संग्रह)**
- वस्तुपाल मंत्रीने सात करोड द्रव्य खर्च करके ज्ञान भंडार बनाया सर्व आगमोकी हरेक प्रत सोनेकी साही से लिखवाई । अन्य प्रतोको ताडपत्री पर और कागजो पर लिखवाइ । **(प्रभावक-चरित्र)**
- भगवान महावीर स्वामीको 14000 शिष्य थे ।उन्होने भी अेक अेक प्रकीर्णक शास्त्र बनाया था इसतरह 14,000 पईन्नय आगम बने थे। कालान्तरमें बहुत प्रकीर्णको का विनाश हो गया हो एसा लगता है। **(नंदीसूत्र)**

- 'ज्ञाताधर्म कथा' नामक आगममें साढे तीन करोड कथाए थी । हरेक कथामे जन्मभूमि से लेकर मोक्ष तक के वर्णन आते थे ।
- सं. 1472 मे सोमसुंदरसूरि के उपदेश से खंभातमे राम और पर्वत नाम के दो भाईयोने 11 अंग लेखक (लहिया) के पास लिखवाये थे ।
- मथुरा नगरी मे पद्माशाहने सवालाख सोनैया खर्च करके भगवती सूत्रका महामहोत्सव किया था और 'गायेमा' शब्दके पीछे 1-1 सुवर्ण मुद्रासे पूजा की थी । **(पार्श्वनाथ परं. का इति)**
- यह विजयसेन सूरिजीने देवसूरिजी को छ लाख 36,000 श्लोक प्रमाण आगम वाचना का पुनरावर्तन करवाया था ।
- कुमारपाल राजाको एसा नियम किया कि जबतक गुरुके रचे हुए ग्रंथोको ताडपत्री पर न लिखवाउँ तबतक दहीका त्याग । 700 लेखको को बिठाकर आगमो लिखवाना शुरु किया लिखते लिखते ताडपत्रिया पूरी हो गई इसलिए राजाने एसा नियम किया कि जब तक ताडपत्री न मिले तब तक अन्नका त्याग । तीसरे दिन देवीने प्रसन्न होकर बगीचे में ताडपत्रो के वृक्ष उगाये । वनपालकने आकर शुभ समाचार दिए । बादमे राजाने पारणा किया । इस राजाने कुल 6,36,000 आगमोकी सात प्रतिये लिखवायी । व्याकरण की 21-21 प्रतियां लिखवायी थी । **(उपदेश तं.)**
- चौदह पुरवका प्रमाण महाविदेह क्षेत्रके 500 धनुष्यकी कायावाले 16,382 हाथियो को खड्डे मे खडे रखकर इतनी जगह में जितनी सूकी स्याही समाजाय उतनीस्याही से जितना लिखा जाय उतना प्रमाण 14 पूर्वका जानना । **(प्रश्नोत्तरी - चिंतामणि)**
- आग्रा के विजय लक्ष्मी सूरिके ज्ञानमंदिरमे 22,000 पुस्तके और 8000 जितना हस्त लिखित प्रतेहै । **(सर्वतीर्थ संग्रह)**
- जब मुसलमानोने पाटण पर हुमला किया तब पाटण से 50 बैलगांडियां भरके ताडपत्र जेसलमेर ले गये थे । और जेसलमेर मे जैनोंके वैभवशाली स्थिति नष्ट हुई और सैनिक आकर रहने लगे तब महीनो तक उन ताडपत्रोको जलाकर रसोई बनवाई थी ।
- आज जेसलमेरके ज्ञान भंडारमें ताडपत्रियोंं पर रुपेरी अक्षर वाले

2683 ग्रंथ विद्यमान है । सोनेकी फेममे रत्नकी प्रतिमा सरस्वती यंत्र आदि भी है । जिनदत्तसूरिकी 820 वर्ष पुरानी शाल भी है । **(जेसलमेर इति.)**

- थरादके आभू संघवीने एक करोड सोना मुहरे खर्च करके 6,39000 श्लोक प्रमाण ग्रंथोकी रचना करके प्रतिमा बनायी थी ।

(उपदेश तरंगिणी)

- जावड शाहने 36,000 सोनामुहरे खर्च करके सुनहरी स्याही से ग्रंथ लिखवाये थे ।
- पेथड मंत्रीने भगवती सूत्रमे आते हुए गोयमा शब्द पर एक सोनामुहर अर्पण करके ज्ञानभक्ति की थी ।
- मांडवगढ के संग्राम सोनीने भगवती सूत्रमे आते हुए गोयमा के हरेक शब्द पर एक सोना मुहर, उनकी पत्नीने आधी सोना मुहर, पुत्रवधूने 3 सोनामुहर रखकर ज्ञानभक्ति की थी । 36+18+9 = 63 कुल 63,000 सोना मुहरो से पूजा करके उस द्रव्य से सुनहरी स्याही वाले आगम ग्रंथ लिखवाये थे **(मांडवगढका इतिहास)**
- देवर्द्धिगणि क्षमाश्तमणादिने पते कागज पर एक करोड ग्रंथ लिखे हुए है । 45 आगमके कुल श्लोकोकी संख्या 6,59,330 होती है ।

(जैन प्रबोध-1)

- भैंसा शेठने देवगुप्तसूरिके चौमासा मे भीनमाल मे सवालाख द्रव्य खर्च करके आगम महोत्सव किया था और भगवती सूत्रकी वाचना मे हर 'गोयमा' शब्द पर एक एक सोनामुहर रखकर ज्ञानभक्ति की थी ।

(पार्श्वनाथ परंपरा इति.)

चौदह पूर्वके नाम और पद

(1)	उत्पाद पूर्व	—	1 करोड पद
(2)	अग्रायणी पूर्व	—	96 लाख पद
(3)	वीर्य प्रवाद	—	70 लाख पद
(4)	अस्ति प्रवाद	—	60 लाख पद
(5)	ज्ञान - प्रवाद	—	1 करोड मे 10 पद न्यून

(6) सत्य प्रवाद — 1 करोड और 6 पद
(7) आत्म प्रवाद — 26 करोड पद
(8) कर्मप्रवाद — 1 करोड और 80 लाख पद
(9) प्रत्याख्यान प्रवाद — 84 लाख पद
(10) विद्या प्रवाद — 11 करोड 15,000 पद
(11) कल्याण प्रवाद — 26 करोड
(12) प्राणवाय प्रवाद — 1 करोड और 55 लाख पद
(13) क्रिया प्रवाद — 9 करोड पद
(14) लोकबिंदु सार — साडे बारह करोड पद

(प्रवचन - सारोद्धार)

- 13वी सदीमे अघाटपुर राजाके मंत्री जगतसिंह के राज्यमे हेमचंद्र नामके श्रावकने समग्र आगम-ग्रंथो को ताडपत्र पर लिखवाये थे **(तीर्थ-संग्रह)**

रात्रि-भोजन महापाप

- नरकमें जानेके चार दरवाजे

(1) रात्रि भोजन (2) परस्त्री सेवन (3) बोल आचार (4) अनंत काय **(धर्म संग्रह)**

- रातमें यज्ञ, स्नान, पितृतर्पण (श्राद्ध) देवपूजन, दान और भोजन करनेका निषेध है। **(योगशास्त्र)**
- रातमें भोजन करनेवाले दूसरे भवमे उल्लू कौए, बिलाडी, गीध, शूकर सांप, विंछी आदिके अवतार पाते है। **(योगशास्त्र)**
- शरीरमें रहे हुए हृदयकमल एवं नाभिकमल सूर्यास्त होते ही संकुचित्त होता है इसलिए सूक्ष्मजीव खानेमे आ जाते है इसलिए रातका भोजन छोडना चाहिए। **(योग शास्त्र)**
- दूसरी कसमका त्याग करके वनमालाने लक्ष्मणको रात्रिभोजनका कसम करवाया था। **(योगशास्त्र)**
- रातमे पानी पीना खून समान और भोजन मांस के समान मनाता है **(मार्कंड पुराण)**

- रातमे पानी पीनेसे दुगुना पाप, स्वादिम, उससे तीन गुना पाप, खादिममे, उससे तीन गुना पाप अशन मे है। **(रत्न संचय प्र.)**
- रातमें और अंधकारमे सूक्ष्मजीव देखे नहीं जाते इसलिए रातमे बनाया हुआ दिनमे खाया जाय तो भी रात्रि भोजन समान है ? **(रत्न-संचय प्र.)**
- रातमे भोजन करता नहीं है फिर भी उसने रात्रि भोजनका नियम लिया नहीं तो उसको फल मिलता नहीं। **(योग-शास्त्र)**
- हमेशा एकही बार भोजन करनेवाले को अग्निहोत्र (यज्ञ) का फल मिलता है और सूर्यास्त के पहले भोजन करनेवालेको तीर्थयात्राका फल मिलता है। **(पुराण)**
- एक महिने तक रातमे न खाने से 15 उपवास का फल मिलता है। **(श्राद्धविधि)**
- आजसे करीब 400 साल पहले दीव गाँव मे जैनो के 4000 घर और अजैनके 84,000 घर थे। वहाँ पर हीरसूरिजीकी निश्रामे पर्वतिथि पर 500-500 पौषध होते थे। वहाँ शाम होते ही जैन जैनेतर पारसी आदि सभी जातियो के रसोईघर बंद हो जाते थे।

दानसे प्रगटी हुई दिव्यता

- पूर्वभवमें दो साधुओ को जीर्ण वस्त्र प्रदान करने से श्रीधरनामका राजा बना। 500 गाँवोका स्वामी बना। गुरुके पास अपना पूर्वभव सुनकर साधुओको दान देकर देवलोक मे गया। वहाँ से च्यवन होकर राजा बनकर मोंक्षमे जायेगा। **(प्रबंध पंचशती)**
- चन्द्रचूड नामका शेठ गुरुका उपदेश सुनकर विशेष प्रकारसे साधुओकी आहार पानी से भक्ति करने लगा इसे आनेवाले भवमे श्री दत्त नामका चक्री बना। पूर्वभवको जानकर विशेष प्रकार से दान देकर मोक्षमे गया **(प्रबंधपंचशती)**
- पूर्वभवमें वस्त्र-पात्र आदि प्रदान करनेसे आनेवाले भवमे उत्तम चरित्र नामका शेठ बना। जिसके पास 80 करोड गाँव 40 लाख हाथी, 40 करोडे सैनिकोंकी संपत्ति थी। वह सर्वऋध्धि छोडकर संयम लेकर

पालन करके देवलोकमे गया और महाविदेह मे जाकर मोक्षमे जायेगा। **(भरतेश्वर-वृत्ति)**

- चंद्र नामके पुत्रने पूर्वभवमे साधुओको पांच लड्डू प्रदान किये इससे दूसरे भवमें पांच करोड सोनामुहरका स्वामी बना । जो धनशेठ नाम से प्रसिद्ध हुआ । यह शेठ पांचवे भवमे मोक्षमे जायेगा उसका पुत्र छठे भवमे मोक्षमें जायेगा) **(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)**
- वीर प्रभुकी भक्ति करनेसे गाँव गरास दानमे देने से उदय राजर्षि ने उसी भवमें मोक्ष प्राप्त किया ।
- महाराष्ट्रके हुल्लुर नामके गाँव में परमात्माकी नौ पुष्पो से पूजा करनेवाला अशोक माली आठ भव तक लक्ष्मीका स्वामी बना ।

पहले भवमें — नौ लाख द्रम्मका स्वामी
दूसरे भवमें — नौ करोड द्रम्मका स्वामी
तीसरे भवमे — नौ लाख सुवर्ण का स्वामी
चौथे भवमें — नौ करोड सुवर्णका स्वामी
पाँचव भवमे — नौ लाख रत्नोका स्वामी
छठे भवमे — नौ करोड रत्नोका स्वामी
सातवे भवमें — नौ लाख गाँवका स्वमी
आठवे भवमे — नौ निधिका स्वामी

अंतमे पार्श्वप्रभु के पास संयमी बना । अंतमे मोक्ष जायेगा ।

(उपदेश-सप्ततिका)

- मातंग स्थावरने शुद्ध भावसे चार रुपये खर्च करके साधार्मिकको भोजन करवाया था । दूसरे भवमे चार करोड धनका स्वामी बना । **(सुपार्श्वनाथ चरित्र)**

गुरु भक्त

- गंधारके रामजी शेठ को एक मुस्लिमने समाचार दिया कि आ. हीर सूरिश्वरजी म.सा. पधार रहे है । इससे खुश होकर रामजी शेठने उस मुसलमानको 500 चाबियो का गुच्छा देकर इसमे से किसी भी एक चाबी पसंद करके उससे जो भंडार खुल जाय उसमें जो माल हो वह

तेरा यह देखकर मुसलमानने एक बडी चाबी पसंद करके उस चाबी से भंडार खोल दिया उससे 500 जहाजो के रस्से थे। जिसकी कीमत 11,52,000 हुई। उस दिनसे उसका दारिद्र दूर हो गया।

(उपदेश तरंगिणि)

- जोधपुर के राजाने विजयरत्नसूरिके नगर प्रवेशके समय राजचिन्हको छोडकर सामने गये और सोने रुपे के फूलो से गुरुकी पूजा की थी और अंत:पुरकी रानियोने मोती की गहुंली की थी।

(जैन एति गु.का.)

- मांडवगढके संग्राम सोनीने ज्ञानसागरसूरि के प्रवेश महोत्सवमेंदे 72 लाख द्रव्यका खर्च किया था **(मांडवगढ पेथड परिचय)**
- मांडवगढके जावडशाहने साधुरत्नसूरिके प्रवेशमे 1 लाख द्रव्यका व्यय किया था।
- वर्धमानसूरि पधार रहे है एसी खुश खबर लानेवाले व्यक्तिको विमल मंत्रीने सोने के कडे दानमे दिए। **(गुजरात गौरव)**
- जेसलमेरके संघने हीरसूरिश्वरकी सोनामुहरसे पूजाकीथी।
- जब हीरसूरिश्वरजी राधनपुर पधारे तब वहां के संघने 6,000 सोना मुहरो से पूजा की थी।
- पालीताणाके एक व्यक्तिने दीवगाँव जाकर समाचार दिया कि आ. हीरसूरिजी पधार रहे है। इससे वहा के संघने 4 तोले सोनेकी जीभ और वस्त्र दिये थे।
- देवमंगल गणि दिल्लीमें पधारे तब सत्यवादी महणसिंहने उनके नगर प्रवेशमे 56,000 टांक प्रमाण द्रव्य खर्च किया था।
- ऋषभदेव प्रभु पधारे है एसे समाचार भरत चक्रीको मिलते उस चक्रीने पुरुषो को साढे बारसो करोड सोनामुहरे दीथी।

(पुंडरिक-चरित्र)

- कोणिक राजाने प्रभुका समाचार जानने के लिए डाकिया रखा था और हररोज प्रभुके शुभ समाचारमे साडे बारह हजार रुपये देते थे।

(औपपातिक - सूत्र)

- आदित्यनाग गौत्रीय गुलेच्छा शाखाके शाहपुराने सिद्धसूरिके नगर प्रवेशमे तीन लाख द्रव्य का खर्च किया था।

- भीनमाल के सोमदेव श्रावकने गुरु भगवंत के प्रवेश के समय सच्चे मोती की गहुँली पर 500 सोनामुहरे रखी थी
- सत्यपुर (सांचोर) नगरमें सांवत श्रावकने वक्कसूरिके नगर प्रवेशमे सवालाख द्रव्य खर्च किया था फिर नौ लाख द्रव्य खर्च करके शत्रुंजयका संघ निकाला था ।
- वीरप्रभु पधारने के शुभ समाचार नंदीवर्धन को मिलते ही उस पुरुषको साडेबारह लाख सोनैया, पाँच वस्त्र और सोने की जीभ भेटमे दी । **(धर्म कल्प द्रुम)**
- नेमिनाथ तीर्थंकर बने एसे समाचार कृष्णमहाराजा सुनते ही उस मालीको साडे बारह करोड द्रव्य देता है । **(पांडव-चरित्र)**
- नेमिनाथ प्रभु हस्तिनापुरसे बाहर समवसरणमें देशना देते है । ऐसे समाचार पाँच पांडवो को मिलतेही युधिष्ठिरने उस वनपालकको साडे बारह लाख सोनैये दिये। **(पांडव चरित्र)**
- एक ही दिनमे 16 योजन का विहार करके आते आ. धर्मघोष सूरिके समाचार सुनते ही उस माधव भाटको एक सोनेकी जीभ, 32 हीरेके दाँत, पाँच घोडे और ऋद्धिवंत गाँवो भेंटमे दिये ।

(मांडवगढ का इति)

- थाहड श्रावकने आ. देवसूरिजी के नगर प्रवेशमे तीन लाख द्रव्य का खर्च किया था । **(प्रबंध-चिंतामणि)**
- पेथड मंत्रीने आ. धर्मघोषसूरिजीके नगर प्रवेशमे 363 तोरण बांधे थे और पाँच प्रकारके रेश्मी वस्त्रोकी पताकाओसे नगरको सुशोभित किया था **(सुकृत-सागर)**

सती दमयंती के चमत्कार

- पूर्वभवमे बारह घडी तक जैन साधुओ को दुःख दिया इससे सतीको बारह वर्षका पतिके साथ वियोग हुआ
- सती दमयंतीके पुण्यसे प्रंसन्न होकर निवृति देवताने शांतिनाथ भगवानकी सुवर्णमयी प्रतिमा दीथी ।
- दमयंती प्रतिदिन उस प्रतिमाकी पूजा करनेके बाद अन्नजल लेती थी।

- दमयंतीने पूर्वभवमे अष्टापद पर्वत पर जाकर 24 तीर्थंकरोकी मूर्तियोको देखकर प्रत्येक जिनेश्वरके 20-20 आंबिल किये थे ।
- सती दमयंतीने जंगल में 500 तापसो को प्रतिबोध दिया था ।
- एक बार मुसलधार बारिस होने से तापस डरने लगे इससे उसी ने शीयल के प्रभाव से कुंडाला करके तापस को उसमे रखे उससे एक भी पानी की बूँद उन पर न गिरी ।
- एक बार सती दूर जंगलमे गई वहाँ जलहीन नदी देखी । खुद अत्यंत प्याससे पीडित है इससे नदीके पास जाकर नदीमें हाथ डालते ही तुरन्त पानी आया प्यास मीट गई ।
- सतीने एक चोरको उपदेश देकर दीक्षा दिलवाई थी । पूर्वभवमे जिनेश्वरको तिलक चढाने से दमयंती के भालपर सुवर्ण जैसा तिलक प्राप्त हुआ ।
- जिस चोरको दीक्षा दिलवाई थी वो चोर संयम पालन करके देवलोकमे जाकर यह मेरा उपकारी है एसा जानकर सती पर 'सात करोड सुवर्ण'की वृष्टि की ।
- जब बटुक दमयंतीको मायके पहुंचाता है तब भीम जाकर राजा उस बटुक को 500 गांव भेंटमे देता है ।
- जब दमयंती को बारह वर्षके बाद नलराजा का मिलन हुआ तब देवने 'सात करोड सुवर्ण' की वृष्टि की थी ।
- **नल राजा** - नल राजाके पिता देवलोकमें से जंगलमे भटकते नल को सहायता करता है ।
- नलराजामे हाथी को शिक्षा देने की कुशलता, सूर्यपाक रसोईकी चतुराई, फल गिननेकी विद्या, अश्वचलाने की विद्या थी ।
- एक बार नलराजाने मुष्टिके प्रहारसे 18,000 फलोको नीचे गिरा दिए थे । अंतमे राजा रानी दोनोने संयम लेकर अनशन करके देवलोक गये। **(कुमारपाल प्रतिबोध)**

आठ प्रकारके दान

1. अनुकंपा दान — दीन-दुखियोको दिया जानेवाला दान
2. संग्रह दान — लाभ या हानि के सहायके रुपमे जो दान दिया जाता है वह।
3. भयदान — कोटवाल, पुरोहित, जेलर आदि के भयसे दिया जानेवाला दान।
4. लज्जादान — अच्छा लगने के लिए शरम से दियाजाने वाला दान
5. गर्वदान — नाटकीया, बंधुमित्र, चारण आदि को कीर्तिके लिए दियाजानेवाला दान ।
6. अधर्मदान — पापोमें आसक्त जीवो को दियाजानेवाला दान
7. सुपात्रदान — सुपात्र में भक्ति से दिया जानेवाला दान
8. प्रत्युपकार दान— मेरा यह उपकारी है एसा जानकर दिया जानेवाला दान।

(ठाणांग सूत्र)

वर्तमान चोवीशी के वासुदेवोकी माहिती

वासुदेवका नाम	पिता	माता	नगरी	देहप्रमाण	कब हुए
त्रिपृष्ठ	प्रजापति	मृगावती	पोतनपुर	80 धनुष्य	श्रेयांसनाथ के वक्त
द्विपृष्ठ	बाह्य	उमा	द्वारिका	70 धनुष्य	वासुपज्यके वक्त
स्वयंभू	रुद्र	पृथ्वी	द्वारिका	60 धनुष्य	विमलनाथके वक्त
पुरुषोत्तम	सोमदेव	सीता	द्वारिका	50 धनुष्य	अनंतनाथके वक्त
पुरुषसिंह	शिव	अंबिका	अश्वपुर	80 घनुष्य	धर्मनाथके वक्त
पुरुष पुंडरिक	महासिंह	लक्ष्मीवती	चक्रपुरी	29 धनुष्य	अरनाथ मल्लिके बीच
दत्त	अग्निशीख	शेषमती	काशी	26 मनुष्य	अरनाथ मल्लिनाथ के बीच
लक्ष्मण	दशरथ	सुमित्रा	अयोध्या	16 धनुष्य	मुनिसुव्रत नेमिनाथ के बीच
कृष्ण	वसुदेव	देवकी	मथुरा	10 धनुष्य	नेमिनाथ के वक्त

गुणरत्न संवच्छर तपकी विधि

- यह एक उत्कृष्ट तप है । जो विशिष्ट श्रुतधारी करसकता है । इस तपमे वीरासन (कुर्सीकी तरह बैठकर) बैठकर साधना करनेकी है । वीर प्रभुके शिष्य स्कंधकाचार्य, अईमुत्ता मुनिने इस तपकी आराधना की थी । यह तप 16 महिने का है ।

मास	उप	पारणा	मास	उप.	पारणा	मास	उप.	पारणा	मास	उप.	पारणा
1	15	15	5	25	5	9	27	3	13	26	2
2	20	10	6	24	4	10	30	3	14	28	2
3	24	7	7	21	3	11	33	3	15	30	2
4	24	6	8	24	3	12	2	24	16	32	2

(भगवती सूत्र 2. उ. 1)

विच्छेद वस्तुएँ

वीरप्रभुके निर्वाणके बाद 1133 साल में 12 साल दुष्काल के बाद 65 वस्तुओ का विच्छेद

1. कल्पवृक्ष
2. चिंतामणिरत्न
3. विषापहार मणि
4. उद्योतकर मणि
5. सुपराक्रम मणि
6. कामकुंभ
7. कामधेनु
8. संरोहिणी औषधि
9. अद्रश्यकारी अंजन
10. गर्दभी विद्या
11. परकाया प्रवेश
12. गरुड पक्षी
13. राजहंस पक्षी
34. अगंधन कुलके सर्पो
35. देव दुकानो
36. अर्ध चंद्रबाण
37. अगंधन कुर्कटसर्प
38. एकल विहारीसाधु
39. संमूर्छिम अश्व गज
40. काष्टके पक्षकारक कीलिका
41. सुवर्ण पुरुष
42. रस कुपिका
43 रस सिद्धिकारक औषधि
44. बोत्तेर कला
45. रुप परावर्तन कला
46 स्वयंवर मंडपो

14. भारंड पक्षी
15. तालोद्घाटिका विद्या
16. अस्वापिनी विद्या
17. अष्टाङ्ग निमित्त
18. शुद्ध स्वप्न पाठक
19. वक्र घोडाओ
20. सहस्त्रयोधी सुभटो
21. केसरी सिंह
22. पंचवर्ण सुवर्ण
23. पंचवर्ण कमल
24. ऐरावत हाथी
25. अष्टापद-चौपद
26. द्रष्टिविष सर्प
27. स्त्रीको सिंहादिक स्वप्नो
28. विद्याधरो के गमानागमन
29. सिद्ध तपस्या
30. सती स्त्रीओ
31. पारणे पर सुवर्ण वृष्टि
32. ब्रह्मचारीके स्वप्नो
33. साक्षात् देवदर्शन

47 राजाके हजारो स्त्रीओ
48. पद्मीनी स्त्रीओ
49 साधुका अंते उरमां प्रवेश
50 साधुओको वनमे रहेन का
51. सच्चे स्वप्ने
52. तपस्वीकी लब्धि
53. किंपाक वृक्ष
54. राक्षसी मनुष्यो
55. मोतीचूगा हंसो
56. नागदमनी औषधि
57. चित्रावेली
58 चंद्रकान्त मणि
59. गोशिर्ष बावनाचंदन
60 उत्तमोउत्तम सुवर्ण
61. शीतल वृक्षो
62. सारं सार्थवाहो
63. सोने रुपेके कांटे
64. सूर्यकान्त मणी
65. ऋद्धिवंत श्रावको

(सिद्धान्त-सार)

वीश विहारमान के कल्याणक और परिवार

1. च्यवन कल्याणक-अषाढ वद-1
   गणधर-84 - यक्ष-चन्द्रायण
2. जन्म कल्याणक-चैत्र वद 1-
   केवल ज्ञानी-10 लाख - यक्षिणी-पंचागुंली
3. दीक्षा कल्याणक पाल्गुन सुद-3
   साधु-100 करोड - देहप्रमाण 500 धनुष्य
4. केवलज्ञान कल्याणक-चैत्र सुद -13

साध्वीजी-100 करोड - आयुष्य-84 लाख पूर्व

5. मोक्ष कल्याणक-श्रावण सुद-3

श्रावक-100 करोड दीक्षा पर्याय-1 लाख पूर्व

वीश जिनके कल्याणक एक ही दिनमे

श्रविकाए-100 करोड-छद्मस्थकाल-1000 साल

(गुजराती मिति अनुसार)

आर्य देशोके नाम और गाँवोंकी संख्या

	देश	नगर	गाँव
1.	मगधदेश	राजगृही	66,00,000
2.	अंगदेश	चंपापुरी	5,00,000
3.	वंग देश	ताम्रलिप्ति	5,00,000
4.	कलिंग देश	कांचनपुर	1,00,000
5.	काशीदेश	वाराणसी	1,92,000
6.	कोशलदेश	साकेतपुर	99,000
7.	कुरुदेश	गजपुर	87,325
8.	कुशावर्त देश	सौरीपुर	14083
9.	पांचाल देश	कांपिल्यपुर	38,3000
10.	जंगल देश	अहिछत्रा	14,5000
11.	सौराष्ट्रदेश	द्वारामती	68,05,000
12.	विदेह देश	मिथिला	8000
13.	वन्य देश	कोसंबी	28,000
14	शाण्डिल्य देश	नंदिपुर	10,000
15.	मलय देश	भद्दिलपुर	70,0000
16.	मत्स्य देश	वेराट	80,000
17.	वरुण देश	अछापुर	24,000
18.	दशार्ण देश	मृत्तिकावती	1892000
19.	चेहि देश	शुक्तिकावती	68,000
20.	सिंधुसोवीर देश	वीतभय	68,500

21. शुरसेन देश	मथुरा	68,000
22. मंगदेश	पावापुरी	36,000
23. मास देश	पुरिवट्रय	1425
24. कुणाल देश	सावत्थी	63053
25. लाट देश	कोटि वर्ष	2103000
26. केकई देश	श्वेताम्बिका	अर्धआर्य

25" आर्य देश और 31974 अनार्य देश है ।

नौ नारद सात कुलकर

नारदो	देहमान	आयुष्य
1 भीम	80 धनुष्य	84 लाख पूर्व
2 महाभीम	70 धनुष्य	72 लाख पूर्व
3. रुद्र	60 धनुष्य	60 लाख पूर्व
4. महारुद्र	50 धनुष्य	30 लाख पूर्व
5. काल	45 धनुष्य	10 लाख पूर्व
6. महाकाल	24 धनुष्य	65,000 वर्ष
7 चतुर्मुख	40 धनुष्य	32,000 वर्ष
8. नयरमुख	16 धनुष्य	12,000 वर्ष
9. उन्मुख	8 धनुष्य	1000 वर्ष
कुलकर	**देहमान**	**पत्नीएँ**
1 विमल वाहन	800 धनुष	चन्द्रयशा
2 चक्षुष्मंत	850 धनुष	चंद्रकान्ता
3 यशमंत	800 धनुष	सरुपा
4 अभिचंद्र	750 धनुष	पडिरुया
5 प्रसेनजित	700 धनुष	चक्षुकांता
6 मरुदेव	650 धनुष	श्रीकांता
7 नाभि	525 धनुष	मारुदेवा

(पद्म चरित्र)

तीसरे आरेमे पल्योयम का आठवा हिस्सा बाकी रहे तब कुलकरकी उत्स्पत्ति होती है। (**उपदेश सप्तत्तिका**)

सोलह रोगो के नाम

1. श्वास चढना	5. उदरसूल	9 नेत्रभ्रम	13 शरीर मे सुजली
2. जोरदार खासी	6 भगंदर	10 मुखसोजन	14 कानकी वेदना
3. दाहज्वर	7. हरस	11 अन्नकोष	15 जलोदर
4 भयंकर दाह	8 अजीर्ण	12 आंखकी पीडा	16 कुष्ट रोग

(**उपदेश सप्तत्तिका**)

अभव्य को अप्राप्य भाव

1. इन्द्रमहाराजा
2. अनुत्तर विमान में उत्पत्ति
3. त्रिशष्टि की पदवी
4. नारद
5 केवली गणधरके हाथ दीक्षा
6 तीर्थंकरका वर्षीदान
7 अधिष्ठायक देवदेनी
8. लोकांतिक देव
9. देवताका स्वामी
10. त्रायस्त्रिशंत देव
11. संभिन्न श्रोतो लब्धि
12. पूर्वधरकी लब्धि
13. परमाधामी देव
14. युगलिकप्राणी
15. आहारक लब्धि
16. पुलाक लब्धि
17. मतिज्ञानादि लब्धि
18. सुपात्र दान
19. समाधि मरण
20. विद्याचरण
21. मधुशिल्प लब्धि
22. क्षीराश्रव लब्धि
23. क्षीणमोह गुणठाना
24. चौदह रत्न
25. विमानका अधिपति
26. भावसे सम्कज्ञान
27. अनुभव युक्तशक्ति
28. साधर्मि वात्सल्य
29. संवेग पना
30. शुक्ल पाक्षिक
31. प्रमुके माता पिता वि.
32. प्रभुके यक्ष यक्षिणी
33. युगप्रधानपना
34. आचार्यदि के 36 गुण
35. परमार्थ गुण

36-अनुबंध, हेतु, स्वरुपसे तीनका द्रव्य भावसे प्राप्त करने योग्य ।
(आत्म प्रबोध)

विक्रम राजा के पराक्रम

- जिस समय सिद्धसेन दिवाकर सूरिने महाकाली के मंदिरमें अवंती पार्श्वनाथकी मूर्तिको लिंगमे से प्रकट की उस समय राजाने सम्यक्त्व पाया । उसी समय श्रावकके 12 व्रतो का स्वीकार किया और पुजारिको 1000 गाँवोका दान दिया।
- सिद्धसेन सूरि राजाको पूर्वभव सुनाते है कि राजन् ! तूने पूर्बभवमे किसी मुनिओ दान को दिया था और बकरेको बचाया था इसलिये तू महाराजा बना ।
- पूर्वभव सुनने के बाद राजा अनेक प्रकारकी शासन प्रभावना पापो के प्रायश्चित्त के लिये करता है ।
- कैलास पर्वत जैसे 100 जिनमंदिर बंधवाये ।
- हर ज़िनेश्वरकी 9 लाख मूर्तियां भराई ।
- महावीर स्वामीके सभी आगमो को सुनहरी स्याही से लिखाये ।
- 1 लाख साधर्मिको को भोजन कराके वस्त्रो भेट की ये ।
- हररोज सवा करोड द्रव्यका दान देते थे ।
- तीनो काल जिनपूजा, नवकारशी, आदितप, गर्मपानी आदि पीते थे।
- गुरुकी निश्रा हो तो उपाश्रयमे जाकर वंदन, धर्मचर्या करते थे ।
- उज्जैनमे जटाधारी को मूर्तिपूजक बनाये थे ।
- ऋषभदेव भगवानकी पूजाके लिए सांबद्धा आदि 19 गाँव वसाड आदि 84 गाँव घुंटारसी आदि 28 गाँव ईसरोडा आदि 56 गाँव भेंटमे दिये थे ।

(विक्रम चरित्र विविध तीर्थकल्प)

विक्रम राजाकी राजऋद्धि

800 — मुकुटबद्ध राजा सेवामे रहते ।
1,00,00,000 — महान पराश्रमी सुभट (सेनिक) थे ।
16 — उत्तम पंडित, 16 विद्वान भाटकवि, 16 गायक 16 निमित्तवेत्ता, 16 राजवैद्य
3,00,00,000 — 18 योजन के विस्तारमे सैन्य
1,00,00,0000 — हरेक प्रकारके कुल वाहन
40,000 — नौका छोटी नौका, जहाज आदि **(आगम सार संग्रह)**

पेथड मंत्री की पवित्रता

- 56 धडी सुवर्ण बोलकर तीर्थ पर इन्द्रमाला पहनीथी । 56 धडी सुवर्ण बोलनेके बाद एक घडीमे 1 योजन चले एसी उंटनी (सांढ) पर सोना आनेके बाद तीसरे दिन मंत्रीने अन्नजल ग्रहण किया था । (56 धडी यानि 560 मण सोना होता है)
- 56 धडी सुवर्ण बोलकर गिरनार तीर्थको श्वेताबर बनाया था ।
- 21 धडी सुवर्ण बोलकर सिद्धाचल तीर्थमे जिनालय बनवाया
- 7 करोड द्रव्य खर्च करके आगम लिखवाके सातभंडार बनवाये ।
- 11 लाख द्रव्य खर्च करके शत्रुंजयका संघ निकाला उसमे 7 लाख यात्रिक 52 जिनालय और 12,000 बैलगाडियां थी । शत्रुंजयमे 25 धडी सुवर्ण का खर्च किया था ।
- कुल 84 जिनालय बंधवाये थे ।
- 18 लाख द्रव्यका खर्च करके मांडवगढमें 72 देवकुलिका वाला जिनमंदिर बंधवाया था ।
- नवकार मंत्रका भव्य उद्यापन किया जिसमे 68 सोनेके गोले मोती परवालासे भरे हुए, 68 सभी प्रकारके फल, 68 सभी जातिके सुवर्ण-चांदी के सिक्के, 68 रेशमी वस्त्र, 68 धजा आदिरखे थे ।
- जब पेथड मंत्रीने गुरुके पास सम्यक्त्व का स्वीकार किया तब 1,25,000 साधर्मिको को एक लड्डु पर एक सोनामुहर रखकर प्रभावना की थी ।

- सवा करोड द्रव्य का खर्च दान शालामे किया ।
- 32 वर्षकी आयु मे ब्रह्मचर्य का व्रत स्वीकार किया था ।
- मांडवगढके 2 कोष दूरी पर जो साधु म.सा. विचरते होतो वहां जाकर प्रतिक्रमण करते थे और 8 कोष दूर जाकर पाक्षिक प्रतिक्रमण भी करते थे ।
- मांडवगढसे 300 जिनालयो पर सोनेके कुंभ चढाये थे ।
- भीम श्रावकने जब चतुर्थव्रतका स्वीकार करके 700 पूजा के वस्त्रोकी प्रभावना साधर्मिकको की उसमे एक वस्त्रकी जोड पेथडमंत्रीको आई तब मंत्रीने उस वस्त्रको हाथी पर रख कर वरघोडेके साथ बहुत सम्मानपूर्वक अपने घर मे लायी । उसमें 10,000 का खर्च हुआ था।
- चर्तुथव्रत की स्वीकृति के बाद मंत्रीके शरीरका एसा तेज बढ गया कि उसके पांव धोकर पानी पीनेसे रोग दूर हो जाता था । राजाकी रानी का बुखार यही मंत्रीके सालसे उतरा था । पागल बना हुआ हाथी भी मंत्रीके वस्त्रमे हुआ था, मंत्रीने चतुर्थव्रत लिया तब 1,800 श्रावकोको पाँच-पाँच रेशमी वस्त्र भेजे थे
- इस मंत्रीने 18 लाख रुपयोका खर्च करके शत्रुंजयावतार' नामका 72 देवकुलिकावाला भव्य मंदिर मांडवगढमे बंधवाया था ।
- एक बार पेथड मंत्रीके पिता देदाशाको जब राजाने जेलमे बंध किया तब उसने पार्श्वनाथके नाम स्मरण से हथकडी तोड दी थी ।
- पेथड मंत्रीने हेमड मंत्री के नामसे 3-3 साल तक दानशाला खोल दीथी और पेथड मंत्रीको राज्यकी ओर से हर साल 180 मण सोना मिलता था । उस दानशालामे सवा करोडका खर्च हुआ था ।

(सुकृत सागर, प्रबंध पंचशती, उपदेश सार)

मांडवगढकी महिमा

- मांडवगढमें 300 जिनमंदिर और सात लाखकी आबादी थी ।
- मांडवगढ मे जो पार्श्वनाथकी मूर्ति है वह प्रतिमा सीता सतीने गोबरमय बनायी थी । फिर उस सती के शीलप्रभाव से वज्रमयी बन गई थी।
- इस नगरमे चंद्राशाह नामका श्रेष्ठी था । उन्होने राजकीय गौरवके साथ

जैन धर्मकी महत्ता बढाई थी । उन्होने 52 जिनमंदिर और 36 दीवादांडियां बंधवायी थी ।

- इस नगर के संग्राम सोनीने मांडवगढमे कीर्तिमंदिर सात मंजिल का बनवाया था । सं. 1502 मे बुद्धिसागर नामका ग्रंथ रचा था ।
- इस नगर के मेघ मंत्रीने सोमसुंदर सूरिके उपदेश से सुवर्णटांक के साथ 90 सेर लड्डू की प्रभावना मांडवगढमे की थी ।
- इस नगर में कुंवरपाल नामका श्रावक आठ प्रहर नये नये पूजा के कपडे पहनकर प्रभु पूजा करता था और नयी नयी आंगी बनाता था।
- झांझण मंत्रीने जिनालयका जिर्णोध्धार कराके सात मंजिल का जिनमंदिर बनवाया था ।
- श्रेष्ठी जावड शाहने मांडवगढमे पाँच जिनालय बनवाये थे । उसमें 11 लाख द्रव्यका खर्च किया था और 11 सेर सोनेकी 22 सेर चांदीकी प्रतिमा भराई थी। इस श्रेष्ठीकी उदारता बहुत होनेसे मांडवगढमे 'लघुशालीभद्र' नामसे पहचाने जाते थे ।
- इसी नगरमे गद्धाशाह और भेंसा शाह नामके श्रेष्ठी हुए थे । जिन्होने धोलका नगर के व्यापारियो पर एक समय एसा प्रभुत्व बता दिया कि 'शाह' पदका त्याग करनां पडा । आज भी इन दानवीरो की इमारते खडी है । उनकी हवेलीयो के आगेके हिस्से मे 1400 स्फटिक के बिंब भरे थे एसी बाते सुनीजाती है ।
- इस नगरमे कोई नया साधर्मिक आ जाय उसे हर घरसे एक सुवर्णमुहर और एक ईंट दी जाती थी जिससे एक ही दिनमें धनाढ्य बन जाता था ।
- सं. 1349 मे मंत्री झांझणने मांडवगढ से शत्रुंजयका संघ निकाला था।
- झांझण मंत्री जब संघ लेकर अहमदाबाद पहुँचे तब गुजरात के भोजन संमारंभ मे लाखो लोगोको खिलाया था ।
- लीलावती रानीने मांडवगढ के शत्रुंजयावतार जिनालयमे एक लाख सोनेके जव से स्वस्तिक किया था
- इस नगरके मंत्री सेसाशाह पोरवालने अचलगढमे 1,400 मण सोनेकी प्रतिमा भराई थी ।

- वेल्लाकने मांडवगढ से राणकपुरका 300 साधुओ के साथ संघ निकाला था ।
- मांडवगढ के होजनशाहमे प्रथमणी देवी चिंतामणी पार्श्वनाथकी पूजा करने के बाद सवालाख सोनामुहरका दान देती थी ।

(सुकृत सागर, उपदेश-तरंगिणी)

कुमारपालका कर्तव्य

- वर्षाऋतुमे (चातुर्मास) जीवोकी उत्पत्ति होने के कारण पाटण से बाहर नही जाते थे ।
- वर्षाऋतुमे हररोज एकासणा करते इसमें भी 8 ही द्रव्य वापरते थे ।
- जब उपाश्रयमे सामायिक करने जाते तब 1800 शेठो के साथ जाते । चार्तुमासमे हरिवनस्पति की सब्जी त्याग करते थे ।
- हररोज 7 लाख घोडोको, 11,000 हाथियो को और 80,000 गायोको छानकर पानी पिलाते थे और जब घोडे पर बैठते तब पूंजनीसे साफ करके बैठते ।
- परिग्रह परिमाण व्रतमे इन्होने इस प्रकार नियम रखे थे ...
  11 लाख घोडे, 11,000 हाथी, 50,000 रथ, 80,000 गाये, 32,000 मण तेल घी, सोने चांदीके 4 करोड सिक्को 1,000 तोला मणि रत्न घर-दुकान, जहाज आदि500 रखनेका व्रत ग्रहण किया था ।
- इस राजा के समय मे कत्लखाने नही थे एक शेठने जू मार डाली उसके दंडमे यूकाविहार, नामका जिनालय बनाया था ।
- हररोज योगशास्त्र और वीतराग स्तोत्र पाठ करनेके बाद ही दंत धावनादि क्रिया करते थे ।
- हररोज 32 जिनालयोके दर्शन बाद ही भोजन करते थे ।
- अपने पापोकी शुद्धिके लिए तारंगाजीमे 32 मंजिला जिनालय बनवाया था ।
- इस राजाने शत्रुंजय पर आदिनाथ भ.की नवलाख द्रव्य से नये बनाये हुए 100 पत्ती (पर्ण) के कमलो के फूलोसे नौ अंग पर पूजा करने के बाद फिर एक करोड पुष्पोसे पूजा की थी ।

- शत्रुंजयके सात संघ निकाले थे उसमे प्रथम संघमे नौ लाख के नौ रत्नोसे पूजा की थी (पूजा के बाद 98 लाख धन दानमे दिया था ।
- एक बार राजाके पूजाके कपडे चाहड मंत्रीने पहने उसको राजाने कहा, अब मेरे कामके नहीं रहे, उसे मंत्री बंबेरां नगरीमे जाकर वहां के राजाओ जीतकर वहां के 700 सालवीयोको पाटण ले आया इसलिए राजा हररोज नये कपडे से पूजा करता था ।
- कुमारपाल के राजाने माछीमारो की 1,80,000 जालोको जलाकर माछीमारो को अच्छे मार्ग पर ले आये थे । एवं वहां जयचंद्र राजाको 2 करोड सोना मुहर और 2000 अश्व भेंट किये थे ।

(कुमारपाल का रास)

कौन कहाँ है ।

कौन	कहां है	आधारग्रंथ
दशार्णभद्र	मोक्षमे	ठाणांगसूत्रवृत्ति
द्रौपदी	12 वा देवलोकमे	हेमवीरचरित्र
चिलातीपुत्र	8वा देवलोकमें	ज्ञाता सूत्र
नंदिषेण	मोक्षमे	उपदेश प्रसाद
अषाढाभूति	मोक्षमे	उपदेश प्रसाद
आर्दकुमार	मोक्षमे	उपदेश प्रसाद
वंकचुल	12वे देवलोक	उपदेश प्रसाद
रोहिणेय चोर	प्रथमलो देवलोक	उपदेश प्रसाद
धन्वंतरी वेद्य	सातवी नरकमें	उपदेश प्रसाद
सत्यकी विद्याधर	नरकमें	उपदेश प्रसाद
भुवनालंकारहाथी	5वे देवलोक	जैन रामायण
कैकेयी	मोक्षमे	जैन रामायण
भामंडल	देवकुरुमे	जैन रामायण
लव-कुश	मोक्षमें	जैन रामायण
हनुमान	मोक्षमे	जैन रामायण
वादिदेवसूरि	देवलोकमे	आचारप्रदीप

नलराजा	देवलोकमे	कुमारपाल प्रति.
दमयंती सती	देवलोकमे	कुमारपाल प्रति.
रोहिणी	देवलोकमे	कुमारपाल प्रति.
देवकी	देवलोकमे	कुमारपाल प्रति.
बलदेवऋषि	देवलोकमें	कुमारपाल प्रति.
रथकार	पांचवे देवलोकमें	कुमारपाल प्रति.
हिरन	पांचवे देवलोकमें	कुमारपाल प्रति.
चेटक राजा	देवलोकमे	कुमारपाल प्रति.
कपर्दि यक्ष	देवलोकमे	पुंडरीक चरित्र
भरत	मोक्षमें	ऋषिमंडलवृतो
महाबलऋषि	पांचवे देवलोकमे	ऋषिमंडलवृतो
हेमचंद्राचार्य	चौथे देवलोक	विचार संग्रह
कुमारपाल	व्यंतरमे	विचार संग्रह
तामली तापस	इशानमें	विचार सार
इन्द्रजित	मोक्षमें	शत्रुंजयमाहा
मेघनाद	मोक्षमें	शत्रुंजयमाहा
रावणके पुत्र	मोक्षमें	शत्रुंजयमाहा
सागरके 60000 पुत्र	12 वे देवलोकमे	अजितनाथ च.
लक्ष्मण	चौथे नरकमे	पांडव चरित्र
जरासंघ	चौथे नरकमे	पांडव चरित्र
वासुदेव	देवलोकमे	पांडव चरित्र
जटायुपक्षी	चौथे देवलोकमे	पांडव चरित्र
पाँच पांडव	मोक्षमे	पांडव चरित्र
रावण	नरकमे	पद्म चरित्र
मेघकुमार	देवलोकमे	कल्पसूत्र
वेश्रमण	मोक्षमे	पद्म चरित्र
हरिषेण चकी	मोक्षमे	पद्म चरित्र
समुद्रविजय	चौथे देवलोकमे	मूलशुद्धि प्र.
शिवादेवी	चोथे देवलोकमें	नेमनाथ कृष्ण च.
प्रदेशीराजा	अमर विमानमे	नेमनाथ कृष्ण च.

आठ मदसे प्राप्त आठ प्रकारकी तिर्यञ्च गति

1 जाति मद करने से – कृमि आदि होते है
2 कुल मद करने से – गीदड आदि होते है
3 रुप मद करने से – उँट आदि होते है
4. बल मद करने से – तितली आदि होते है
5. विद्यामद करने से – बोकडा आदि होते है
6. ऋद्धि मद करने से – कुत्ते आदि होते है
7. सौभाग्य मद करने से – साँप आदिहोते है
8. लाभ मद करने से – बैल आदि होते है

(महापुरुष चरियं)

नरकमे पंद्रह परमाधामी की भयंकर वेदनाएँ

(1)	अंब	–	500 योजन उछालता
(2)	अंबर्षि	–	छूरे से टुकडे करता है
(3)	श्याम	–	यष्टिमुष्टिसे प्रहार करता है
(4)	शबल	–	हृदयको फाडते है
(5)	रुद्रदेव	–	भाला-बरछी आदि से मारते है।
(6)	उपरुद्रदेव	–	अंगोपागको छेदते है
(7)	कालदेव	–	गरमागरम तेलमे डालते है ।
(8)	महाकाल देव	–	मांससे टुकडे खिलाते है
(9)	असिदेव	–	तलवारसे टुकडे करते है
(10)	पत्रधनु	–	बाणो से नाक कान बिंधते है
(11)	कुंभदेव	–	कुंभीपाकमे पकाते है
(12)	वालुआ	–	तप्त बालूमे सेकते है
(13)	वेतरणी	–	तप्त सीसेमे डालते है
(14)	खरस्वर	–	कांटीले वृक्षोसे घिसते है
(15)	महाघोष	–	पशुओकी तरह बाडेमे डालते है ।

ग्यारह गणधरो की माहिती

गणधर	जन्मभूमि	माताका नाम
1 गौतम स्वामी	गोबरगाँव	पृथ्वी
2. अग्निभूति	गोबरगाँव	पृथ्वी
3. वायुभूति	गोबरगाँव	पृथ्वी
4 व्यक्तभूति	कोल्लाक	वारुणी
5 सुधर्मास्वामी	कोल्लाक	भद्रिका
6. मंडित	मौर्यगाँव	विजयादेवी
7. मौर्यपुत्र	मौर्यगाँव	विजयादेवी
8. अकंपित	मिथिला	जयंती
9. अचलभ्राता	कोशल	नंदा
10 मतार्य	तुंगिक	वारुणदेवी
11 प्रभास	राजगृही	अतिभद्रा

पिताका नाम	दीक्षा	शिष्य	निर्वाण
वसुभूति	50 वे वर्षमें	500	92 वर्षमे
वसुभूति	80 वे वर्षमें	500	74 वर्षमे
वसुभूति	43 वे वर्षमें	500	70 वर्षेमें
धनमित्र	51 वे वर्षमें	500	80 वर्षेमें
धनमित्र	51 वे वर्षमें	500	101 वर्षेमें
धनदेव	48 वे वर्षमें	350	83 वर्षेमें
मौर्यविप्र	64 वे वर्षमें	350	65 वर्षेमें
देवदत्त		300	78 वर्षेमें
श्रीवसु	47 वे वर्षमें	300	62 वर्षेमें

सिद्धाचल की सिद्धि

- शत्रुंजय तीर्थ स्पर्शन करने का फल
- नंदीश्वर द्विपकी यात्रा करनेसे जो पुण्य मिले उससे दुगुना पुण्य कुंडलगिरिकी यात्रा करनेसे मिलता है ।

- उससे तीन गुना पुण्य रुचक गिरि की यात्रा करनेसे मिलता है ।
  " चार " " गजदंत गिरिकी " "
  " दो " " जंबुवृक्ष पर आये हुए चैत्योसे मिलता है ।
  " छ " " धातकी वृक्ष पर रहे हुए मिलता है
  " बारह " " पुष्करवर द्वीप में रहे हुए चैत्यो से मिलता है
  " सौ " " मेरुपर्वतकी चूलिका परके चैत्यो की यात्रा से मिलता है
  " हजार " " समेत शिखर की यात्रा से मिलता है ।
  " दस हजार " " अंजनगिरिकी " "
  " लाख " " रैवतगिरिकी " "
  " करोड " " शत्रुंजयकी स्पर्शना करनेसे "

(उपदेश-प्रसाद)

- शत्रुंजय पर्वतको देखे बिना शत्रुंजय की यात्रा को जानेवाले संघका वात्सल्य करता है तो करोड गुना पुण्य मिलता है । **(श्राध्ध विधि)**
- अन्य स्थानमें करोड पूर्व तक क्रिया करने से जितना शुभ फल मिलता है उतना फल इस तीर्थमे निर्मलता से क्रिया करने वाले को अंतर्मुहुर्तमें प्राप्त होता है **(श्राद्ध विधि)**
- शत्रुंजय तीर्थमे रथ अर्पण करने से चक्रवर्ती होता है । **(श्राद्धविधि)**
- रायण वृक्ष के हर पत्ते में, फल में, थड में देव का वास है । इसलिए काटना नही ।
- इस वृक्ष की पूजा करने से बुखार दूर हो जाता है
- दो मित्र, दो सखिया होने से पूर्व इस वृक्षकी साक्षी रखे तो सुख मिलता है
- वृक्ष से नीचे गिरे हुए छिलके, पत्तेका पानी करके पीने से अथवा शरीर पर स्मरण करके लगाने से दुष्ट रोग नष्ट होता है
- सोनेकी चोरी की हो तो चैत्र पूर्णिमाका उपवास करके यात्रा करने से शुद्ध होता है।
- वस्त्रकी चोरी की हो तो इस तीर्थमे सात आंबिल से शुद्ध होता है
- कांसा, तांबा पित्तलकी चोरी की हो तो - सात दिन पुरिमट्ढ तप

करने से शुद्ध होता है ।

- मोती परवालेकी चोरी की हो तो - 15 आंबिल से शुद्ध होता है ।
- अन्न जलकी चोरी की हो तो - सुपात्र दान से शुद्ध होता है ।
- पशुओ की चोरी की होतो - मूलनायक पूजासे शुद्ध होता है ।
- राजभंडारमे से चोरी की होतो - कार्तिक महिने में सात आंबिल से शुद्ध होता है ।
- सधवा, विधवा, सध्वीके साथ गमन करने से - छ महिने तक तप करने से शुद्ध होता है ।
- दूसरे की चीज खुद रख ले तो - छ महिने तक सामायिकसे शुद्ध होता है

शत्रुंजय की महिमा

- इस तीर्थ ध्यान करने से - 1000 पल्योपम
- इस तीर्थमेका अभिग्रह धारने से - लाख पल्योपम
- इस तीर्थकी ओर चलने से - एक सागरोम जितने कर्म नष्ट होते है

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- इस तीर्थ पर नवकारशी करने से - दो उपवासका लाभ
- पोरसी करने से - तीन उपवास का लाभ
- पुरिमढ करने से चार उपवासका लाभ
- एकासणा " - पांच "
- आंबिल " पंद्रह "
- उपवास " तीस " **(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)**
- इस तीर्थ पर धूप करने से - 15 उपवास का लाभ
- और कपूरका धूप करनेसे - मासखमण का लाभ होता है

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- शत्रुंजय तीर्थके दर्शन - पूजन से - 30 उपवासका लाभ
- तलहटीमे एक प्रहर जागरण करने से छ महिने के उपवासका लाभ
- शत्रुंजय तीर्थको सातबार वंदन करने से तीसरे भवमे मोक्ष
- चैत्री पूर्णिमाके दिन 10, 12, 30, 40 और 50 पुष्पोकी मालाए चढाने

से क्रम के अनुसार 1, 2, 3, 4, 5 उपवाका लाभ होता है ।

(उपदेश प्रसाद सा. 13)

- सुबह मे जागरण के साथ ही शत्रुंजय की स्तुति करने से सभी पापो का नाश होता है । अन्य तीर्थोकी हजारो यात्राएँ करने से जितनापुण्य मिलता है उतना पुण्य इस तीर्थकी यात्रा करने से मिलता है । **(उपदेश-प्रसाद)**
- तीर्थोद्भावना एंव तीर्थोन्नति को कारण शत्रुंजय पर जैसा तैसा संयमी भी पूजनिय है। **(शत्रुंजय माहा.)**
- भरत चक्रवर्ती के जिर्णोद्धार कराने के बाद 10 लाख खेचरोंने एसा अभिग्रह किया कि हम हर हंमेश यहां जिन पूजा करेगे ।

(पुंडरिक चरित्र)

- देवदत्त जब पुंडरिक गणधर से संयम लेता है उस समय उनके साथ 10,000 जैन श्रावक भी संयम लेते है ।
- भरत चक्रीने शत्रुंजयकी तलेहटी मे 22 योजन विस्तारवालो 5 करोड घर बनाकर नगर बनाया था उसमे 25 लाख जिनालय 5 लाख पौषधशाला और 5 करोड बाह्मण को श्रावक बनाये थे ।

(पुंडरिक-चरित्र)

- पार्श्वनाथ भ. के भाई हस्तिसेनने संघ निकाला उस समय रायण वृक्ष से दुध निकला था ।
- 500 वर्ष पहले देवमंगल गणिने चंदन तलावडी पास अट्ठम किया था उस समय कपर्दि यक्षने आदिनाथकी रत्नमय प्रतिमा बनाई थी इससे तीसरे भवमे मोक्ष प्राप्त हुआ था ।

सिद्धाचल सिद्धा साधु अनंताक्रोड

- सोमदेव राजा 800 सेवक और 50 राजाओ के साथ चंद्रसूरि के पास संयमी बनकर शत्रुंजय पर मोक्षमें गये थे ।
- वीर राजा शत्रुंजयका महिमा सुनकर संयम लेकर वीरसूरि बने । अंतमे 3 लाख साधु के साथ मोक्षमे गए ।
- ढंक सूरिको केवलज्ञान होने के बाद शत्रुंजय पर निर्वाण प्राप्त किया

यह सुनकर उनका पुत्र हरराजा असंख्य संघोके साथ शत्रुंजय गया। वहां आठ करोड द्रव्य खर्च करके जिनालय बनाया। एकबार इस राजाको घर पर बैठे बैठे (इस पर्वतका नाम ढंक होने) ढंक ढंक एसा ध्यान करते करते केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। उस वक्त दो करोड मुनियो ने शत्रुंजय पर मोक्ष प्राप्त किया था।

- एक बार अजीतनाथ भ. इसतीर्थमे देशना करते थे उस समय 3 लाख साधुओने मोक्ष प्राप्त किया था
- इस तीर्थ पर शांतिनाथ भ.का ध्यान करते वज्रदंब नामक मुनिने एक लाख परिवार के साथ मोक्ष प्राप्त किया था।
- शांतिनाथ भ. के चातुर्मास में 1, 52, 55, 777 मुनिवर केवली बनकर मोक्षमे गये थे।
- दंडवीर्य राजा संघ लेकर इस तीर्थ आये थे उस समय उनके संघमे रहे हुए सात करोड श्रावक श्राविकाओको इस तीर्थके ध्यान से मोक्ष प्राप्त हुआ था।
- धन नामका मंत्री 500 भटोके साथ शत्रुंजयमे आया तब प्रथम 500 भंट केवली बने फिर मंत्रीको केवलज्ञान प्राप्त हुआ
- प्रद्युम्न वि. साडे तीन करोड कुमारोने रायणवृक्षकी प्रदक्षिणा करके केवली बने थे।
- भरत चक्रवर्तीने पांच करोड, उनका पुत्र 1 लाख और बाहुबलीजीका पुत्र 13 करोड मुनिवरोके साथ मोक्षमे गया।
- नमिविद्याधरकी 64 पुत्रियां (चैत्र व. 14)मोक्षमे गई।
- वासुदेवकी 35,000 स्त्रिया शत्रुंजय पर, बाकी 37,000 स्त्रियां अन्य तीर्थमें मोक्ष प्राप्त किया।
- देवकी के छ पुत्र, जादव पुत्र, सुव्रत श्रेठ, मंडक मुनि, सेलक मुनि, और अईमुत्ता मुनिने इस तीर्थपर मोक्ष पाया था।
- नेमिनाथ भ. के शिष्य गौतम अणगार एक महिनेका अनसन करके इस क्षेत्रमें मोक्ष प्राप्त किया था।
- इस तीर्थ पर आदिनाथ भगवान 69,85,44,00,00,0000 बार समवसरे।

- देवलोक से स्वयंप्रभदेवने शत्रुंजय पर इस प्रकार मोक्ष पानेवाले साधुओको देखे थे । पहले दिन-1 लाख, दूसरे दिन - 1 करोड, तीसरे दिन - 5000, चौथे दिन 105, पांचवे दिन 10 छठे दिन - 700 सातवें दिन 728 साधुओको मोक्ष पाते देखे थे ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- भरतचक्रवर्तीके संघमे वाराणसीसे शत्रुंजय के दर्शन होते थे उस समय आदिनाथ प्रभुजी से देशना सुनकर 10,000 भव्य जीवो को केवलज्ञान होता है ।
- अजीतनाथ भ. इस गिरीपर 3000 बार आये थे ।
- आनेवाली चोवीसी के सभी तीर्थंकर यहां विचरेंगे ।
- चंद्रयशा राजाभी चंद्रप्रभ स्वामीके समयमे यहां नौवा उद्धार करवाया था । इस राजाने 50,000 जिनालय और 5 करोड जिनबिंब भराकर संयम लेकर मोक्षमे गया ।
- सुधर्मा गणधर के शिष्य चिल्लण मुनि संघके साथ गिरि पर चढे संघ अतितृषातुर हुआ मुनिने विद्याशक्तिसे पानी मंगवाया तब से चंदन तलावडी प्रसिद्ध होगई।
- अजितनाथ के शिष्य सुव्रताचार्य ग्लान होनेसे पानी लेकर गिरि पर आये । पानी एक ओर रखकर काउसग्ग करते थे उसवक्त कौएने पानी उल्ट्य दिया उससे आचार्यने गुस्सेमें होकर कहा कि तेरे वंशका आगमन बंद, तबसे इस गिरि पर कौए आते नहीं ।

शत्रुंजयके सत्रह उद्धार

कौनसा उद्धार	किसने करवाया
प्रथम उद्धार	भरत राजा
दूसरा	दन्डवीर्य राजा
तीसरा	इशानेन्द्रेने
चौथा उद्धार	चौथे देवलोकके इन्द्रने
पांचवा उद्धार	पाँचवे देवलोक के इन्द्रने
छठ्ठा उद्धार	चमरेन्द्रने

सातवा उद्धार	सगरचकी
आठवा उद्धार	व्यंतरेन्द्र
नौवा उद्धार	चंद्रयश राजा
दशवा उद्धार	चक्रायुध
ग्यारहया उद्धार	रामचंद्रजीने
बारहवां	पाँच पांडवोने
तेरहवा उद्धार	वि.स. 108में
	जावड शेठने करवाया
	वि.स.1213 में
चौदहवा उद्धार	बाहड शेठने करवाया
-	वि.स. 1371 मे
पंद्रहवा उद्धार	समराशाने करवाया
सोलवा उद्धार	वि.स. 1587 मे
	कर्माशाहने करवाया
सत्रहवा	दूप्पहसूरिने के उप. से
	विमलवाहन राजा कराएगा ।

(शत्रुंजय महात्म्य)

सिद्धाचल के संघपति

- पांडवो के समयमे 25, 95, 75,000 राजा संघपति बने थे ।
- भरत राजाके समयमे 99, 89, 84,000 संघपति हुए थे
- सगरचक्रीके समयमे 50, 95, 75,000 संघपति हुए थे ।
- विक्रमराजा के समयमे 84,000 संघपति हुए थे ।
- शेठ जावडशाहके समयमे 384000 संघपति हुए थे ।
- बादमे अलग अलग जातिवालोने भी संघ निकाले थे ।

70,000	भावसार संघपति बने थे ।
16,000	राजपुत्र संघपति बने थे ।
15,000	जैन ब्राह्मण संघपति बने थे ।
12,000	कलबी संघपति बने थे ।

9,000 लेउआ संघपति बने थे ।
5045 कंसारा संघपति बने थे ।
7000 चांडाल संघपति बने थे ।
500 उक्कड ढेढ संघपति बने थे

- नीचजाति वाले संघपति तलहटी की प्रदक्षिणा करके वापस आये थे । **(प्रबंध पंचशती)**

संघपतियो के संघका वर्णन

- सबसे पहले भरत चक्रवर्तीने शत्रुंजयका संघ निकाला था जिसमें 32,000 मुकुटबद्ध राजा, 32,000 नाटकवाले, 84 लाख वाद्य 3 लाख मंत्री, 84 लाख हाथी, 5 लाख दीवी धारण करने वाले, 84 लाख घोडे, 16,000 यक्ष, 84 लाख रथ, 10 करोड धजाधारण करने वाले, 1,28,000 वारांगनाए 3 करोड व्यापारी 32 करोड सुथार सवा करोड भरतके पुत्र, करोड साधु साध्विया, 99 करोड संघपति ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- **विक्रम राजाका संघ :**

269 सोनेके जिनालय, 1,100, 9000 बैलगाडियो 500 हाथीदांत के जिनालय 18 लाख घोडे, 500 चंदन के जिनालय, 76,000 हाथी 70 लाख श्रावक परिवार, 76,000 ऊंट, 5000 आचार्य, 8 करोड स्त्रिया।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- **पांच पांडवोका संघ :**

300 सोनेके जिनालय, दो करोड श्रावक 800 चांदीके जिनालय, 800 आचार्य 8000 साधु 50,000 हाथी, 800 राजा, 8 लाख घोडे, 1 करोड शेठिये, कृष्णमहाराजा संघके साथ ।

(शत्रुंजय - कल्पवृत्ति)

- **कृष्णमहाराजाका संघ :**

500 सोनेके जिनालय, हजारो साधु साध्वीजी 1700 लकडे के जिनालय, 24 करोड मानव, आंबले जैसे मोतियो से शत्रुंजयको

बंधाया थे या परिवार के साथ राजाने हरेक मूर्तिकी पूजा की थी ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- **दशरथ राजाका संघ :**
  400 सोनेके जिनालय 800 संघपति, 8 हाथीदांतके जिनालय 100 राजा, 5 करोड मानव, हरेक गाँव मे स्वामी वात्सल्य

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- **रामचंद्रजीका संघ :**
  500 सोनेके देरासर, 19 करोड पाडे पानी के लिए, 712 चांदी के जिनालय 10,000 हाथी, 501 लकडे जिनालय, 20 करोड घोडे, 7 करोड बेलगाडिया करोड साधु साध्वीजी हीरामोती से रायणवृक्ष की पूजा की ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- **वि.सं. 1868 मे निकला हुआ गुणराज श्रावकका संघ :**
  700 रथ, 800, ऊंट, 500 घोडे, 400पित्तलके घडे, 36,000 शय्यापालक, 500 पाडे, हजारो पालखियां, 2 लाख मानव, सोमसुंदर सूरि जैसे 100 आचार्य, सोपारक नगरमे 60,000 टंकोका खर्च कियाथा 20,000 टंक सोनामुहर मुनिसुंदर विजयके उपाध्याय पदमे खर्च थी ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- **सं. 1657 मे निकला हुआ संघवी हेमराज का संघ :**
  1200 बैलगाडियो , 500 उंट, 700 यात्री, 500 हाथी 500 घोडे,

(जैन परं का इति)

- **थरादके आभू संघवीका संघ :**
  700 लकडेके जिनालय, 47 बैल, 1510 घोडे, 1,4000 बैलगाडियो 2200 ऊंट 100 रसोइये, 90 पालखीवाले 14 लुहार, 760 पानी के लिए पाडे, 7 पाणीकी परब, जिनबिंब, 66 श्रीकरी 300 पानीकी खाल 100 रसोईके लिए कडाहियां, 100 तंबोली 100 पंचकुल, 260 दुकाने, 1752 लडके के भारे उपाडनेवाले 36 आचार्य, संघमाल के समय सभी को वस्त्रकी भेट की ।

इस संघमे 12 करोड सोनामुहरो का खर्च किया था। (सुकृत सागर)

(उपदेश सप्ततिका)

- **मांडवगढसे शत्रुंजय गिरनार तीर्थका झांझणमंत्रीका महासंघ**

  12 काष्ठ के मंदिर, 30 आचार्य 12,000 बैलगाडियां, 1200 ऊंट, 12 बडे संघपति, 2000 सैनिक, 50,000 पोठिये (सामानकेलिए) 1000 घुडेस्वार, ढाई लाख श्रावक श्राविकाए, तीर्थ प्रवेशके समय सात लाख मानव।

  इस समय लक्ष्मणजी मे 101 जिनालय और 2000 जैनोके घर थे। झांझण मंत्रीका संघ स. 1340 महासुद 5 के दिन निकलाथा

(सम्राट संप्रति)

- **वस्तुपाल तेजपाल का संघ –**

  24 रथ हाथी दांतके, 1100 दिगंबर साधु, 4500 सहेजवाल, 408 ऊंट 4500 गाडलिये, 4500 गायक, 1100 बैल, 1000 रसोइये (सिर्फ मिठाई के लिए), 500 पालखिये, 3300 चारण, 700 सुखासन, 3800 भाटचारण, 2000 साधु, 1350 कुंभार 7 लाख दीवीधरे, 500 सुथांर, 4,500 रथ, 180 पित्तलकी पालखिये, 700 आचार्य, 3000 घोडे, 700 पाडे, 3000 हाथी। **(प्रभावक चरित्र)**

वस्तुपाल तेजपालके 12 1/2 संघका समय

- प्रथम संघ 1249 मे माता-पिताकी उपस्थितिमे
- दूसरा संघ 1273मे माता - पिता के आत्मश्रेयके लिए निकाला था।

पहला संघ वि. स. 1277मे शत्रुंजय गिरनारका
दूसरा संघ वि. स. 1283मे शत्रुंजयका
तीसरा संघ वि.स. 1284 मे शत्रुंजयका
चौथा संघ वि.स. 1285मे. शत्रुंजयका
पाँचवा संघ वि. स. 1286मे शत्रुंजयका
छठा संघ वि. स. 1287मे शत्रुंजयका
सातवां संघ इ. स. 1289मे शत्रुंजय गिरनारका
आठवा संघ इ. स. 1290 मे शत्रुंजय गिरनारका

नौवा संघ वि.स. 1291 मे शत्रुंजय गिरनारका
दसवा संघ वि. स. 1292 मे शत्रुंजय गिरनारका
ग्यारहवा संघ इ. स. 1293 मे शत्रुंजय गिरनारका
बारहवां संघ वि. स. 1294 मे शत्रुंजय गिरनारका

कुमारपाल राजा के संघकी विशिष्टता

- 2800 जिनालय, 11000 हाथी (उपर रत्न जडित अंबाडी) 5000 साधु, 11 लाख घोडे, 16 लाख यात्री, 50,000 रथ, हरेक गाँव मे रत्नजडित ध्वजा चढाते थे **(कुमारपाल प्रबंध)**
- कुमारपाल के संघमे वाग्भट्टादि 24 मंत्री थे नगरशेठका पुत्र आभडदे जहाँ जहाँ संघका डेरा होता वहाँ हर घर में सोनामुहरे की (लहाणी) भेंट करते। देपाल कवि, कर्पदि भण्डारी, छाडा शेठ वि. साथ मे थे। इस संघमे हरखचंद शेठ एवं हरपाल शेठ प्रेमपूर्वक वृद्ध एवं बालकोंकी भक्ति करते थे देवा शेठ और दुदा शेठ शक्करके पानी की प्याउ का ध्यान रखते थे आंबा शेठ और अबजीशेठ लड्डू की दुकान खोलकर दान करते थे। खोखो शेठ और खीमजी शेठ हाथ चौडा रखकर गुप्तदान करते थी भदा शेठ भूपत शेठ रास्ते मे ठंडे पानी की व्यवस्था करते थे थावरशेठ और थोभाशेठ, लखमशीशेठ शेरडी केले आदि फल देकर भक्ति करते थे।

  यह संघ जब धंधुका पहुंचा तब हर घरमें थाली के साथ सोनामुहर की भेंट की थी। गिरिराजको परवाले एवं मोतीयो से बधाया था मूलनायकके नौ अंगमे नौ लाख कीमतके रत्न रखे एवं सोने की धजा चढाई। इस संघकी तीर्थमाला का लाभ जगडुशाहने सवा करोड द्रव्य बोलकर लिया था।

  (कुमारपालके राससे)
- उपलदेव राजाने रत्नप्रभसूरिजी निश्रामे संघ निकाला था जिसमे सोने चांदी के देरासर और लाख यात्रिक थे।
- सम्राट चन्द्रगुप्त राजाके संघमे 5 लाख यात्री थे।

- संप्रत्ति राजाके संघमे 5000 आचार्य और 5 लाख यात्री थे 2080 जिनालय थे
- सारंगशाहने खंभात से शिखरजी का संघ निकाला जिसमें आ. कक्कसूरिजी, दूसरे 5000 आचार्य, 500 जिनालय, कुल 12 करोडका खर्च किया था। **(पार्श्वनाथ परं. इति.)**

महाऋद्धिवंत राजा और श्रावक

- **राजा रावणकी ऋद्धि** 9 करोड राक्षस, 9,99,9999 राक्षसबल जैसे सैनिक, कुंभकर्ण आदि, 1 लाख भाई, सवा लाख पत्नी, सवालाख पुत्रिया 3 करोड पुत्रीये 88,000 शांतिकर्म करनेवाले ऋषि, 100 योजन विस्तारवाली, सात दुर्गो से घेरी हुई 800 दरवाजेवाली लंका नगरी थी 298 बहने। **(प्रबंध पंचशती)**
- **शालीभद्रके बहनोई धन्यशेठकी ऋद्धि –**
  अत्यंत समृद्धिसे भरे हुए 1500 गाँव 500 घोडे, 500 रथ, 500 बडे मंदिर, 500 दुकाने, 5000 व्यापारी, 500 वाहन, 500 देवविमान भ्रम उत्पन्न करे एसे सात मंजिल वाले आठ पत्नीके लिए आठ महल, 8 गोकुल, 56 करोड सोनामुहर, अनेक दानशालाए, कीमती मणिरत्न **(महावीर चरित्र)**
- **संप्रतिराजाकी ऋद्धि,** 8000 राजा उनकी आज्ञामे, 50,000 हाथी, 1 करोड घोडे, 7 करोड सेवक, 9 करोड, 21, सोने चांदीके भंडार, हरशेज चैत्य परिपाटी और अष्ट प्रकारी पूजा करते थे 2000 उपाश्रय 750 दानशालाए बनवायी, सवालाख जिनमंदिर और 36000 जिर्णोद्धार करवाये, अनार्य देशमे जैन धर्मकी शासन प्रभावना की थी। **(भरतेश्वर-वृत्ति)**
- **महेश्वरदत्त शेठकी संपत्ति**
  500 जहाज, 5000 बैलगाडियां, 500 घर, 500 वणिकपुत्र, 500 दुकाने, 500 गोकुल, 500 हाथी 500 घोडे, 5000 शोभा बढानेवाली स्त्रीये, 500 प्रकारके वांजित्र, 5 लाख नौकर 500 सुभट 56 करोड सुवर्ण भण्डार मे, 56 करोड सुवर्ण ब्याजमें, 56 करोड सुवर्ण

व्यापारमे । (भरतेश्वर-वृत्ति)

- **(चंद्रकेवली) चंद्रशेठकी ऋद्धि –** पूर्वभवमे सात क्षेत्रोमे धनको खर्च करनेके कारण चन्द्रशेठ चक्रवर्तीबना । 110 विद्याधरोने चंद्रको चक्रवर्ती के नाम से प्रसिद्ध किया था । इस चंद्रशेठके पास 16 मुख्य राणीये, 1600 दूसरी राणीये, 16000 दासी 16 बडेमंत्री, 1600 छोटे मंत्री, चतुरंगी सेनामे 42 लाख हाथी, घोडे, रथ आदि, 10 करोड और 48 लाख सैनिक, 42,000 वांजित्र बजानेवाले, 82000 महावत 82,000 वाहन आदि।

(चन्द्रकेवलि चरित्र)

- **(चंद्रकेवली) के पिता प्रतापसिंहकी ऋद्धि :** 10 लाख नगरो के अधिपति, 500 राणी 1 करोड सैनिक 10 लाख घोडे, 10,000 हाथी, 10,000 रथ, 1000 ऊँट , 10,000 वांजित्र, 10,000 पताकाए, कुशस्थल नगरी के राजा थे। (चन्द्रकेवलि चरित्र)
- **अकबर बादशाहकी ऋद्धि :** 16,000 हाथी, 9 लाख घोडे, 20,000 रथ, 18 लाख सैनिक, 14,000 हिरण, 12,000 चित्ते, 500 बाघ, 17,000 शकरे 20,000 बाज 7,000 गायक, 11,000 नृत्यकार, 500 पंडित, 500 बडे प्रधान, 20,000 कारकुन, 10,000 उमराव 16,000 सुखासन, 15000 पालखिए 800 गायक 5000 मदनभेर, 7000 पताका 500 बिरुदावली बुलानेवाले, 300 वैद्य, 1600 सुथार, 86 आदमी मालीस करनेवाले, 300 पंडित शास्त्र पढनेवाले, 300 वाद्यबजानेवाले उसके अंत:पुरमे 5000 राणिये, हरेकको रहनेको लिए अलग अलग महल । अकबरने एक बार 36000 घरो मे सोनामुहर भेंट की थी अकबर जब मरा तब उसको खजानेमे से दो करोड पौंडकी कीमत के सिक्के निकले थे। अन्य छ तिजोरियां भी भरी हुई थी । टेटल 20 करोड पौंड जितनी संपत्ति थी ।

(हीर विजयसूरिरास)

- **मदन ब्रह्मराजाकी संपत्ति –**

कांतीपुरी नगरीका राजा इसनगरमे 84, जिनमंदिर, 84 चौराहे 84 बगीचे, 84 सरोवर, राजाके जोजन प्रमाण 17 मंजिले का आवास,

5000 राणियें 36,000 अन्य राणियें, 3330 हाथी, 5 लाख घोडे 21 लाख सैनिक, 16 देवि हमेशा राजाके आगे नृत्य करती थी ।

(पुरातन-प्रबंध)

- **देवगिरिके राजा रामकी ऋद्धि :** 12,000 वाद्य, 1 मोतीकी जोड कष्टभंजन घोडा, 56 करोड सोनामुहर, 80,000 घोडे, 12,000 हाथी बावना चंदन.

(जिनप्रभसूरि सुलतान)

- चंद्रगुप्त सैन्यबल 60,000 सैनिक, 30,000 घोडे, 8000 रथ, 750 हाथी, 8000 रथारोहि **(सम्राट-संपत्ति)**
- **सिद्धराजाका रुद्रमहालय :** जिसमें 1444 खंभे, 1000 पुतलिये 18 मणिमाणेक के स्वयंवर, 30,000 धजादंड, 10,000 सोनेके कुंभ, 56 करोड हाथी, घोडे खुदाई किये हुए **(उपदेश-सार)**
- **हर्षपुर नगर :** अजमेरके पास आये हुए हर्षपुर मे सुरपाल राजाके समयमे 300 जिन मंदिर, 400 अन्य देवोके मंदिर, 3000 महाजनोके घर, 900 बगीचे 700 वाव, 200 कुए, 700 दानशालाएं थी ।

(पार्श्वनाथ परं.)

- **द्रौपदीका स्वयवंर मण्डप :** जिस मंडपमे समुद्रविजय आदि 10 भाई 16,000 राजा, 88 करोड कुमार, शांबप्रद्युम्न आदि 60,000 कुमार, वीरसेन आदि 21,000 वीर, 56,000 महसेन आदि दायजेमे 8 करोड सोनामुहरे रखी थी । **(उपदेश पद)**
- **देवद्रव्य की व्यवस्थित देखभाल रखनेवाला सुरसिंह महाऋद्धिवाला बना :** दक्षिण भरतार्धका स्वामी बना, 4000 राणिये, 16,000 सामान्य राजा, 7000 मुकटबद्ध राजा, 50 विद्याविहार 48 करोड गाँव, 48 करोड पायदल 16,000 राजधानिया, 36,000 पाटण, 82 लाख हाथी घोडे आदि 70,000 वर्ष तक राज किया । अंतमे तीर्थंकर होकर मोक्षमे जायेगा ।

(विविध बोल रत्नाकर)

- **विशाखा का करियावर :** धनंजय शेठने अपनी लडकी विशाखा

के, मिगार शेठके लडके पुण्यवर्धनके साथ शादी की थी । दायजे मे 500 बैलगाडियां भरके सोनामुहर 500 बैलगाडिया सोनेके वर्तन 500 बैलगाडिया चांदीके बर्तन, 500 बैलगाडियां भरके ताबां के बर्तन, 500 बैलगाडे खादी, 500 गाडे भरके घी, 500 गाडे भरके चावल, 500 हल, 500 रथ, 500 गाडे गुड, 1500 दासिया 60,000 गाये, 60,000 बैल, 60,000 बछडे आदि दिए थे । **(गोरक्ष कल्पतरु)**

- **प्रदेशी राजा प्रभुको वंदन करने जाते हुए ऋद्धिका प्रमाण** 28,000 हाथी, 84 लाख घोडे, 21,000 रथ, 91 करोड सैनिक, 16,000 पताकाए, 500 छत्र 69,000 नृत्यांगानाए , 500 राणिये पालखी मे, सोने चांदी का वर्षीदान देते प्रभुको वंदन करने गये थे । उस समय राजा सोचता है कि एसी ऋद्धिसे किसी इन्द्र भी नही आ सकता ।राजा के अभिमानको मिटाने सौधर्मेन्द्र अनेकगुणी ऋद्धि लेकर वंदन करने आता है । **(भरतेश्वर वृति)**
- **इन्द्रकी ऋद्धि :** 64000 हाथी, हर हाथीको 512 मुख, हरेक मुख पर 88 दाँत, हर दाँत पर 16 वावडिएँ, हर वावडी पर 8.8 कमल, हरेक कमल पर लाख-लाख पत्ते, उन्ही पत्तो पर शरबद्ध नाटकिये । विशेष मे 167772160 जिनमंदिर थे यह ऋद्धि देखकर प्रदेशी राजका अभिमान उतर गया

(भरतेश्वर वृत्ति)

- **देवलोकमे देवोकी ऋद्धि :** एक वाणव्यंतर की देवी कपालमें तिलक करे उसमे सारे जंबु द्विपकी ऋद्धि समा जाती है ।
  इन्द्रके पाँवकी मोजडी मे सिर्फ एक हीरे मे चक्रवर्ती की संपूर्ण ऋद्धि आ जाती है । देवके पलंगके नीचे रखेजानेवाले पडवाये मे ढाई द्विपकी ऋद्धि आ जाती है ।
  भवनपतिमें चमरेन्द्र बलिन्द्रकी देवीने आठ आठ हजार वैक्रिय रुप किये । **(विविध विषय विचारमाला)**
- **इन्द्रकी ऋद्धि :** सुधर्मासभामें 32 लाख विमानका स्वामी, 84,000 सामानिक देव, 33 त्रायस्त्रिंशत देव, 16,000 देवियो से सेव्य, 8

अग्रमहिषि, 12,000 अभ्यंतर सभाके देव, 18,000 मध्य सभा के देव, 16,000 बाहर सभाके देव, सात कटक, 3,36000 अंगरक्षक देव। **(प्रबंध पंचशती)**

गुरु कृपा

- हंसावली के पुत्र जसाराणाको गुरुकृपासे पारस प्राप्त होने से एक विशाल जिनमंदिर संघ यात्रा, साधर्मिक भाईयो को सोनामुहरकी प्रभावना की थी ।
- उपकेश पुरके शाह सारंगको सुवर्ण रस प्राप्त होने में धार्मिक क्षेत्रोमें धन का खर्च करके दीक्षा ली थी ।
- कर्णावती मे शाह पाताने एक सुवर्ण थैली प्राप्त हुई थी जिससे भीषण दुष्कालमें राजा और प्रजाको अन्नदान दिया था
- पार्श्वदत्त शेठने गुरुकृपा से पारसकी प्राप्ति होने से चित्रकूट का दुर्ग बनाया उसमे अनेक जिनमंदिर बनवाये ।
- डोडवा के भैंसाशाह चोरडिया को गुरुकृपासे गोबर का ढेर सोनेका ढेर हो गया उस सोने से गदियाणे सिक्के बनाये उससे उसके वंशका नाम गदहिया' हो गया
- मांडवगढके पेथड मंत्रीको चित्रावली प्राप्त हुई जिससे शत्रुंजयका संघ निकाला और 84 जिनमंदिर बनवाये ।
- अहमदाबाद शांतिदास शेठको विजय यंत्र प्राप्त हुआ उससे धर्ममे बहोत खर्च किया ।
- फलोधी के पार्श्वगरुड शेठ को गुरुकृपासे स्वर्ण विद्या प्राप्त हुई उससे कलवृद्धि पार्श्वनाथ जिन चैत्य बनवाया ।
- नागपुरके पुनक शेठको द्रव्य प्राप्त होने से शत्रुंजयका विराट संघ निकाला । मेडताके शाहो पर महात्माकी कृपा हुई इससे 84 प्रकारके सिक्के के भण्डार मुगल सम्राटको दिखाकर आश्चर्यचकित करदिया था।
- जेसलमेर के वीर, थैरुशाह भणसाली को चित्रावली प्राप्त हुई उससे शत्रुंजयका संघ निकाला ।
- तक्षशिला संघ पर मानवदेवसूरिजी कृपा से लघुशान्तिस्तानात्रसे मारी

रोग दूर हो गया

- एक बार ब्राह्मणोने जिनमंदिर में गाय डाल दी थी उससे चमत्कारी जीवदेवसूरि ने. परदेह प्रवेशिणी विद्या से उस मृतगायिको शिवालयमे डाल दी जिससे बहुत ही शासन प्रभावना हुई ।
- आचार्य सिद्धसूरिने पंजाबमे पाँच पीरो को वशमे करके यवनो को अपूर्व चमत्कार दिखाया । आजतक सिद्धपीर के नामसे पूजा जाता है ।
- सुरतके शांतिदास के शेठ को नौकर शांतिकोयतिकृपा फलने से अहमदाबादका नगर शेठ बना और सात पेढी तक धन दौलत और परिवार अखूट रहा ।

विमल मंत्री का विमलवसहि

- सं. 1013 मे गुजरातके राजा भीमदेवके मुख्यमंत्री विमल था ।
- सं. 1100 मे विमलवसहि जिनमंदिर का निर्माण किया था ।
- इस जिनालयके पीछे 18 करोड 53 लाखका खर्च किया था
- यह जिनालय बांधते 14 साळ हुए थे ।
- इस जिनालयके कामके लिए हररोज 1500 कारीगर और 5200 मजदूर काम करते थे ।
- इस जिनालयकी जगहके लिए 8 करोड 53 लाख और 60,000 रुपयो का खर्च हुआ था ।
- जमीन लेने के लिए जमीन पर चोखुणी सोनामुहर बिछाकर ब्राह्मणो को दी बादमे यह जगह मिली थी ।
- इस जिनालयमे मूलनायक आदिनाथ भगवान है, जिससे शत्रुंजयावतार नाम से पहचाना जाता है ।
- विमलमंत्रीको भोजनके अवसर पर 84 श्रेष्ठ जांगिक ढोल बजाते थे
- विमलमंत्रीके प्रतिप्रयाण मे 27 लाख रुपयाका खर्च हुआ था ।
- इस मंत्रीने 12 पादशाहाको जीतकर12 छत्र गहण किये थे ।
- कुंभारियाके जिनमंदिर के लिए विमल मंत्रीने बुनियाद नीव खोदी तब उस नीवको भरने के लिए सोने रुपेकी ईंटकी 700 सांढनिया भरके

लाये थे । ये सब कारीगर की सलाह से नींवमे डाल दी थी।

- कुंभारियामें पहले 360 जिनमंदिर थे ।

(विमलप्रबंध-अर्बुदादितीर्थ गुणमाला)

झांझण मंत्रीके संघकी विशिष्टता

- देदाशाहका पुत्र पेथड और पेथडकापुत्र झांझण जो महादानवीर और धर्मिष्ठ था ।
- यह मंत्री जब मांडवगढ से ढाई लाख यात्रिको के साथ संघ लेकर शत्रुंजय पहुंचे तब ऋषभदेवकी सोनेरुपेसे पूजा करनेके बाद 3 करोड सुगंधवाले पुष्पोसे प्रभुजीकी पुष्पपूजा की थी ।
- थरादके आभूसंघवी के संघको भोजन कराया था ।
- इस मंत्रीने एक मूडाप्रमाण चौडी उस पर सोने के पाटसे भरी हुई नीचे चांदीकी पाटसे भरी हुई, बीचमे रेशमी वस्त्रवाली शत्रुंजयके शिखर से गिरनारके शिखर तक लंबी धजा बांधीजा है जिस धजामे 54 धडी सुवर्ण का खर्च हुआ था ।
- इस मंत्रीका संघ जब अहमदाबाद पहुंचा तब राजा की आज्ञासे से समग्र गुजरातकी 15 लाख व्यक्तिओ को भोजन कराया था बडे बडे 100 मंडप बांधे थे । छ दिन तक सारे गुजरात को भोजन करानेके बाद भी बहुत मीठाई बाकी रही उसको राजाको दिखाकर आश्चर्य चकित करदिया ।
- यह संघ साबरमती नदी के तट पर गुजरात को भोजन करने की तैयारी के लिए महिने तक रुका था ।
- इस मंत्रीने अहमदाबाद के सारंग राजा के पास वचन देकर कैदमे रखे हुए 96 राजाओको छुडाये थे । उस समय आभूसंघवीने 48 लाख रुपये सारंग राजाको भेंट देते है और झांझणमंत्रीने सभी राजाओको एक एक घोडा और पांच- पांच वस्त्र भेट किये थे ।
- इस मंत्रीका संघ जीरावला पहुंचा तब छ मण कपूर से धूपपूजा और करोड पुष्पसे पुष्प पूजा कीथी
- जीरावला तीर्थमे भगवान पर सुवर्ण तारसे भरा हुआ चंदरवा बांधा था

जो लाख रुपये का हुआ था । (सुकृत सागर)

देव गिरिके जिनालयकी विशिष्टता

- देवगिरिका जिनालय मांडवगढके पेथडमंत्रीने बनाया था ।
- इस जिनालयकी जगह लेनेके लिए हेमड मंत्रीके लिए तीन साल तक, दानशाला खोली थी, इससे मंत्रीने खुश होकर राजाको बात की और राजाने जगह दी।
- जिस सोमपुराने रुद्रमहालय बनाया था उसके वंशमे पैदा हुए रत्नाकर नामके सलाटने यह जिनालय बनाया था
- पेथड मंत्रीने कारीगरो के खर्च के लिए मांडवगढसे 32 सांढनिया भरकर सुवर्ण भेजा था ।
- इस जिनालय के निर्माण लिए देवगिरिमे 10,0000 इंटो का निभाडा खोला था हरेक निभाडे मे 10,000 इंटे पकायी जाती थी ।
- इस जिनालयकी 3 बांस गहरी बनाई गई नीवमे 15 सेर सीसेका रस डाला था
- जिनालयमे 21 गज लंबी 1444 पत्थरकी पाटे लगाई थी ।
- प्रतिष्ठा महोत्सवके समय हररोज 108 ब्रह्मचारी श्रावक विधिपूर्वक स्नात्रपूजा करते थे मंत्री उनकी भक्ति भी करते थे
- प्रतिष्ठाके समय मंत्रीने संभीगच्छ के साधुओकी वस्त्रसे भक्ति की थी।
- 84 हजार श्रावको को सोनेकी वींटी (सुवर्णमुद्रा) भेट की थी ।
- इस जिनालयमे 83 अंगुल प्रमाणवाली वीर प्रभुकी प्रतिमा स्थापित की थी ।
- इस जिनालयकी प्रतिष्ठा के समयमे मंत्रीने 5 लाख द्रव्यका खर्च किया था (सुकृत सागर)

ग्यारह रुद्रोके नाम

- यह 11 रुद्र, तीर्थंकरो के भक्त होने से अंग विद्याके जानकार थे । उनका विशेष विस्तार दशमे पूर्व मे आता है ।

1. भीमावली — ऋषभदेव के समय

2. जितशत्रु — अजितनाथके समय
3. भद्रनामा — सुविधिनाथके समय
4. विश्वाहल — शीतलनाथके समय
5. सुप्रतिष्ठ — श्रेयांसनाथ के समय
6. अचल — वासुपूज्य के समय
7. पुंडरिक — विमलनाथ के समय
8. अजितधर — अनंतनाथ के समय
9. अजीतनाथ — धर्मनाथ के समय
10. पेढालनामा — शांतिनाथ के समय
11. सत्यकी सुत— महावीर स्वामी के समय

नौ बलदेवो का परिचय

	नाम	नगर	पिता	माता	आयुष्य	गति
1.	अचल	पोतनपुर	प्रभावती	भद्रा	85 लाख साल	मोक्ष
2.	विजय	द्वारिका	ब्रह्मराजा	सुप्रभा	75 लाख साल	मोक्ष
3.	भद्र	द्वारिका	रुद्रराजा	सुप्रभा	65 लाख साल	मोक्ष
4.	सुप्रभ	द्वारिका	सोमराजा	सुदर्शना	55 लाख साल	मोक्ष
5.	सुदर्शन	अश्वपुर	शिवराजा	विजया	17 लाख साल	मोक्ष
6.	आनंद	चक्रपुर	महाशिर	वैजयंती	85 हजार साल	मोक्ष
7.	नंदन	वाणारसी	अग्निशिखा	जयंती	65 हजार साल	मोक्ष
8.	राम	अयोध्या	दशरथ	कौशल्या	15 हजार साल	मोक्ष
9.	बलभद्र	द्वारिका	वसुदेव	रोहिणी	1 हजार साल	पांचवे देवलोकमे

बारह चक्रवर्तियोका कोठा

	नाम	नगरी	पिता	माता	ऊंचाई	आयु	गति
1	भरत	विनीता	ऋषभदेव	सुमंगला	500 धनुष्य	84 लाखपूर्व	मोक्ष
2.	सगर	अयोध्या	सुमित्र	यशोमति	450 घनुष्य	72 लाखपूर्व	मोक्ष
3.	मघवा	श्रावस्ती	विजय	भद्रा	42 1/2 धनुष्य	5 लाखपूर्व	तीसरेदेवलोक
4.	सनत्कुमार	हस्तिनापुर	अश्वसेन	सहेद	41 1/2 धनुष्य	3 लाखपूर्व	तीसरेदेवलोक
5	शांतिनाथ	हस्तिनापुर	विश्वसेन	अचिरा	40 धनुष्य	1 लाख साल	मोक्ष
6.	कुंथुनाथ	हस्तिनापुर	शूर	श्रीदेवी	35 धनुष्य	95,000 साल	मोक्ष
7.	अरनाथ	हस्तिनापुर	सुदर्शन	महादेवी	30 धनुष्य	84,000 साल	मोक्ष
8.	सुभुम	तापसाश्रम	कृतवीर्य	तारा	28 धनुष्य	60,000 साल	7वी नरकमें
9.	महापद्म	हस्तिनापुर	पद्मोत्तर	ज्वाला	20 धनुष्य	30,000 साल	मोक्ष
10.	हरिषेण	कांपिल्यपुर	महाहरि	महर्षी	15 धनुष्य	10,000 साल	मोक्ष
11.	जय	राजगृह	विजय	वप्रा	2 धनुष्य	3,000 साल	मोक्ष
12.	ब्रह्मदत्त	कांपिल्यपुर	ब्रह्मराजा	चूलिनी	7 धनुष्य	700 साल	7वी नरकमे

नौ प्रतिवासुदेवो का कोठा

नाम	नगरी	पिता	माता	ऊँचाई	आयु	गति
1. अश्वग्रीव	रत्नपुर	मयूरग्रीव	नीलांजना	80 धनुष	84 लाखसाल	7मीं नरकमें
2. तारक	विजयपुर	श्रीधर	श्रीमती	70 धनुष	72 लाखसाल	6ठी नरकमें
3. मेरक	नंदनपुर	केशरी	सुंदरी	60 धनुष	60 लाखसाल	6ठी नरकमें
4. मधु	पृथ्वीपुर	विलास	गुणवती	50 धनुष	30 लाखसाल	6ठी नरकमें
5. निशंभु	हरिपुर	—	—	45 धनुष	10 लाखसाल	6ठी नरकमें
6. बली	अरिजय	मेघनाद	—	26 धनुष	50 हजारसाल	6ठी नरकमें
7. प्रहलाद	तिलकपुर	—	—	26 धनुष	26 हजारसाल	नरकमें
8. रावण	लंका	रत्नश्रवा	कैक्यी	16 धनुषसे ज्यादा	12,000 साल	4थे नरकमें
9. जरासंघ	राजगृह	बृहद्रथ	—	—	1,000 साल	4थे नरकमें

राणकपुर तीर्थकी रम्य बात

- राणकपुर मंदिरके स्थापक कुंभाराणाके मंत्री धरणाशाह पोरवालने 32 सालकी उम्रमे 32 संघोके बीच शत्रुंजय पर सोमसुंदर सूरिजीके हाथ से तीर्थमाला पहनकर ब्रह्मचर्य व्रत लिया था ।
- तीर्थमालाके समय एसी प्रतिज्ञा ली कि राणकपुर मे नलिनी गुल्मविमान जैसा जिनालय बनवाया जाय ।
- कुंभाराणा से जमीन लेकर सं. 1466 मे जिनमंदिर का काम शुरु करवाया और 1496 मे प्रतिष्ठा करवाई । उसका त्रेलोक्य दीपक नाम रखा । 50 साल तक काम चला ।
- पांचमी सदीमे 2700 जैनोके घर थे ।
- इस जिनालयका 48400 (वर्ग) चो. फूट का घिराव है ।
- इस जिनालयमे 82 देवकुलिका, और 1444 खंभे है । हरेककी खुदाई तरह तरह की है ।
- इस जिनालयमे अष्टापद, शत्रुंजय, 24 मंडप, 100 तोरण, 9 भूगर्भमार्ग, 8 विशाल रंगमंडप, 552 पुतलिया है ।
- इस जिनालयमे कुल 99 करोडका खर्च हुआ है । जमीनसे 45 फुट मंदिर ऊँचा है, मंदिरकी सात पुरुष प्रमाण गहरी ।
- कहा जाता है कि चित्तोडमे राणाने धरणाशाहकी नकल करने के लिए जिनालयमे एक विशाल खंभा बनाया लेकिन उसको बना नही सके इससे अपूर्ण रहा ।
- मूलनायकके सामने 1 हाथी और इसके पास 500 वर्ष पुराना रायण वृक्ष है । उसके सामने 1008 फणा को धारण करनेवाला नाग-नागणीयुक्त पार्श्वनाथकी मूर्ति है ।
- पहले यहां 84 भूगर्भमार्ग थे । अभी नौ भूगर्भमार्ग है । इस जिनालयमे तरह तरह 76 शिल्प की सजावट है हरेक देरासर पर 20-20 प्रकारकी कारीगीरी है।
- धरणा शाहने यह मंदिर 9 मंजिल का बनवाया था लेकिन अंत समय नजदीक आने से 3 मंजिला ही बना ।

- इसजिनालयकी प्रतिष्ठाके समय 4 आचार्य, 9 उपाध्याय 500 साधु थे । 7000 साधु अलग अलग गच्छ के थे । **(प्राचीन तीर्थ इति)**

अंबादेवी ने पोरवाल को दिए हुए ७ वरदान

(1) ली हुई प्रतिज्ञा पालने वाले
(2) स्थिर प्रकृतिवाले
(3) प्रौढ वचन (भार पूर्वक बोलने वाले)
(4) बुद्धिशाली ।
(5) सभी के भेद समजनेकी शक्तिवाले
(6) दृढ मनोबल
(7) महत्वकांक्षा **(प्राग्वाट इतिहास)**

कौनसी नवकारवाली उत्तम कहलाती है

(1) हाथ पर नवकारमंत्र गिनने से महान लाभ होता है ।

- शंखकी, परवालेकी, रक्तचंदनकी माला 1000 गुना लाभ देती है
- स्फटिककी माला 10,000 गुना फल देती है ।
- मोतीकी माला लाख गुना फल देती है ।
- सुखडकी माला करोड गुना फल देती है ।
- सुवर्ण की माला 10 करोड गुना फल देती है ।
- कमलबंध से नौकार कोडा कोडी गुना फल देता है ।
- रद्राक्षजी माला असंख्य गुना फल देती है ।
- पुत्रंजीवाकी माला अनंत गुना फल देती है ।
- सुतरकी माला पूर्ण फल देती है । **(हित शिक्षाका रास)**

ऐतिहासिक घटनाएँ

- विद्यासिद्ध पादलिप्तसूरि और बप्पभट्टिसूरि म.सा. समेतशिखर तीर्थ की यात्रा विद्या द्वारा हमेश करते थे । **(प्रभावक चरित्र)**
- तीसरी सदीमे हुए वीरसेन और नाकोरसेन नामके दो भाईयोने दस गाँवके अंतरमे वीरमपुर और नाकोर नगर बसाया था ।

- वीर सं. 600 मे नाहड राजाने सांचोरे मे एक बडा चैत्य बनाकर पित्तलमयी महावीर स्वामीजी प्रतिमा स्थापित की जज्जिगसूरिके हाथो प्रतिष्ठा कराई थी ।

(विविध तीर्थकल्प)

- दूसरी सदीमे नागर्जुने अपने गुरु पादलिप्त सूरिके नाम परसे पालिताणा नगर बसाया था ।
- सं. 700 मे भीनमाल फिरसे बसा था । 733 मे श्रीजिनदास गणिने निशीथचूर्णीकी रचना की उससे श्रीमाली के चांदी के सिक्कोके चलन की बात आती है ।
- जयानंद सूरिके उपदेश से पोरवांल मंत्री सामंतने 900 जिनमंदिरका जीर्णोद्धार करवाया था ।
- नाकोडाजी तीर्थमें 909 जैनके घर थे ।
- सं. 1240-43 मे जमणपुर गुजरातमे शंखेश्वर के पास वस्तुपाल तेजपाल का जन्म हुआ था एसा माना जाता है ।
- खंभात के माणेकचोकमें चिंतामणी पार्श्वनाथ के देरासरमे 24 भगवान एक समान है । जिसमे 13 भगवान कसोटी पत्थरके है । एसी एकही समान प्रतिमाए अन्य कही भी प्राप्य नहीं है ।
- 11वी सदीमे कविश्वर धनपाल भोजराजसे खिन्न होकर मालवा से सांचोर आकर बसा था ।
- वैशाख सुद-5 के दिन गुणसागर सूरिने पावागढ तीर्थपर जीरावला पार्श्वनाथ एवं अभिनंदन स्वामीकी प्रतिष्ठा करवाई थी ।
- सं. 1150 मे हेमचंद्राचार्यने खंभातमे दीक्षा ली थी ।
- दयालशाहने दयालशाह नामका किला बनाकर उसके उपर नौ मंजिला जिन मंदिर बनाया था जिसकी धजा की छाया 12 मील दूर जाती थी बादमे औरंगझेबने राजाशाही किला मानकर तोड डाला । आज तो मात्र एकही मंजिल है ।
- डुंगरपुरकी घाटी पर मंत्री शाला शाहने 52 देवकुलिकावाला शिखरबंध जिनालय बनवाया था । इसमे एक नया भूगर्भमार्ग बनवाया था । जो राजमहल तक लंबा था इस भूगर्भमार्ग से महारानी हररोज पार्श्वनाथ

भगवान के दर्शन करने जाती थी अब यह भूगर्भ मार्ग बंद हो गया

- महानिशीथसुत्र मे बताया है कि बाहुबली राजाने तक्षशीला में धर्मचक्रतीर्थकी स्थापना की थी । जो चंद्रप्रभ जिनेश्वरका धाम था ।
- जेसलमेरमे 84 गच्छके 84 उपाश्रय थे । अब जेसलमेर के किले पर 6000 जिनबिंब है ।
- श्री जिनदेवसूरिजी सुलतान बादशाह के साथ मुलाकात होने से सुलतानने सुलतान सराई नामकी जगह (जिसमे 8000 श्रावक रह सके) भेंट की थी । जिसका भट्टारक' नाम रखा था । सुलतानने वहां जिनचैत्य और पौषधशाला बनाई थी । सं. 1386 मे जिनप्रभसूरिने इस चैत्यकी प्रतिष्ठा करवाई थी ।
- बृहत्कल्पसूत्र मे मथूराके घरमे दरवाजे पर अर्हत प्रतिमाकी स्थापना करनेमे आती थी । जो 'मंगलचैत्य' कहलाता । मकान गिर न जाय इसलिए यह स्थापना अनिवार्य मनाती थी । इससे मथूराके साथ संबंध रखने वाले 96 गांवोमे एसे मंगलचैत्यकी स्थापना की गई थी ।
- जैन साहित्यमे राजगृह के ऋद्धि संपन्न शेठ शालीभद्रकी संपत्तिका र०याल देते एसा दिखाते है कि उसके पिता देवलोक से हररोज 32 पेटीया देवी अलंकारोसे भरकर भेजते थे । वही अलंकार एक दिन पहनकर दूसरे दिन निर्मालरुपकुएमें फेंक दिए जाते थे । जो 'निर्माल्यकूइ' कहलाती थी । उस स्थल का आज मणियार मठरुपमे देखा जाता है । जो मठ एक बडी इमारत रुपमे कहलाती है।
- भगवान महावीरके 11 गणधरोने वैभारगिरि पर निर्वाण पाया था । 'ज्ञातसूत्र' मे वर्णत नंदमणियारकी वाव वीरपोषाल, जरासंघका किला, श्रेणीकका भण्डार, पाली लिपिका शिलालेख आदिस्थान इस गिरिपर थे
- मुनि सुव्रत स्वामीने हस्तिनापुरमे विचारकर सात करोड सोनामुहरके मालिक गंगदत्तको और कार्तिक स्वामीको दीक्षा दी थी ।
- पटना नगरके 64 दरवाजे, किलेको 570 बूरज थे । इस किल्ले आसपास 30 हाथकी गहराईवाली 600 हाथ-चौडी खाई थी ।

- मुर्शीदाबादमे 'कोटिध्वज कोई सहस' के कथन से हजार जितने करोडपति थे।
- अंतिम चौदह पूर्वधर भद्रबाहुस्वामीने 15 दिका अनसन करके कलींग देशके कुमारगिरि पर स्वर्गस्थ हुए थे ।
- शासनके नवमे वर्षमे 38 लाख, चांदी की मुद्राओका खर्चकरके 'महाविजयी' नामका प्रसाद खारवेल राजाने बनाया था । इसी सालमे 'किमीच्छिक' दान देकर 'कल्पद्रुम की पूजा की थी (जिसका शास्त्रानुसार एसी पूजा चक्रवर्ती ही कर सकता) इस राजाने 13 वे वर्षमे श्रावक के 12 व्रत स्वीकार किए थे और श्रमणोको रहनेके लिए 117 गुफाए कुमारी पर्वत पर करायी थी ।
- 75 लाख रुपयोका खर्च करके खारवेलने अपनी रानी के लिए आश्रय स्थान बनाया था ।
- बीकानेरमे 84 गच्छके 84 उपाश्रय थे
- बेणपके करोडपति कपर्दि शेठकी पुत्री सोमाईने दीक्षा लेनेके बाद, उसको महत्तरा उपाधि दीथी । इस कपर्दिको सिद्धराजने राज भण्डारी बनाकर 18 गाँव भेंटमे दिए थे ।
- कुमारपाल राजाके समयमे आर्यरक्षितसूरि पाटण पधारे तब कपर्दि शेठने खेसके किनारे को आगे रखकर वंदन किये था उससे 'अचलगच्छ' नाम प्रसिद्ध हुआ था ।
- कर्णदेव-राजाने छलाख भीलोके स्वामी आशावल भीलको जीतकर साबरमती के तट पर कर्णावती नगर बसाया था
- संप्रति राजाका दश दिनोकी उम्र मे विजयादशमी के दिन राज्याभिषेक हुआ था।
- वीर सं. 24मे अवंतीवर्धन राजाने जम्बुस्वामीके पास दीक्षा लीथी
- इ.सं. 446 मे विनयरत्न साधु के हाथों से उदयन राजाकी मौत हुई थी
- ई.सं.पू. 300 की सालमे बनी हुई प्राचीनतम दो जिन मूर्तिया पटनाके म्युझियममे संग्रहस्थानमे विद्यमान है ।
- वीर सं. 310 मे सिद्धसेनसूरिने विक्रमादित्य राजाके सामने महाजाल

मंदिरमे स्थापित किए हुए शिवलिंग का स्फोट करके दिखाया तब शासन पत्र लिखके दिया कि यहमंदिर जैनोका है।

- वि.सं. 108 मे महुवा के जावडशेठने ऋषभदेवकी प्रतिमा तक्षशिलामे लाकर शत्रुंजयमे मूलनायक के रुप में स्थापित की
- 10वी सदीके श्यामपाषाण की दो बौद्ध मूर्तिया अयोध्याके जिन मंदिर मे जिन मूर्तिके रुपमे पूजी जाती है ।
- 13मी सदीमे देवेन्द्रसूरिने अयोध्यामे आबादी कम होने से वहांकी 4 मूर्तिया शेरीसा ले गये थे ।
- पादलिप्तसूरिका जन्म अयोध्या नगरीमे हुआ था ।
- 680 मे कुलपाकजी तीर्थमे शंकरगण राजाने भव्य मंदिर बनवाकर उसके गुजारेके लिए बारह गाँव का शासन दिया था ।
- लक्ष्मणकी मुख्य 8 रानिया एवं उनके 8 पुत्र :

(1) विशल्या	– श्रीधर
(2) रुपमती	– पृथ्वीतिलक
(3) कल्याण माला	– मंगलनिलय
(4) पद्मावती	– विमलप्रभ
(5) वनमाला	– अर्जुनवृक्ष
(6) अतिवीर्य	– श्रीकेशी
(7) अभयवती	– सर्वकीर्ति
(8) मनोरमा	– सुपार्श्व कीर्ति

- ये सभी संताने महाबल मुनिके पास संयम लेते है । (पद्मचरित्र)
- हनुमान 750 राजाओके साथ चारणश्रमण धर्मरत्नके पास संयम लेते है और उनकी 1000 पत्नियां लक्ष्मीमति साध्वीजीके पास संयम लैती है । हनुमान मोक्षमे जाते है । **(पद्मचरित्र)**
- हल्ल विहल्ल श्रेणीकके पुत्र वह वीर प्रभुके पास संयमी बनकर गुणरत्न संवच्छर तप करके 11 अंग पढकर अनुत्तर विमानमे गये ।

(ऋषिमंडलस्तव)

- सं. 1675 और 1683 मे हुए वर्धमान शाह पद्माशाहने शत्रुंजय महातीर्थकी 99 बार संघ सहित यात्रा की थी ।**(जैन तीर्थ इति.)**

- चक्रवर्तीका राज्याभिषेक 12 साल तक चलता है । सभी राजा 12 वर्ष तक वही ही रह जाते । **(आवश्यक निर्युक्ति)**
- भरत राजाको आरीसा भवनमे केवलज्ञान होनेके बाद उसकी पाट पर होनेवाले आदित्य यश, महायश, बलभद्र बलवीर्य, कीर्तिवीर्य, जलवीर्य एसे छ राजा केवल ज्ञान पाकर मोक्षमे गये थे । **(गिरनार महा)**
- 10-11 वी सदीमे मालवाके मूंज और भोज राजाकी सभामे जैनाचार्य सभाको सुशोभित करते थे ।
- स. 1067 से 1111 तक भोज राजाके राजकालमे वादीवेताल शांतिसूरिने भोजकी राजसभामे 84 वादियोको जीतकर 74 लाख मालवाके सिक्के प्राप्तकिये थे ।
- 11मी सदीमे प्रधुम्नसूरिने ग्वालियरमे राजाको अपनी वादशक्तिसे रंजित किया था।
- 12मी शताब्दीमे दिल्लीमे बनाया हुआ एक जैन मंदिर आज कुतुबुद्दीन मस्जिदमे पलट गया जिसमें जैन मूर्तिया है ।
- 12वी सदीमें अभयदेवसूरिने शेढी नदी के किनारे पर से स्तंभन पार्श्वनाथकी मूर्ति प्रगट की थी जो आज खंभातमे है ।
- 14मी सदीमे जिनप्रभसूरि कहते है कि अंतरिक्ष पार्श्वनाथकी मूर्तिके नीचेसे पनिहारी स्त्री निकलजाय उतनी जगहथी परन्तु कलयुगके प्रभावसे नीचे आ गई
- 11वी शताब्दीमे चित्तौडमे 32 जिनालय थे एसे इस तीर्थमाला से जाना जाता है । **(सर्वतीर्थसंग्रह)**
- कुमारपालकी अजब ताकत :
  एकबार कुमारपाल युद्धकी तैयारीके लिए घोडोको पूंजनीसे साफ करते है उस वक्त 72 राणा हसते है कि यह बनिया युद्धमे क्या करेगा ? उस वक्त अपनी ताकात दिखानेके लिए एक ही भाले से सुपारी की सारी गुन उडा दी और भालेके एकही प्रहारसे लोहकी सात कढाई को तोड डाली **(कुमारपाल प्रबंध)**

हीरसूरिजी से बोध पानेवाले मुसलमान राजा

1. अकबर बादशाह
2. अबुल फझल
3. फैजी
4. शेख मुबारक
5. जाफरबेग आशीफखान
6. कासम काब्ली
7. अब्दुस्समद
8. आजमखान कोका
9. मुल्लाशाह महम्मद
10. शाहबादी
11. सुस्महमहाद
12. सदर जहान
13. मीरशरीफ अमली
14. सुलतान खाजासदर
15. मिरजाजानी हाकमठठा
16. नवी शास्तरी
17. शेख जादागोसला
18. बीरबल

(सूरि सम्राट)

- अकबर बादशाह सिर्फ एकही बार भोजन करता था उस दूध, चावल और मीठाई और जुवार डालकर गंगाका ठंडा पानी पीता था। उसके रसोई घरमे चंदरवा, बांधता जिससे कोई जीवजंतु अंदर न गिरे यह बादशाह सिर्फ तीन घंटे नीद लेता था। बाकी के समयमे संगीत सुनता था। **(सूरि-सम्राट)**
- 84 लाख पूर्व और 89 पक्ष तीसरे आरे के बाकी रहे तब ऋषभदेव का जन्म हुआ था। और तीसरे आरेके 78 लाख पूर्व और 89 पक्ष बाकी रहे तब भरत चक्रीका जन्म हुआ था। ऋषभदेवके जन्मके बाद छलाख पूर्व भरतका जन्म हुआ था। **(काल सप्ततिका)**
- भीनमालमे सिंह नामका सोलंकी राजा था उस समय वहाँ 31000 ब्राह्मणके घर थे।
- चन्द्रवती नगरी मे 444 जिनमंदिर, 999 शिवालय लकडीके बने हुए थे। महम्मद गिझनीने सं. 1080 मे चंद्रावतीका नाश किया था
- अमरसिंह महादानी था उसने एक गायकको सिर्फ एक ध्रुव पद से खुश होकर 1000 टांक भेंट दिये इस अमरसिंहने पांडुदेशके 11 लाख कैदियो को जेलमे से छुडवाये थे और देवगिरिमे नये जैनोको बसाकर 'रामराज्य' फैलाया था। उरंगलमे जिनमंदिर बंधवाया था। अमरसिंहके पुत्रने शत्रुंजयका संघ निकाला जिसमे 28 जिनालय थे।

(हेमप्रबंध)

- संघवी कर्माशाहने किया हुआ शत्रुंजयके उद्धारके समय 10 आचार्य हाजिर थे और सभीने सर्वसंमतिसे निश्चय किया कि यह तीर्थ 84 गच्छोका है । **(शिलालेख)**
- सज्जनमंत्री प्रतिदिन जिनपूजा और प्रतिक्रमण करनेवाला था । युद्ध करने जाता तो भी प्रतिक्रमण किए बिना नही जाता । **(आचार - प्रदीप)**
- कवि श्रीपाल अंध था । परन्तु उद्‌भट्ट और महाविद्वान कवि था ।मनपसंद काव्य जल्दी से बना दैता था । इस कविने एकही दिनमे' वैरोचन पराजय प्रबंध' रचा था । उससे राजाने कवि चक्रवर्ती' बिरुद दिया था । इस कविने एकही काव्यके 100 अर्थ किए था **(कवि श्रीपाल)**
- **अनुपमादेवीका उद्यापन** : सं. 1262 मे अनुपमा देवीने ज्ञानपंचमी की आराधना की और तप पूर्ण होने के बाद भव्य उजमणा जिया । जिसमे 25 समवसंरण, शत्रुंजयकी तलहटीमे 25 वाडिया गिरनारकी तलहटीमे 11 वाडिया, तेजलपुरमे जिनालय और पौषधशाला, साधुके उपकरणो के नामके पात्रा, झोली, डांडा, दोरी, आदि गाँव बसाये ।
- नंदीश्वर तपके उद्यापन में जब तक शत्रुंजयमे नंदीश्वरका जिनालय न बनवाया जाय तब तक एकासणा किया था । जिनालय पूर्ण होनेके बाद ही एकासणा छोडा था । और वहां अनुपम सरोवर' बनाया था।
- महामंत्री तेजपालका सं. 1038 मे शंखेश्वरके पास चंदुर गाँवमे समाधिपूर्वक निधन हुआ था । उसके पुत्रने चंदुरमे जिनालय बनाया था जो आज भी है । **(प्रभावक. च.)**
- भीमाशाह : यह खंभातका व्यापारी था । उसमे खंभातमे जगह न मिलने से गाँव बाहर हाथी दांत की पौषधशाला बनाई थी । आबादी बढने से खंभातमे आ गई।
- भीमा शाह : यह भी खंभातका वासी था । उसने सं. 1327मे देवेन्द्र सूरिके स्वर्गमनको बाद 12 साल तक अन्नका त्याग किया था । यही भीमाने ब्रह्मचर्य व्रतका स्वीकार किया तब 700 स्थानो मे एक रेशमी साडी और पाँच वस्त्रोकी प्रभावना की थी । **(तीर्थ संग्रह)**

- जगतगुरु हीरसूरिने खंभातमे 7 चार्तुमास किए और खंभातमे 25 जिनालयोकी प्रतिष्ठा करवाई थी । **(हीरसूरि रास)**
- आभड सेठ महादानी थे वह गुरुओको हररोज एक कुंभ जितना घी देता था । पाटणकी प्रत्येक पौषधशालाओमे रहे हुए साधुओको बुलाकर भक्ति करता । इस शेठने कुल 10,80,00000 द्रव्य दान में दिया था ।
- विक्रमकी 19मी शताब्दीमे जामनगर के फतेहचंद कपूरचंद लालन एक विद्वान था। उसने बहुत से गाँवोमे जैन धर्मका प्रचार किया था। यह लालन सालभरमे 1800 सामायिक करता था
- भानुचन्द्रजी उपा. का जन्म एवं ज्ञानसारकी रचना 'सिद्धपुर'मे हुई थी। सं. 1479 मे तारंगाजीका जीर्णोद्धार हुआ उस समय प्रतिष्ठामे आ. सोमसुंदरसूरि सहित 1800 साधु थे ।
- मंत्री आलिगदेवने सिद्धपुरमे पार्श्वनाथकी मूरतिकी प्रतिष्ठाकी तब सुलतानने मूर्ति तोडनेका इरादा किया था । उस समय भोजकोने सुलतानकी उपस्थितिमे दीपकराग गाकर 108 दीप जलाये और एक सर्प सुलतानके सामने आकर बैठा । यह समस्या देखकर प्रतिमाको तोडी नही । तब से इस पार्श्वनाथका नाम सुलतान पार्श्वनाथ के नामसे प्रसिद्ध हुआ ।
- उज्जैनके वासी शेठ जिनभद्र के दो पुत्र थे । बडा वीरधवल छोटा भीमकुमार। उसमे वीरधवलने अपनी शादी उत्सव को दीक्षा महोत्सवमे बदलकर 1302मे देवेन्द्रसूरिके पास संयमीबने थोडे समयके बाद भीमकुमार भी संयमी बना
- जो आदमी कार्तिक सुद-1 के दिन जिनेश्वरके सामने 1 लाख अखंड धान्य (चावल के) दाणे रखे तो वह आदमी पुण्यशाली और अप्रमाण धान्यवाला होता है । **(सुकृत सागर)**
- चंड प्रद्योतन राजाने भ्राजिल श्रावक नाम से शहर बसाया और उसकी व्यवस्थाके लिए 1,200 गाँव भेंटमे दिए थे । वही गाँव जीवितस्वामी तीर्थ के नामसे प्रसिद्ध हुए । आर्य महागिरि एवं आर्यसुहस्ती सूरि वहाँ अनेकबार विचरे थे । **(ओघ.निर्युक्ति)**

- पादलिप्तसूरिने अपनी तर्जनी अंगुलीको घुंटने पर फिराकर मुरुंड राजा के मस्तककी वेदना दूर की थी उससे राजा घोडे पर बैठकर गुरु के पास धर्मगोष्ठी के लिए जाता था **(निशीथ भाष्य)**
- श्रीपाल राजा एवं 700 कोढियां का 18 प्रकारका कोढ उज्जैन मे केसरियाजीकी मूर्ति के सामने श्री सिद्धचक्र यंत्रके अभिषेक से दूर हुआ था । वह मूर्ति आज मेवाड मे धूलेवा गांवमे है ।

(श्रीमाल चरित्र)

- वि.सं. 795 में भिन्नमाल नगरमे जब भाण राजा शासन करता था उस समय वहाँ श्रीमाली ज्ञाति के 62 ब्राह्मण करोडपति होकर बसते थे । उदयप्रभसूरिने उपदेश देकर उनको जैन बनाये थे ।

(पार्श्वनाथ पर. इति)

- जब हेमचंद्रसूरिने पाटणमें प्रवेश किया तब उनके जुलुस में 1800 करोडपति थे उस समय पाटणमें एसा नियम था कि जिसके पास जितने लाख रुपये हो उतने दीवे एवं जिनके पास जितने करोड रुपये हो उतनी पताकाए (धजाए) अपने महल पर रखते थे । इसमे आनेवाले साधर्मिक को मुसीबत न रहे । पाटणमे चौक और 84 बाजार थे सोने रुपेके सिक्के बनानेकी टंकशाल थी

(जैन तीर्थ सर्वसंग्रह)

- पेथड पिता देदाशाहने कुंकुमरोल पौषधशालाके लिए 50 पोठे केसरकी लाकर चूने में डाली थी जिस सार्थवाहके पास ली थी वह सार्थवाह 10,000 बैलोके परिवार के साथ 360 प्रकारके किराने लेकर आये थे । **(सुकृत - सागर)**
- छठे आरेमे 'गंगा नदी रथमार्ग जितनी छोटी होगी और दूसरी 14,000 नदिये भूमि उष्ण होने से शोषित हो जायेगी । **(जंबुद्वीप-प्रज्ञप्ति)**
- सती सीता अपने शीलका सत्य दिखाने के लिए 300 हाथ गहरी खाई बनाकर उसमे जलसे अंगारे डाले और बादमे बोली कि 'राम' के बिना मनसे ओर किसीभी इच्छा की हो तो मैं भस्म हो जाउँगी, ऐसा कहकर खाईमे गिरती है । शीलके प्रभाव से वह आग पानीबन जाता है और कमल पैदा होते है । **(पद्म-चरित्र)**

- कुसुमपुर नगरमे धनदराज़ा के पुत्र भुवनतिलकने रत्नभानु केवलीके पास पूर्वभव सुनकर (पूर्वभवमे 500 साधुओको मारनेके लिए जहर डाला था) वही केवली से संयम लेकर 72 लाख पूर्व तक साधुओकी वैयावच्च की 80 लाख पूर्वतक संयम पालकर केवली बनकर मोक्षमे गया । **(पुष्पमाला चरित्र)**
- जब राणा प्रताप हारकर निराश हो गये तब लक्ष्मी सागर सूरिने उनको पार्श्वनाथका ध्यान लगाने को कहा था । प्रतापने श्रद्धापूर्वक साधना की इस से भीमा शाहने प्रतापको बहुत धन दिया । इससे राणाने 52 किल्ले और उदयपुरको जीत लिया बादमे उस राणाने मेवाडकी सीमामे पहाडके बीच नागफणा पार्श्वनाथका जिनालय बनाया था । **(भारत तीर्थ इति.)**
- **चौदह राजलोकका प्रमाण :** 371172970 मणका एक भार ऐसे 1000 भारके तप्त लोहेके गोलेको कोई समर्थ देवता नीचे फेंक दे तो वह गोला चंद्रगति से नीचे आते छ दिन छ-प्रहर छः घडीमे जितना अंतर काटे वह अंतर राजकी संख्या जान लेना । **(प्रश्नोत्तर-प्रदीप)**
- **दांताक शेठ का महल :** उज्जैनी नगरीमे इस शेठने 18 करोड सोनैया खर्च करके शास्त्रीय नियमो अनुसार सातमंजिला महल बनाया जिसको बनते 12 वर्ष लगे । जब शेठ महलमे सोने गए तब गिरु गिरुं एसा बोलने लगा । भयके कारण शेठने विक्रम राजाको महल बेच दिया और विक्रम राजाको एसा शब्द सुनमे आया तब कहा कि गिर उस समय सुवर्ण पुरुष गिरा । **(श्राद्धविधि)**
- फिरोज नगरमे अकु संघवी 96 वर्षकी उम्रमे युवा जैसे लगते थे उनके घरमे 91 पुरुष पघडी बांधने वाले थे । इस संघवीने अनेक पौषध शालाए एवं जिन प्रासाद बनाये थे । यह संघवी हीरसूरिजीका परम भक्त था । **(सूरि सम्राट)**
- **अक्षौहिणि सेनाका प्रमाण :**
  जिस सेनामे 21870 रथ, 21870 हाथी, 19350 सैनिक, 65610 घोडे, आते, कुल 1,28,100 थी संख्या हो जाय वह अक्षौहिणी । और

13,2124,900 इतनी प्रमाणवाली महाअक्षौहिणी सेना होती है ।

- रामके सैन्यमे 1000 एवं रावण के सैन्यमे 8000 अक्षौहिणी सेना थी।

(प्रश्नोत्तर प्रदीप / पद्मचरित्र)

- **शीशु नागवंशके नौ नंद :**

(1) नंदिवर्धन- 60 से 92 (5) बृहस्पति - 144 से 157
(2) महानंदी - 92 से 110 (6) धननंद - 157 से 169
(3) महानंद 110 से 147 (7) ब्रहदर्थ - 169 से 171
(4) सुमाली - 147 से 158 (8) सुदेव - 171 से 177
(9) महापद्म - 177 से 210

(सम्राट संपत्ति)

- विजयदेवसूरिने दिगंबर कुमुदचंद को जीता तब उसके जीतकी चार जोड निशान, 585 उत्तम घोडे, 1100 सैनिक 1282 महंत, 400 बैलगाडियो, 572 सेवक, 20 लाख प्रसिद्ध ग्रंथ दोलाख धन और कुमुद की पदवी ग्रहण की. सं. 1181 मे जीता था ।

(विमल प्रबंध)

- सं. 1174 मे देवसूरिने पाटण में जीते हुए 84 वादीए –

8 — ब्राह्मणमंतवालेको 4 — क्षत्रियमतवालाने
9 — बौद्धमतवालेको 2 — जोईअ मतवाले का
18 — भगव मतवाले को 1 — धीवर मतवाले को
16 — शिवमत वालेका 1 — भिल्ल मतवाले का
7 — गंधर्व मतवाले का 1 — भौतिक मतवाले का
7 — दिगंबर मतवाले का 84 — वादियो को जीते थे ।

(उपदेश - सप्ततिका)

- 1,42; 30249 योजन से अधिक सिद्ध शिलाकी परिधि है ।

(भगवती सूत्र)

- रत्नचूड राजा जब पुंडरिक गणधरके पास दीक्षा लेता है तब पाँच हजार मांडलिक राजा उनके साथ साथ दीक्षा लेते है ।

(पुंडरिकच.)

- **कृत्रिकापन :** पहले के समय में बडी बडी नगरियोमे देवाधिष्ठित दुकान थी कि जहांसे तीनो भुवन की जो भी चीज मांगी जाय वह

सभी मिल जाय । **(भगवती सूत्र)**

- **रत्नकंबल** - 'मूषक रोमज वस्त्रम्' ठाणांग सूत्रमे आता है कि आगमे उत्पन्न हुए चुहेके लोम के कपडेसे बनती है । उस रत्नंकबल को धोने के लिए आगमे डालनी पडती है । (प्रश्नोत्तर प्रदीप)
- विजय राजधानी का किल्ला 36 1/2 योजन ऊँचा है ।

(जीवाभिगम सू.)

- दो कोडा कोडि 85 लाख कोडि, 71000 कोडि, 400 कोडि, 28 कोडि, 57 लाख 14285 इतनी इन्द्राणि देवलोकमे एक इन्द्रके जन्मके समय होती है ।

(रत्नसंचय प्र.)

- 12 1/2 करोड सुवर्ण - 1,30,200 मण, 13 शेर और 24 टांक प्रमाण सोना होता है । **(रत्न संचय प्र.)**
- राजाओ के घर — सात मंजिल के
  युगलियाके घर — आठ मंजिल के
  वासुदेवके घर — 18 मंजिल के
  चक्रवर्तीके घर — 36 मंजिल के **(विजयसेनसूरिपत्र)**
- द्वारिका के दाहमें जो 132 कुल कोटि यादवो का नाश हुआ था उसमे 56 कुल कोटि यादव द्वारिकाके थे और 72 कुलकोटि यादव नगरी के बाहर थे जिन्होने चारित्र ग्रहण करने का कबूल किया उनको नेमनाथ के पास भेजे थे बाकी जो नगर से दूर गये थे । उनको खींच-खींचकर आग में जलाये गये ।

(संबोधसित्तरि)

- निर्दयता से एक लाख गर्भवती स्त्रियोके पेट चीरकर उसमेसे सात आठ महिनेके गर्भको मार डाले उसमे जितना पाप लगे उससे नौ गुना पाप साधु यदि स्त्रीका सेवन करता है तो लगता है और साध्वी के सेवन से 1000 गुना पाप लगता है । **(संबोध सित्तरी)**
- सिंह केसरिया लड्डू - जिस में 64 प्रकारके कुसुमोका रस, 84 प्रकारके राजद्रेव्य, और 16 प्रकारके सुगंधित द्रव्य डालने से बनता है **(उत्तराध्ययन वेताल वृत्ति)**

- चक्रवर्तीके नौ निधानोमे जो शाश्वते दिव्य पुस्तक होते है उनमे समस्त विश्वकी व्यवस्था बताई गई है । **(लोक प्रकाश)**
- हस्तिनापुरमें महाबलराजा जब संयम लेता है तब लाख सोनैया देकर पात्रा मंगवाता है । लाख सोनेया देकर रजोहरण मंगवाते है और लाख सोनैया देकर हजामको बुलाते है ।
- वीर प्रभुकी पुत्री सुदर्शना 1000 स्त्रियोके साथ और जमाली 500 क्षत्रियोके साथे संयम ग्रहण करता हे । **(उप. प्रासा.)**
- कलंकी राजाका पुत्र हररोज जिन प्रतिमाको स्थापित करनेके बाद भोजन ग्रहण करनेवाला होगा । **(विविध तीर्थ कल्प)**
- पंचम आरें के अंते मे दुप्पहसूरि होंगे जो 12 वर्ष गृहस्थापनमे, 4 वर्ष साधुअवस्था, 4 साल तक आचार्यपद का पालन करके छठ्ठ तपकी उग्र तपस्या करनेवाले होगे । अंतमे अट्ठमकी तपस्या करके दो हाथ की कायावाले स्वर्गमे जायेगे । वहां से चारभव में मोक्षमे जायेंगे । **(विविधतीर्थ कल्प)**
- दूसरे आरेके अंत में सात दिन पुष्करावर्त मेघ बरसेगा उससे पृथ्वी का ताप दूर होगा, एसे अलग अलग मेघ 35 दिन तक बरसेगा । पृथ्वी फल फूल से खील उठेगी । मनुष्य तिर्यंच निरोगी बनेगे । **(तित्थोगालियपयन्ना)**
- नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरिने स्तंभन पार्श्वनाथकी मूर्ति प्रकट करनेके लिए जो 'जय तिहुअण स्तोत्र की रचना की थी उसकी 32 गाथाए थी । एक बार पद्मावती देवीने प्रकट होकर कहा कि इसकी दो गाथाओ से बारबार इन्द्रको आना पडता है इसलिए दो गाथाए गाढ दी तब से 30 गाथाका स्तोत्र रहा) **(प्रचीन तीर्थ इति)**
- जब द्राविड और वारिखिल्लका युद्ध हुआ तब पाँच योजन जगह रखकर दोनो के सैन्यका डेरा डाला था । हरेक सैन्यमे 10 लाख हाथी, 10 लाख घोडे, 10 लाख रथ, 10 करोड सैनिको थे । यह युद्ध सात महिनो तक चला इसमे 10 करोड योद्धा चल बसे । **(शत्रुंजय-कल्पवृति)**

- जब राम-लक्ष्मण सैन्य के साथ लंका जाते है तब बीचमे समुद्र आता है । तब राम सोचते है कि अब क्या करना ? उस समय इधर उधर घूमते स्तंभन पार्श्वनाथका जिनालय दिखाई पडा । वहाँ जाकर ध्यान लगाया हे विश्व वत्सल आपके प्रभावसे जल रुक जाय तो सीताको ले आये एसे वहां सात महिना नौ दिन तक पार्श्वनाथ की आराधना की इससे जल रुक गया ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- अर्जुन मालीने 163 दिनोमे 1141 स्त्री-पुरुषोका घात किया था ।
- पहले देवलोकमे आदिनाथ और वीरप्रभुके बीच 50 लाख इन्द्र हुए थे ।
- भरत चक्रवर्ती को पुत्र-सवा करोड, पौत्र - साढे तीन करोड
- भरतका पुत्र सूर्ययशा के पुत्र -सवा लाख, स्त्रिए - 30,000
- बाहुबलीजीके पुत्र - तीन लाख
- बाहुबली का पुत्र चंद्रयशाके पुत्र 72000 स्त्रिएं 24000

(स. 1751 हस्तलिखित प्रत)

- वीरप्रभुके निवार्णके बाद 620 वर्ष हुए तब आचार्य आदि गाँवमे वसति करने लगे।
- वीर संवत 585 साल में हरिभद्रसूरि हुए । **(काल सप्ततिका)**
- चक्रवर्तीका भोजन - हमेशा इक्षु खानेवाली एसी सवा लाख गायोका दूध, उसकी खीर 360 रसोइये बनाते है ध्यानपूर्वक उबालकर एसी गरम खीर को चक्रवर्ती खाते थे
- रामचंद्रजी दीक्षा लेने जाते तब उनके साथ 16,000 राजा और 37,000 रानियोने दीक्षा लेती है । रामचंद्रजीने सुव्रतमुनिके पास नौपूर्वका अभ्यास किया था । **(पउमच. पर्व 118)**
- केवली बने हुए रामचंद्रजीको सीतेन्द्रने पूछा लक्ष्मण कब मोक्षमे जायेगा ! तब केवली भगवंत कहते है चौथे नरकसे निकलकर पुष्करवर द्विपके विदेहमे पद्म नामका चक्रवर्ती होगा । वहां संयम लेकर पद्म नामका तीर्थंकर बनकर मोक्षमे जायेगा ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- लव और कुश अपने पुत्रोको राज्य पर स्थापित करके संयम लेकर केवली बनकर शत्रुंजय पर मोंक्षमे गये **(शत्रुंजयकल्प)**
- कुमारपाल राजा संघ लेकर शत्रुंजय पर जाते है । उस समय वहां के मुख्य द्वारको सच्चे मोतीसे बधाते है ।
- पाँच पांडव कृष्णकी मृत्युसे वैराग्य पाकर सुस्थित गुरुके पास संयम लेकर 11 अंगोका अध्ययन करते है । इसमे युधिष्ठिर पूर्वी बनते है, ये पांच पांडव शत्रुंजय पर 20 करोड मुनिवरो के साथ आसोसुद - पूनमके दिन मोक्षमे जाते है । **(मरणविभक्ति)**
- आ. हीरविजयसूरिके अग्निसंस्कार के समय चितामे 15 मण सुखड, 3 मण अगर, 3 सेर कपूर, 2 शेर कस्तूरी 3 सेर केशर और पांच सेर चुआ डाला था **(सूरि सम्राट)**
- रावणका जीव रावणके भवसे लेकर 14 भव के बाद तीर्थंकर होगा। **(पउमचरियं)**
- द्वारिका नगरीमे साढेतीन करोड कुमार यादवो के हुए थे **(सेन.प्रश्न)**
- लवण समुद्रमे जगतीके पास मक्खी के पंख प्रमाण जल रहा हुआ है । वह ज्वर आनेसे न्यूनाधिक नहीं होता **(सेनप्रश्न)**
- जब युद्धिष्ठिर सभी भाईयो के साथ वनमे जाता है तब रातमे भाईयोकी देखभालके लिए सामायिक लेकर बैठते है उस समय सात ताड जितना लंबा शरीर है । जिसका एसाकलि नामका देव आकर उपसर्ग करता है । परन्तु युधिष्ठिर चलायमान नहि होने से देव प्रसन्न होता है और छोटा शरीर बनाकर उसके आगे झुकता है । इस कालमे भी जो सामायिकमें अडिग रहेगा वह सफलताको प्राप्त करेगा । **(प्रबंध पंचशती)**
- दिल्ली के मंत्री महणसिंह को एसा नियम था कि कहीं पर जाय लेकिन प्रतिक्रमण के बिना न चले । एक बार खुद जेलमे गए वहा भी 50 दिनो तक एक एक सोनामुहर देकर प्रतिक्रमण के समयके लिए छुट्टी लेते । **(प्रबंध पंचशती)**

- पंचम कालमे नरकगामीकी संख्या - वीर प्रभुके 2500 वर्ष के बाद
  55,55,55,555 - आचार्य भगवंत
  88,88,88,888 - श्रावक
  66,66,66,666 - साधु भगवंत
  99,99,99,999 - श्राविकाएं नरक में जानेवाली होगी।

  (गिरनार माहात्म्य)
- अल्हाबाद में केप्टन स्कोर्सबीए एक पानीके बूंदूमे 36450 त्रसजीव दुरबीनके द्वारा देखकर कहे थे। **(आगम सार संग्रह)**
- शालीभद्र शेठके चार आश्चर्य -
  1 देवऋद्धि को मनुष्यपनामे भोगवना
  2 श्रेणिक राजाको - श्रेणिकांरु नामका किराना गिना।
  3 सोने के अलंकारको फूलमालाकी तरह फेंककर हररोज नये पहनना
  4 श्रेणिक राजाका स्पर्श होते ही पसीना पसीना होगया।

  (प्रबंध पंचशती)
- मालवा देशमे 96 लाख गाँव आते। इस देशका राजा मुंज था और कान्यकुब्ज देशमे 36 लाख गाँव आते। इस देशका राजा वनराज था।

  (प्रबंध-चिंतामणी)
- भोज राजाके दरबारमे 999 पंडित रखे हुए थे। जो शास्त्रके निपुण थे। देश देश के पंडितो को जीतकर बेल गाडी भर जाय इतना सुवर्ण इक्कट्ठा किया था। **(प्रबंध चिंतामणि)**
- **अभयकुमार मंत्रीका पूर्वभव :**
  पूर्वभवमे खुद मांगकर एक मण जितना अनाज इक्कट्ठा करके अपना गुजारा करता था। एक बार एक शेठने कहा कि मे तुझे एक मन से ज्यादा अन्न दूंगा। तू मेरे पास रह जा। तुझे, मेरे बगीचेमे से फूल लाकर दिलाना। एक बार इस लडकेने अपने आये हुए अन्न मेंसे फूल लाकर प्रभुको चढाये। इनसे काल करके देवलोकमे गया। वहां से श्रेणिक राजा का पुत्र बना **(प्रबंध पंचशती)**
- आबुजी पर्वत पर शिखरबंध जिनालय नही है क्योकि इस पर्वतके

नीचे अर्बुद नामका नाग है । जो 6 महिने मे एकबार हिलता है । तब पर्वत कंपायमान होता है । इसलिए सभी जिनालय छोटे शिखरके है । **(प्रबंध पंचशती)**

- भवितव्यता - जब लक्ष्मणके द्वारा रावण मारा गया तब सिर्फ अंतर्मुहुत के बाद अतिबल नामके केवली 56,000 साधुगण के साथ लंका नगरीमे पधारे । यदि वह केवली रावण की उपस्थितिमे आये होते तो अवशय संधि हो जाती परन्तु एक मुहुर्त देरी हुई उसका नाम भवितव्यता । **(प्रबंध - पंचशती)**
- शत्रुंजय पर रही हुई चेल्लण तलावडी के पास देवताधिष्ठत गुफामे बिराजे हुए भरत चक्रीने भराई हुई जिन प्रतिमाको नमस्कार करने से एकावतारी हो जाते है ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

- गौशालाने जिस वीरप्रभु पर जो तेजालेश्या छोडी दी थी उसमे 16 देशोको भस्मीभूत करनेकी ताकात थी । **(उपदेश रत्नाकर)**
- नंदिषेण मुनिने 12 वर्ष तक वेश्याके घरमे रहकर 43,200 मनुष्योको प्रंतिबोध देकर संयमके लिए प्रभुके पासे भेजे थे ।
- लवण समुद्रमे 500 योजनके मच्छ होते है
- कालोदधि समुद्रमे 700 योजन के मच्छ होते है ।
- स्वयंभूरमन समुद्रमे 1000 योजनमे मच्छ होते है
- विजय राजधानी 1,200 योजन लंबी, 37,600 योजन उसके चारो ओर परिधि, 37 1/2 योजन ऊँचा गढ इस राजधानी मे 500 दरवाजे, 1,200 योजन लंबा और चौडा चबूतरा, उस पर 62 1/2 योजन ऊंचा प्रासाद आसपास कुल 85 प्रासाद, सुधर्मा सभामें 6000 चोखुणे चोतरे थे । **(अढाईद्वीपके संग्रहमे)**
- वस्तुपाल मंत्रीने शंखराजाको हराकर उससे 5000 सोनेकी ईंट, 1,400घोडीयां और रत्नमाणेक के थालको ग्रहण करके वीरधवलको अर्पण की । उससे राजाने मंत्रीको तीन उपाधियां दी थी ।
- आषाढभूर्ति लड्डू वहोरनेके लिए चार प्रकारके रुप धारण किये थे ।

(1) साधुके वेषमे (2) काणेका (3) कुबडेका (4) कोढियेका

(दर्शनरत्न रत्नाकर)

- पवनंजय दीक्षा लेकर मोक्षमे जाता है। अंजना सतीभी मुनिचंद्रसूरिके साथ दीक्षा लेकर मोक्षमे जाती है और हनुमान भी देवसूरिके पास दीक्षा लेकर शत्रुंजय पर मोक्ष में जाता है। **(भरतेश्वर वृत्ति)**
- जब श्रेणिक राजाका जीव भरत क्षेत्रमे अवतार लेगा तब बडे बडे रत्नोकी बारीस बरसेगी और रातमे कमलोकी बारीस बरसेगी उससे उसका नाम 'पद्मनाभ' रखा जायेगा
- कुंतीदेवी पाँच पांडवोके साथ शत्रुंजय पर मोक्षमे गई थी। और द्रौपदी अब पांचवे देवलोकमे है। जो थोडे भवके बाद मोक्षमे जायेगी। **(भरतेश्वर वृत्ति)**
- सुधर्मा सभाके बीच मे साडे साठ योजन माणवका स्तंभ है जिसके बीचमे सिकाओमे (छाबडी) वज्रकी डिबी में जिनेश्वरकी दाढाए है जिनकी देवता पूजा करते है।

(जीवाभिगम सूत्र)

- भरत चक्रीने नील मणि रत्नसे जडी हुई बहुत पाठशालाए बनवाई फिर खुद अठ्ठम करके सरस्वतीकी आराधना करके सभी पाठशालाओको पुस्तकोसे भरदेते है।

(पुंडरिक- चरित्र)

- भरत चक्रीने प्रभुके पास एसा अभिग्रह किया था कि मुझे हररोज जिनपूजा करनी होगी इससे इन्द्रने चक्रीको एक मणीमय जिनबिंब दिया। इस जिन बिंब अपने महलमे रखकर हररोज अष्ट प्रकारी पूजा करते और 12 श्लोकवाला स्तोत्र बोलते थे। **(पुंडरिक-चरित्र)**
- चार प्रकारके मेघका स्वरुप:

1 **पुष्करावर्त मेघ :** यह मेघ एक बार बरसता है उससे 10,000 वर्ष तक नये घास पानी अपने आाप होते ही रहते है। यह बारीस पहले आरेमें होती है।

2 **प्रद्युम्न मेघ :** जो एक बार बरसता है उससे 9000 साल तक नये घास पानी होते रहते यह दूसरे आरेमे होता है।

3 **जीमूत मेघ :** जो एक बार बरसता है जिससे 10 साल तक नये घास पानी होते रहते यह तीसरे चौथे आरे मे होता है ।

4 **जिम्ह मेघ :** जो बहुत समय बरसने पर भी कोई असर नही होता। जो पांचमे आरेमे होता है ।

- **सातवी नरकमे रहे हुए जीव :**
  परसुराम, दाढादाल, छातीसुत, वसुराजा, सुमुभ चक्रवर्ती, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती, मम्मण शेठ **(जीवाभिगम सूत्र)**
- सर्वार्थ सिद्धविमानका सुख - इस विमानका नीचेका भाग 2100 योजन है । 33 सागरोपमकी आयु, 33 पक्षमें अेकबारश्वास लेना व छोडना । 33000 वर्ष के बाद आहारकी इच्छा होती है । अेक हाथका शरीर । उनकी शय्या पर स्फटिक मणिका झुम्मर जो चारो दिशाओ मे टकराता है उसमे से 32 रागिणिये नीकलती है । पुष्पकी शय्यामे सात तत्व चिंतन करते है । शंका होती तब सीमंधर स्वामीको पूछते है भगवान भी मनसे जवाब देते है ।
- महाविदेह मे रहे हुए साधु भी 32 कवलका आहार करते है उनको 32 मुडाका एक कवल होता है । उस कवलका 1024 मुडा प्रमाण आहार होता है ।
- महाविदेह के साधु के मुखका प्रमाण 50 हाथ जितना और पात्रके नीचेका प्रमाण 17 धनुष्य लंबा होता है ।
- महाविदेह के साधुओकी एक मुहपत्तिसे भरतक्षेत्रकी 1,60,000 मुहपत्तियां होती है (यहां से 400 गुनी लंबी 400 गुनी चोडी होती है)
- आलोचना लेनेके लिए गीतार्थ गुरुकी खोज उत्कृष्ट से 700 योजन और कालसे 12 वर्ष तक करनी चाहिए । **(पंचाशक ग्रंथ)**
- परमात्माको जिस वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान होता है ये वृक्ष भगवानके शरीरसे 12 गुना बडा होता है । **(सप्तति शतस्थान प्र.)**
- हरेक जिनेश्वरके खभे पर सौधमेन्द्र लाख सौनैयावाला देवदूष्य वस्त्रकी स्थापन करते है , जो जिनेश्वर मोक्षमे जाय तब तक रहता है । वीर

प्रभुको एक महीने से अधिक एक साल तक रहता है ।

(सप्तति शतस्थान प्र.)

- वर्तमानमे ज्ञान दर्शन से शासन चलता है । चारित्र्यका विच्छेद हुआ एसा जो बोलता है उसे आंबिलका प्रायश्चित आता है ।

(व्यवहार सूत्र)

- आलोचना के परिणामवाला साधु समाधि मृत्यु प्राप्त करके फिर से आराधना करके तीसरे भवमे मोक्ष पाता है । **(ओघनिर्युक्ति)**
- अविधिसे करना इससे न करना अच्छा । उसको ज्ञानी उत्सूत्र प्ररूपणा कहते है क्योंकि अविधिसे करता है उसे कम प्रायश्चित आता है और बिल्कुल क्रिया नही करता उसे बडा प्रायश्चित आता है ।

(पंचाशक ग्रंथ)

- जब थावच्चा कुमार दीक्षा लेने तैयार हुआ तब कृष्ण राजाने द्वारिकामे एसी घोषणा की जो भाई दीक्षा लेगा उसके परिवारका पालन मैं करुंगा । **(ज्ञातासूत्र)**
- अशुद्ध वस्त्र पहनकर जो पूजा की जाय तो दोष लगता है और नीवीका प्रायश्चित आता है । **(प्रश्नोत्तर चिंतामणि)**
- जिन पूजा करने वाले को शक्ति हो तो केसर घूंटने का पत्थर (ओरसीया) के साथ सभी साधन घर के उपयोगमें लेने चाहिए । जिनालय का द्रव्य खर्च करनेसे लाभ नही होता यदि उपयोग किया तो नकरा भरना चाहिए । **(श्राद्धविधि)**
- प्रभुके नौ अंगोमे सोने या रुपेके टीके लगाने चाहिए जिससे पूजा करनेसे प्रभुका अंग तूटता नहीं य़ यह बडा लाभ है । आशातना से बचा जाता है । **(प्रश्नोत्तरी)**
- वीरप्रभु कहते है कि गौतम इन्द्र जिस बार मुखके आगे वस्त्र या हाथ रखकर बोले वह निरवद्य भाषा है और खुले मुंहसे बोले वह सावध भाषा है । **(भगवती सूत्र)**
- यदि कोई परमात्माकी या दूसरी किसीभी प्रकारकी कसम लेता है वह बोधि बीजका नाश करता है । और अंतमे संसारका बंध करता है । देवगुरुके कसम लेनेवाले मिथ्यात्वी है । **(श्राद्धविधि)**

- चतुर्थ भक्त करनेवाले को पारणे या उत्तर पारणे एकासणा करनेका विधान नही है । चतुर्थ भक्त एक उपवास, छठ भक्त दो उपवास, वीरप्रभुने इसी तरह 229 छठ किए थे । **(भगवती ठाणांग सूत्र)**
- देवद्रव्यके खर्चसे दीवे या लाइट आदि बनाई हो तो वहां जाकर कागज पढा नही जाता । पैसे भी गिने नहीं जाते **(श्राद्धविधि)**
- अंबड तापस अनसन करके ब्रह्मलोक देवलोक में जायेगा । वहां से महाविदेहमे द्रढ प्रतिज्ञ नामका महर्धिक होकर मोक्षमें जायेगा ।

(भगवती सूत्र)

- साधु साध्वीजीको भरत भरे हुए वस्त्र काममें नही आते।

(गच्छाचार पयन्ना)

- श्रावक-श्राविकाको सामायिक प्रतिकमण आदि आवश्यक क्रियामे मुहपति चरवला अवश्य रखना चाहिए । **(अनुयोग द्वार)**
- कच्चा आम, टमाटर आदि प्रबल अग्नि संस्कार लवणादि से प्रासुक होनेके बाद अचित भोजी को काम में आता है । **(श्राद्धविधि)**
- कच्चे पानी मे. गुडशक्कर आदि डालने से वर्णगंध बदल जाते हे बाद उंस पानीका काल चौमासेमें 3 प्रहर, सर्दी के मोसम में 4 प्रहर, ग्रीष्ममे 5 प्रहर जानना ।

(प्रवचन-सारो.)

- स्थापनाचार्यजी पांवसे उँचे यानि जघन्य 4 अंगुल और उत्कृष्ट से मस्तक तक ऊँचा हो तो क्रिया शुद्ध गिनी जाय **(हीर प्रश्नोत्तरी)**
- ऊँटडी और भेडीका दूध अभक्ष्य है । **(पिंडनिर्युक्ति)**
- पौषधमे लघुनीति करके आनेके बाद इरियावहि करके गमणागमणे अवश्य करना चाहिए । **(आचारमय वीर सामाचारी)**
- श्रावकको पच्चक्खाण आता हो तो खुद लेना लेकिन साध्वीजी या श्राविका पास न लेना यदि न आता हो तो और दूसरा कोई देनेवाला न हो तो सोच लेना।

(चैत्यवंदन-भाष्य)

- सामयिक-पौषध आदिमे रहे हुए श्रावक-श्राविकाओ को कल्पसूत्र

आदिकी वासक्षेपसे पूजा एवं पटमे चित्तरे हुए प्रतिमाजी की पूजा नही होती । **(सेनप्रश्न)**

- नरकमे नारकियो को जो दुःख होता है उससे अनंत गुना दुःख निगोदके जीवोको होता है । गुप्त रीतिसे भुगतने होनेसे नरक जैसा तीव्र लगता नही । **(रत्नसंचय प्र.)**
- नीलसे रंगे हुए वस्त्रसे मनुष्यके शरीरमे निगोदके जीव पैदा होते है। नीलके रंगमे बाल के अग्रभागके (गली) अनी जैसे अनेक उरपरिसर्प संमूर्च्छिम जीव पैदा होते है । **(पन्नवणा सूत्र)**
- अभव्य जीवको मै भव्य कि अभव्य हूं एसी शंका कभी भी नहीं होती । **(आचारंग सूत्र)**
- निगोदमेसे निकलकर सात आठ भवके बाद भरत मोक्षमे गये थे । **(सूयगडांग सूत्र)**
- रुद्र (क्षुल्लक) साधुने 500 साधुओ को मारने के लिए पानीमें जहर डाला था देवीको मालूम होते ही जहर संहर लिया । बादमे वह रुद्र साधु बहुत दुःखी हुआ । अनंत भव भटकने के बाद मानव बना । तीर्थंकरका उपदेश सुनकर प्रायश्चित्त मांगा । इस समय उसने एसा अभिग्रह किया कि हररोज 500 साधुओको वंदन वैयाच्च करने के बाद ही आहार पानी उपयोग लेना । जिस दिन पूरी वैयावच्च न हो तब उसी दिन आहारका त्याग करते यह नियम छ महिने तक पाला बादमे काल करके देवलोक में गया । क्रमशः मनुष्य और उत्तरोत्तर सभी देवलोकमे जाकर मोक्ष प्राप्त करेगा ।
- तीर्थंकरके जीवोको एवं एकावतारी जीवो को देवलोकमे मृत्यु होने से छ महिने तक च्यवन चिन्ह देखे नही जाते परन्तु शातावेदनीय कर्मका उदय होता है । **(सूयगडांग सूत्र)**
- गीतार्थ को एक प्रहर और अगीतार्थ को दो प्रहर नींद लेनेका अधिकार है । **(सूयगडांग सूत्र)**
- महाविदेह क्षेत्रमें दिन रातका प्रमाण समान है । वहां छ ऋतुए हमेश

होती है। **(भगवती सूत्र)**

- पांचमा आरा श्रावण कृष्णा पंचमी से शुरु हुआ छठा आरा भी उसी दिन शुरु होगा। **(जंबुद्वीप-प्रज्ञप्ति)**
- साधु लोग अपने उपकरणो को मनुष्य के पास उठाते है तो प्रायश्चित आता है। **(निशीथ-सूत्र)**
- मुहपति पडिलेहण किए बिना वांदणा दे तो गुरु प्रायश्चित लगता है। **(व्यवहार-सूत्र)**
- चक्रवर्तीके प्रसाद 108 हाथ प्रमाण । वासुदेवके प्रसाद 68 हाथ प्रमाण और मांडलिकके 32 हाथ प्रमाण प्रसाद (महेल) होते है । **(व्यवहारसूत्र)**
- ब्रह्मचर्यसे पतित हुए साधुको वंदन करता है वो अनंतभव भ्रमण करता है । यह बात सीमंधर स्वामीने देवताको कही थी । **(महानिशीथ सूत्र अ.2)**
- तीर्थंकर (समवसरणमें) पृथ्वी से ढाई कोष उंचे बिराजमान होते है। **(आवश्यक सूत्र)**
- सामायिक बैठे बैठे लेता है और प्रतिकमण बैठे बैठे करता है तो आंबिल का प्रायश्चित आता है । **(श्राद्धजित कल्प)**
- तप चिंतामणी काउसग्गमे जो पच्चक्खाण मन से तय किया हो वो किसीके आग्रहसे दूसरा पच्चक्खाण करता है तो भंग दोष नही **(सेनप्रश्न)**
- बाहुबली का आयुष्य 84 लाख पूर्वका था । **(सेनप्रश्न)**
- ज्ञानपंचीका तप कारण होने से कृष्णापंचमी या दूसरेदिन भी हो सकता है । **(विषेश शतक)**
- जिन मंदिरमे दर्शन करते समय पघडी टोपी उतारता है तो अपशुकन। **(विचारशतक)**
- जब वीरप्रभुके पास इन्द्रभूति आदि सभी ब्राह्मण संयम का स्वीकार

करते है उन सभीके जनोई का वजन 3 1/2 मण होता है ।

(कल्पसूत्र)

- जबतक विधिपूर्वक चैत्यवंदन और साधुवंदन नही करता तब तक श्रावक-श्राविकको पानी कल्पता नही है । **(आचार दिनकर)**
- पूजा करते समय पुरुषोको दो और स्त्रियो को तीन वस्त्र पहनने चाहिए । **(उपदेश चिंतामणि)**
- सिद्धचक्र यंत्रकी बात 10वे विद्याप्रवाद पूर्वका परमार्थ है ।

(श्रीपाल चरित्र)

- साधु-साध्वीको कपास के एवं उनके वस्त्र चाहिए । **(ठणांगसूत्र)**
- शामके प्रतिक्रमणमें सामयिक लेने के बाद खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहण का आदेश मांगना चाहिए । **(सेनप्रश्न)**
- वर्षाऋतु (चौमासा) मे शक्कर, खजूर, अंगूर, मेवा, कोथमीर आदि सब्जी अभक्ष्य है क्योंकि उसमे जीवोकी उत्पत्ति है ।

(श्राद्धविधि)

- प्रथम पौषध लेकर बादमे प्रतिक्रमण करना चाहिए क्योंकि दिनके चार प्रहर और रातके के चार प्रहर का पौषध किया हुआ है । देरी से लेता है तो देरी से (पारे) सूर्योदय से पहले पौषध लेना चाहिए।

(श्राद्धविधि)

- श्रावक साधुसे कागज पेन्सिल लेकर अपने काममे उपयोगमे ले तो गुरुद्रव्यका दोष लगता है । नवकारवाली लेसकते है ।

(श्राद्धविधि)

- श्रेणिक राजाकी 10 रानियोंने दीक्षा के बाद किए हुए तप
  (1) काली –रत्नावली तप
  (2) सुकाली – कनकावली तप
  (3) महाकाली – क्षुल्लकसिंह निष्क्रिडित तप
  (4) कृष्णा – महासिंह निष्क्रिडित तप

(5) सुकृष्णा – भिक्षु प्रतिमा

(6) महाकृष्णा – क्षुल्लक सर्वतोभद्र प्रतिमा

(7) वीर कृष्णा – महाभद्र प्रतिमा

(8) राम कृष्णा – भद्रोत्तर प्रतिमा

(9) पितृसेन कृष्णा – मुक्तावली तप

(10) महासेन कृष्णा – वर्धमान तप

(अंतगडदशांगसूत्र वर्ग -8 अ. 10)

- तुंगियानगरीके श्रावक किसीभी दिन घरके दरवाजे बंद नही करते थे। जो भिक्षुक आता सभीको दान देते । जिन प्रवचनको कभी न छोडते । देवताओसे कभी चलित नहीं होते । हरेक के रोमरोममें जिन भक्ति बसी हुई थी । पर्वतिथि पर पौषध करनेवाले एसे श्रावक थे ।

(भगवती सूत्र)

- प्रथम देवलोकमे सूर्याभदेवका विमान 12 1/2 लाख योजन विस्तार का है इस विमानके 4000 दरवाजे, विमानके चारो और 500 योजन ऊँचे दुर्ग और 100 योजन चौडा । **(रायपसेणी सूत्र)**
- कुलपाकजी तीर्थ मे जिस ऋषभदेवकी प्रतिमा है वह 680 वर्ष तक आकाशमे उँची आधार बिना रही थी । **(उपदेश सप्ततिका)**
- कोटिशीलाका स्वरुप – उत्सेधांगुल से निष्पन्न 1 योजन लंबी, 1 योजन चौडी, 1 योजन ऊँची एसे प्रमाणवाली कोटिशीला है । वह शीला भरत क्षेत्रके मगध देशमे दशार्ण पर्वत के पास है ।
- इस कोटिशीला पर शांतिनाथ भ. के प्रथम गणधर संख्याता मुनिवरोके साथ मोक्षमे गये ।
- अरनाथ के 12 करोड मुनिवर, मुनिसुव्रत स्वामी के -3 करोड मुनिवर, माल्लिनाथके 6 करोड मुनिवर, नेमिनाथ के 1 करोड मुनिवर इस शीला पर मोक्षमे गये है ।
- त्रिपृष्ठ वासुदेवने इस शिलाको बांय हाथसे उठाकर सिरपर छत्रके रुपमे

धारण की थी।

- इस कोटि शिला का तप भी तपावलीमे है। **(विशेष शतक)**
- सोपारक नगरके अंध शिल्पीने शेरीसा पार्श्वनाथकी मूर्ति एक ही रातमे बनाई थी। परन्तु प्रतिमाकी छाती मे मसा रह गया उसे दूर करने के लिए शिल्पीने टंक मारा इससे खून चलने लगा देवेन्द्रसूरिने अंगुली दबादी इससे बंध हो गया यही मूर्ति अभी सेरीसातीर्थ है।

(विविध तीर्थकल्प)

- मथुरा तीर्थ अत्यंत प्राचीन है। ओघनिर्युक्तिमे इस तीर्थका वर्णन आता है। इस तीर्थमे जंबुस्वामी आदिके 527 स्तूप हीरसूरिजीने देखे। कृष्णवासुदेवका जन्म, मंगुसूरिका मंदिर, विश्वभूति मुनिका नियाणा दंड मुनिका केवलज्ञान, राजर्षि शंख, कंबल संबल, साध्वी पुष्पचुलाको केवल ज्ञान, वीरप्रभुको उपसर्ग, अढारह नातरा, निवृत्तिका स्वयंवर, इन्द्रनिगोदका प्रश्न, तीन पुष्प मित्र आदि हुए थे।

(विविध तीर्थ कल्प)

- कुलपाकजी तीर्थमे अभी जो ऋषभदेवकी मूर्ति है उसको भरत चक्रवर्तीने अपनी अंगुलीके अंगूठी में रहे हुए हरे रंग के माणेक में से बनाई थी जिससे माणेकस्वामी के नामसे प्रसिद्ध हुए विद्याधरोने, देवलोकके देवोने, मंदोदरीने इस प्रतिमाकी पूजा की थी। शंकरगण राजाने इस प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई थी। **(विविध तीर्थकल्प)**
- भरत चक्रवर्तीनेअष्टापद तीर्थ पर 9 योजन लंबा, आधा योजन चौडा और तीनगाउ उंचा जिनालय आदिनाथ का बनाया था।

(विविध तीर्थकल्प)

- रत्नसार श्रावकने गिरनार तीर्थ पर स्थापित की हुई प्रतिमा 1,36, 250 साल तक गिरनार पर रहेगी बादमे अदृश्य हो जायेगी। छठे आरेमे अंबिका इस प्रतिमाको पानीमे ले जाकर उसकी पूजा करेगी।

प्रतिष्ठाके समय रत्नसारको अंबिकादेवीने कल्पवृक्षके फूलकी माला पहनाई थी । **(प्रबंध पंचशती)**

- पाटण मे कोकेके पाडेमे जो पार्श्वनाथकी मूर्ति है उनका नाम प्रथम चार घडी तक लेनेसे. एवं पूजा करने से शंखेश्वर पार्श्वनाथ की. भक्ति जितना लाभ मिलता है। जो शंखेश्वर तीर्थमे अभिग्रह किया हो वो यहां पूजा करने से फलदेनेवाला होता है। **(विविध तीर्थकल्प)**
- अष्टापद पर्वत पर आदित्ययशसे प्रारंभ करके 50 लाख करोड सागरोपम काल तक भरत राजाके वंशकी परंपराके राजऋषि सर्वार्थ सिद्धि और शिवगति को प्राप्त किया था । **(विवितीर्थकल्प)**
- गिरनार तीर्थके नाम और ऊँचाई –
  पहले आरेमे कैलास - 26 योजन
  दूसरे आरेमे उज्जयंत - 20 योजन
  तीसरे आरेमे रैवतगिरि - 16 योजन
  चौथे आरेमे स्वर्गगिरि-10 योजन
  पांचवे आरेमे गिरनार - 2 योजन
  छट्ठे आरेमे नंदभद्र - 1000 धनुष्य **(उपदेश सप्ततिका)**
- नागार्जुनसूरि, स्कंदिलसूरि, पादलिप्तसूरि, बप्पजभट्टिसूरि यशोभद्रसूरि ये पाँच आचार्य हमेशा विद्या द्वारा शत्रुंजय, गिरनार, शंखेश्वर, नांदिया, ब्राह्मणवाडाजी यात्रा करनेके बाद आहार पानी ग्रहण करते थे । **(जैन इतिहास)**
- भीनमालमे श्रीमालियो के 90,000 बडे मंदिर थे । 45,000 ब्रह्माणोके घर थे । वहाँ मुनियो की 1000 पौषधशालाए थी । 1000 यज्ञ शाल्राए थी । वहाँ कोटिध्वज कोटमे रहते और लखपति बाहर रहते । **(विमल प्रबंध)**
- इश्वाकुवंशमे उत्पन्न हुए अलब्बुशाके समयमे इस वैशालीनगरमे

7707 महल, 7707 बगीचे, 7707 सोनेकी वाव, 77707 चबूतरे, इस नगरीमे सभी महलो पर सोनेके शिखर थे । हरेक कुलके प्रतिनिधि राजा कहलाते । इस नगरके बाहर के भवनो पर चांदी और तांबेके शिखर थे । **(चंद्रकेवली परिशिष्ट हिंदी)**

- **शीलव्रतधारी दंपती** - कच्छ देशमे सुकच्छ नामके नगरमे बहुल श्रावक एवं श्यामा श्राविका आ. पद्मसूरिके उपदेश से जिनधर्मके महारागी बने । ये दोनो दंपतियोने बाल्यकालमे एकांतर ब्रह्मचर्य पालनेका नियम लिया था । इससे आजीवन शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन किया । ये दोनो भरवाड जातिके थे । उन्होने बहुत से भरवाड को जैन बनाये थे । कहा जाता है कि देवता भी उनकी सेवामे हाजिर रहते थे । **(अममचरित्र)**
- रामचंद्रजीने निमित्तिको पूछा कि लंकाको कैसे जीता जाय ? तब निमित्तिधारीने कहा कि लंकामे रही हुई चंद्रप्रभस्वामिकी मूर्ति लाई जाय तो लंकाको जीती जाय । रामने हनुमान से यह मूर्ति मंगवाई। बादमे लंका को जीत ली । अभी यहमूर्ति नासिकमे है ।
- 4096 युगलोके बालोका भरतक्षेत्रको मानवीका एक बाल होता है
- हरेक श्रावक श्राविकाको अपने पुत्र आदिके जन्म एवं विवाह आदिके प्रसंग पर स्वशक्ति के अनुसार अठ्ठाई महोत्सव उद्यापन आदि प्रसंग करने चाहिए । **(श्राद्धविधि)**
- **दस प्रकारके अस्वाध्याय :**

1 हाड	6. चंद्रग्रहण
2. मांस	7. सूर्यग्रहण
3. खून	8. राजामंत्री का मरण
4. मलमूत्र के पास	9. मल्लयुद्धादि संग्राम
5. स्मशान के पास	10. उपाश्रयमे जीव जंतु का नाश

(ठाणांग सूत्र)

- **मनुष्य लोककी छ नरक –**

1. कुग्राम वास	4. क्रोधित स्त्री
2. कुराजाकी सेवा	5. कन्याका बहुत्व
3. कुत्सित भोजन	6. कूंगाल हाल

(श्राद्धगुण विवरण)

- विवेकहर्ष गणी के सदुपदेश से कच्छ नरेश भारमलजीने अमारिप्रर्वतन एवं राजविहार मंदिर भुज नगरमे बंनाया था ।

(शत्रुंजयावतार शिलालेख)

- जिस घरमें पाँच मुकुटबद्ध गृहस्थ हो उसका एक कुल होताहै, एसे 95 कुलोकी एक कुलकोटि होती है । एसे यादवो की 56 कुलकोटि जान लेना । **(नेमनाथ चरित्र)**

उत्कृष्ट तप का समय

- ऋषभदेवसे शीतलनाथ तक - 12 मास तप
  शीतलनाथ से शांतिनाथ तक - 8 मास तप
  शांतिनाथ से महावीर स्वामी तक 6 मास तप जानना **(सेनप्रश्न)**

कौनसा पानी कितने पहर तक चलता है ।

- चावल छासवाले - 8 प्रहर
- जुवार की राब - 12 प्रहर
- छास - 16 प्रहर
- छासकी राब - 12 प्रहर
- पापड वडी - 8 प्रहर
- रायता - 16 प्रहर
- धान्य धोवण -6 घडी
- कढाई में गरम कियाहुआ अनाज-24 प्रहर
- राख का धोवण- 2 घडी

- गौमुत्र -24 प्रहर
- त्रिफला धोवण - 2 प्रहर
- सीरा लापसी - 4 प्रहर
- बुचकनका पानी - 3-4-5 प्रहर
- पकायी हुई दाल - 4 प्रहर
- फलका धोवण - 1 प्रहर
- पकायाहुआ अनाज - 4 प्रहर
- जमाली वीरप्रभुका भानजा था। उसके प्रियदर्शना आदि आठ पत्नियां थी।
- तीर्थंकरका जन्मोत्सव करनेके लिए ढाईद्वीप बाहर रहे हुए असंख्यात सूर्यचंद्र आते है। **(आदिनाथ च.)**
- ओघाका पाय एवं निशिथिया साधु साध्वीको रखना चाहिए। **(ठाणांग सूत्र)**
- ओघाके पाटेमे समवसरन का चित्र बनाने का कहा है। **(आवश्यक सूत्र-निशीथचूर्णि)**
- झोलीकी गांठ पडिलेहण नहिं करनेवालेको प्रायश्चित लगता है।
- साधु साध्वी मच्छरदानी रख सकते है। **(महानिशीथ सूत्र)**
- साधुको दंडासण एवं रजोहरण दोनो रखने चाहिए (महानिशीथ)
- तीर्थंकर गृहस्थावस्थामे फल दीप केसर आदि से जिनपूजा करतां है। **(शत्रुंजय महा.)**
- थावच्चापुत्र के साथ दीक्षा लेनेवाला 1000 पुत्रोके घरोकी रक्षा कृष्ण महाराजने की थी। **(ज्ञातासूत्र)**

- ऋतुभेदसे सूर्यकी किरणे :

• चैत्रमे - 1000	• जेठमे - 14000	• श्रावणमे - 1400
• वैशाखमें - 1300	• आषाढमे - 1500	• भाद्रपदमे - 1400
• मगशरमें- 1050	• पोषमे - 1000	• महामे - 1100
• असोमास - 1600	• कार्तिकमे - 1100	• फाल्गुनदे - 1050

(कल्पसूत्र)

चेटक और कोणिकका महाभयंकर युद्ध

- इस युद्धमे कोणिकके पास 33,000 हाथी, 33000 घोडे और 33 करोड मनुष्य थे ।
- चेटक राजाके पास 57,000 हाथी, 57,000 घोडे और 57 करोड मनुष्य थे। इस युद्धमे पहले दिन 96 लाख और दूसरे दिन 84 लाख मानवो का संहार हुआ था ।
- इस युद्धमें वरुण सारथि सौधर्म देवलोकमे उसका मित्र मानव गतिमे 10,000 एक मछली के गर्भमे बाकी के तिर्यञ्च और नरकमे. वरुण और उसका मित्र महाविदेह मे जन्म लेकर मोक्षमे जायेगा ।
- चेटक राजाको युद्धमे एसा नियम था कि एक दिनमे एक ही बाण छोडना, दस दिनमे दस भाई मरे थे ।
- कोणिकके दश भाई मरकर चौथे नरकमें गये वहां से महा विदेहमे जन्म लेकर मोक्षमें जायेगे । **(भगवती सूत्र-निरयावलिका)**
- त्रिशला माता चौदह स्वप्नमें लक्ष्मीदेवीको देखती है उस लक्ष्मी देवीके चारो और 1 करोड 20 लाख 50120 कमल है । उस सभी कमलोमे देव-देवियोका परिवार है । **(कल्पसूत्र)**
- एक भी अक्षर सिखानेवाले गुरुको मान देता नही है वह सैंकडो बार कुत्तेकी योनिसे पैदा होकर चांडाल कुल में पैदा होता है ।

(उपदेश प्रासाद)

श्रेणिक राजाके दस पौत्रेकी गति

(1) पद्मकुमार - सौधर्म देवलोकमे
(2) महापद्म - इशान "
(3) भद्रकुमार - सनत्कुमार "
(4) सुभद्रकुमार - माहेन्द्र "
(5) पद्मभद्र - ब्रह्मलोक "
(6) पद्मसेणं - लांतक देवलोकमे
(7) पद्मगुल्म - महाशुक्र देवलोकमे
(8) नलिनगुल्म - सहस्त्रार देवलोकमे
(9) आणंद - प्राणत देवलोकमे
(10) नंदन - आनत देवलोकमे

(निरयावलिका सूत्र)

- अग्नि से तप्त सुई से निरंतर भेदाते प्राणीको जितना दुःख होता है उससे हे गौतम आठगुना दुःख गर्भमे रहे हुए जीवको होता है । गर्भमेसे निकलते जीवको योनिरुप यंत्रमे पिलनेसे लाख गुना दुःख होता है । **(उपदेश प्रासाद)**
- सात गांव जलाने से जो पाप होता है, वह पाप हे राजन् ! एक घडा बिना छाना हुआ पानी के उपयोग करने से प्राप्त होता है । **(उपदेश प्रासाद)**
- सुधर्मास्वामीसे लेकर दुप्पहसूरिके शासनकालमे 2004 युग प्रधान और 11,16,000 युग प्रधान जैसे आचार्य होगे । यह युगप्रधान एकावतारी, आगमको जाननेवाले और दो तीन गुणो से युक्त होंगे **(काल सप्ततिका)**
- खारे पानी मे पैदा होनेवाले जीव मीठे पानीके मिश्रण से मर जाते है इसलिए एक दूसरे पानीको मिश्रित नहि करना चहिए **(उपदेश प्रासाद)**
- 36 अंगुल लंबा और 20 अंगुल चौडा वस्त्रका गरना करके उपयोगमे लेना चाहिए । वेद पढे हुए ब्राह्मणो समग्र वस्तुका दान देने से जो हौता है उससे कोटि गुना पुण्य छाने हुए पानी के उपयोग से मिलता

है । (उपदेश प्रासाद)

- छासमे से बाहर निकालनेके बाद अंतमुर्हुर्त समय मे मक्कखन में बहुत जीव पैदा होते है । (उपदेश प्रासाद)
- शरदऋतुमे जो पानी पिया हो, पोषमे जो खाया गया हो और, ज्येष्ठ आषाढमे सोया गया हो वही नीरोगी बनता है। वर्षाऋतुमे लवण, शरद ऋतुमे पानी, हेमंत ऋतुमे गायका दूध, शिशिरऋतुमे - आंवला रस, वसंतऋतुमे घी, ग्रीष्मऋतुमे - गुड अमृत समान है ।

(उपदेश प्रासाद)

- उदयन राजा को अंतिम समयमे धर्मबोध के लिये जो बनावटी साधु बना था, बादमे भाव बदल जाने से विधिपूर्वक दीक्षा लेता है । गिरनार पर जाकर 60 दिनका अनशन करके देवलोकमे गया ।

(कुमारपाल चरित्र)

- पान खाने से असंख्यात जीवोकी विराधना होती है । (श्राद्धविधि)
- अंबड तापसके 700 शिष्य अनसन करके पाँचवे देवलोकमे गये ।

(श्राद्धविधि)

- श्रेणिक राजाका सेचनक हाथी - 7 हाथ ऊँचा, 9 हाथ लंबा, 3 हाथ चौडा, 10 हाथ विस्तारमे 440 लक्षणो से युक्त था ।

(श्राद्धगुण विवरण)

- वीरप्रभुके निर्वाण के बाद 11,16000 राजा जिनेश्वर के प्रति भक्तिवालेहोंगे । (काल सप्ततिका)
- लक्ष्मीका स्थान पूर्व दिशामे, रसोईघर अग्निदिशामें, शयन दक्षिण दिशामे, शस्त्रादिक नैऋत्य दिशामे देवमंदिर ईशान मे, भोजन पश्चिम दिशामे, धान्य संग्रह वायव्य दिशामें रखना चाहिए ।

(श्राद्धगुण विवरण)

- जो पुरुष माता-पिता एवं बडे लोगोको नमस्कार करता है वह तीर्थयात्राका फल पाता है । (श्राद्धगुणविधि)
- **कौन से गच्छकी उत्पत्ति कब हुई ?**

वीर प्रभु के बाद 609 वर्ष मे दिगंबर मत
वीर प्रभुके बाद 1113 वर्षमे अंचलगच्छमत

वीर प्रभुके बाद 1159 वर्षमे पूनम गुच्छ
वीर प्रभुके बाद 1236 वर्षमे सार्द्धपुनमिया मत
वीर प्रभुके बाद 1208 वर्षमे खरतर गच्छमत
वीर प्रभुके बाद 1572 वर्षमे पार्श्वचंद्र गच्छ मत (**अज्ञनतिमिरभा.**)
वीर प्रभुके बाद 1709 वर्षमे ढुंढक मत

- कृष्णको 16,000 रानियो, बलदेव को 8000 रानियो और वसुदेवको 72,000 रानिया थी । (**कृष्ण वासुदेव च.**)
- ऋषभदास कविकृत स्तवन प्रतिक्रमणादिमें बोला जाता है । (**सेन प्र.**)
- चेटक राजाकी सात कन्याए और जमाईयो के नाम :

1 प्रभावती	-	उदायन
2 पद्मावती	-	दधीवाहन
3. मृगावती	-	शतानीक
4. शिवा	-	चंडप्रद्योतन
5. ज्येष्ठ	-	नंदीवर्धन
6. सुज्येष्ठा	-	
7. चेलणा	-	श्रेणिक

(**जैन परं. इति**)

- आठम और चौदस दो दिन वाचना नही दी जाती । (**उत्तराध्यन सू.**)
- बडके टेटे आदि अभक्ष्य अनजानमे खाए जाय तो छट्ठका प्रायश्चित आता है । (**श्राद्धजितकल्प**)
- ब्रह्मचर्य व्रतधारक भीष्मपितामह कुरुक्षेत्रके पास गुफामे आ. भद्रगुप्तसूरि के पास संयम लेकर अनसन करके अच्युत देवलोकमे गये । (**पांडव चरित्र**)
- गौशाला अभीभी अच्चुत देवलोकम है । वहां से च्चवन होकर हरगतिमे अनंत दुःख सहन करके महाविदेह में धनाढय गृहस्थ की दृढप्रतिज्ञ नामका पुत्र होगा । दीक्षा लेकर केवली बनकर मोक्षमें जायेगा । (**महावीर चरित्र**)
- द्वादशांगी और 14 प्रकीर्णक के कुल अक्षर 1 लाख 84 हजार 467 कोडाकोडी 44 लाख 17 हजार 317 करोड, 55 लाख 51 हजार 615

है । **(हरिवंश पुराण)**

- लक्ष्मणा साध्वीजीका सशल्य तप : दो-तीन- चार- पांच उपवास के पारणे पर नीवि 10 साल तक़ उपवासके पारणे भुंजे हुए चणे - दो साल तक । मासखमण 16 साल तक आंबिल - 20 साल तक, इस प्रकार 50 साल तप किया लेकिन शल्य होने से निष्फल हुआ । **(उपदेश-प्रसाद)**
- 363 पाखंडी.....
  180 क्रियावादी, 84 अक्रियावादी, 68 अज्ञानी, 32 वैनयिक । **(आचारंग सूत्र)**
- बलदेवके पांच भव.....
  (1) बलदेव (2) पांचवे देवलोकमे (3) मानव (4) देवलोकमे (5) मनुष्य होकर मोक्षमे **(प्रद्युम्न चरित्र)**
- झूंटन नामका प्राणी जो मनुष्यकी गर्मी से जीता है उस प्राणीको मनुष्य छ महिने तक अपने पास ही रखता है । छ महिनेके बाद उसके बाल काटता है । उसमें से रत्नकंबल बनती है । **(उपदेश पद)**
- श्रावक-श्राविकाको उपधान तप करना जरुरी है ? नमस्कार मंत्रकी वाचना करनेके लिए उपधान तप अवश्य करना चाहिए । जो उपधान तप करता नही है उसे नवकार शुद्ध होता नहीं, और अगले भवमे नवकार इरियावही आदि सूत्र प्राप्त होते नही जो उपधान तपको बहुत मान देता नहीं वह अनंत संसारी होता है । **(महानिशीथ सूत्र अ-3)**
- 700 योजन विस्तारवाला राक्षसद्विप लवण समुद्र है । उसके मध्य भागमे त्रिकुट नामका पर्वत नौ योजन ऊँचा है । वहां सभी विद्याधर रहते है । वहाँ भीमदेवने जो दिव्य हार नवलखा मेघवाहनको दिया था वह हार अजीतनाथ सेलेकर मुनिसुव्रत स्वामी तक किसी भी द्वारा पहना गया नहीं, जब पाताल लंका का स्वामी सुमालीका पुत्र रत्नाश्रव और रत्नाश्रवका पुत्र रावणने यह हार पहना था । इस हारमे रहे हुए रत्नकिरणो से रावण के दस मुख दिखाई पडते उससे दसमुख नाम पडा। **(पद्मचरित्र उ.35)**

- रावण जब विद्या सिद्ध करने परमात्माके पास बैठता है तब 16 अक्षरोंसे निबध्ध ऐसा दस क्रोड हजार मंत्राक्षरका जाप करता है। उससमय रावणको बहुत उपसर्ग होते है फिरभी चकित नही होता इसलिए देवने प्रसन्न होकर रावण को 100 विद्याए दी। (कहा जाता है कि रावणने सच्चा ध्यान लगाया होता तो कर्म-नष्ट करके मोक्षमे जाता) **(पद्मचरित्र उ.-7)**
- यज्ञकी उत्पत्ति कब हुई ?

  रावणके समयमे वसुराजा और पर्वत हुए थे। पर्वतने ही यज्ञमें बकरेकी बलि देनेका प्रारंभ किया। बादमे पर्वत मरके व्यंतरहुआ, ब्राह्मणरुप धारण करके मांस-शराब, जीव हिंसा कैसे की जाय उसके शास्त्र बनाये। जिसके कारण आज तक यज्ञकी पद्धति चालू है। **(पद्मचरित्रउ.-11)**
- 18 वर्षकी उम्रमे रावण समस्त पृथ्वीके सभी देश और राजाओको जीत लेता है। राम -रावण के समयमे जो जो युद्ध हुए है, इस युद्धके बाद बहुत राजा वैराग्य प्राप्त करके संयम ग्रहण किया था। **(पद्मचरित्र उ.-12)**
- केवली भगवान के आगे रावण ऐसी प्रतिज्ञा करता है कि कभी भी सुंदर रुपवाली स्त्रीकी प्रार्थना नही करुँगा और अपनी स्त्रीकी इच्छाके अनुसार बर्ताव करुँगा। कुंभकर्णने ऐसा नियम लिया कि हंमेशा परमात्माकी प्रक्षालपूजा और स्तुति आदि करुंगा।
- हनुमान और विभीषण सम्यकत्व ग्रहण करते है। **(पद्मचरित्र उ-13)**
- कौन से क्षेत्रमे कितना आयुष्य ?

1. हेमवंतमे-1 पल्योपम — शरीरकी उँचाई-2000 धनुष्य
2. हरिवर्षमे-2 पल्योपम — शरीरकी ऊँचाई-4000 धनुष्य
3. देवकुरुमे-3 सागरापम — शरीरकी ऊँचाई-6000 धनुष्य

(पद्मचरित्र- पर्व-102)

- रावणके वंशकी उत्पत्ति अजीतनाथ भ. के समयमे रामके वंशकी

उत्पत्ति शीतलनाथ-भ. के समये (हरिवंशमें) हुई थी ।

(पद्मचरित्र उ. 21)

- दशरथका जन्म होनेके बाद उसके पिता दीक्षा लेते है । दशरथ छोटी उम्रमे राजगादी पर बैठता है । एक बार नारदमुनि दशरथके पास आते है तब दशरथने पूछा कहाँसे आते हो ? नारदने कहा मैं अभी महाविदेहकी पुंडरिक विजयमेसे सीमंधर स्वामीकी दीक्षा देखकर आता हूं। **(पद्म चरित्र उ. 23)**
- भरतने ऐसा अभिग्रह किया था कि जब राम अयोध्यामे आयेंगे तब मै दीक्षा लूंगा । **(पद्मचरित्र-उ.-32)**
- रामचंद्रजीको ऐसा नियम था कि कोई भी जिनालयमे जाकर प्रभुको नमस्कार करता है या अणुव्रत धारण करता है उनको बहुत द्रव्य दान में देते थे । **(पद्मचरित्र-उ.-35)**
- एक शिकारी भोजन के लिए पक्षीको मारता है तब दो खेडूत उस पक्षीको बचाते है उससे पक्षी बच जाता है । वे दोनो किसान कालकरके मुनिसुव्रत स्वामीके शासनमे देशभूषण कुलभूषण नामके मुनि होते है। राम लक्ष्मण भी उनकी धर्म देशना सुनते है ।

(पद्मचरित्र-उ.-339)

- जब हनुमान अंगूठी लेकर सीताके पास जाता है और कहते है तू मेरे खंधे पर बैठ जिससे रामके पास ले जाउँ तब सीताने कहा कि मुझे अन्य पुरुषका स्पर्श न करनेका नियम है फिर बैठनेकी बात ही नही रहती । मुझे तो एकही राम या तो अग्निप्रवेश ।

(पद्मचरित्र उ.53)

अभिमन्युका चक्रावा

किसका कोठा	मुख्य योद्धा	दरवाजे	ध्वज	शिखर	सैनिक	कुलयोद्धा
१ पाषाणका	द्रोणगुरु	100	100	100	100	10,000
२. लोहव्रजका	कृपाचार्य	200	200	200	200	40,000
३. तांबेका	अश्वत्थामा	300	300	300	300	90,000
4. चांदी	कर्ण	400	400	400	400	1,60,000

5. सोनेका	दुर्योधन	500	500	500	500	2,50,000
6. सात धातुका	शलराजा	600	600	600	600	3,60,000
7. गोबर मिट्टीका	जयद्रथ	700	700	700	700	4,90,000

(आगम सार संग्रह)

देवद्रव्य भक्षण के कारण रुद्रदत्त ब्राह्मणके 14 भव

भव	नारकीमें	भव	तिर्यञ्चमें
दूसराभव	7वीमे	तीसराभव	मत्स्य में
चौथाभव	छठीमे	पाँचवाभव	सिंहमे-शेरमे
छठाभव	पांचमीमे	सातवाभव	सांप में
आठवांभव	चोथीनरकमें	नवमां भव	सिंहमें
दशवाभव	तीसरीनरकमे	ग्यारहवा भव	गरुड आदिमे
बारवा भव	दूसरीनरकमे	तेरहवा भव	भुजपरिसर्पमे
चौदवा भव	पहलीनरकमे	पंद्रहवाभव	मनुष्यमे

- यह रुद्रदत्त ब्राह्मण अंधकवृष्णिका जीव था। 15 वे भवमे मनुष्य होकर आलोचना लेकर शुद्ध हुआ। **(द्रव्य सप्ततिका)**

जिन पूजासे होने वाले लाभ

- जिन प्रतिमाकी पूजा करने से संसारका क्षय होती है।

(आवश्यक सूत्र)

- जिम प्रतिमाजी पूजा करनेसे मोक्ष प्राप्ति होती है।

(रायपसेणी सूत्र)

- जिन भक्ति से जीव तीर्थंकर नाम कर्म बांधता है। **(ज्ञातासूत्र)**

देवद्रव्यकी 1000 कांकणीका उपभोग करनेवाले सागर शेठके भव

सागर शेठ सात नरकमे बीचमें तिर्यञ्चका भव करके दोबार उत्पन्न हुआ उसके बाद...

1000 भव - गाडरके 1000 भव - कीडेके 1000 भव - भैंसके
1000 भव - खरगोशके 1000 भव - पृथ्वीकायके 1000 - तितली के

1000 भव – हरण के 1000 भव – अपूकायके 1000 भव – बैलके
1000 भव – गीदड के 1000 भव – तेउकाय के 1000 भव – ऊंटके
1000 भव – बिल्ली के 1000 भव – वायुकायके 1000 भव–खच्चरके
1000 भव – चूहेके 1000 भव – वनस्पति के 1000 भव – घोडेके
1000 भव – नोलियाके 1000 भव – शंखछीपके 1000 भव – हाथीके
1000 भव – कोलके 1000 भव– द्वीपमें 1000भव–मक्खी के
1000 भव – छिपकलीके 1000 भव – मच्छके 1000भव–भ्रमरके
1000 भव – सांपके 1000 भव – कछुएके

अंतमे मनुष्य होकर जो द्रव्य कमाया वह द्रव्य देवद्रव्यमे दिया । बादमे उसको जिननाकर्म बांधा वहां दीक्षा लेकर देवका भव करके महाविदेहमें तीर्थंकर पदवीभोग कर सिद्धपदको प्राप्त किया ।

(द्रव्य-सप्ततिका)

P. पाँचसो (500) की संख्यावाले प्रश्न

1. 500 धनुष्य शरीर प्रमाणवाला प्रथम राजा कौन हुआ ?
(ऋषभदेव)
2. 500 धनुष्य शरीर प्रमाणवाले दो भाई कौन हुए ?
(भरत-बाहुबली)
3. 500 धनुषय शरीर प्रमाणवाली दो बहने कौन हुई ?
(ब्राह्मी-सुंदरी)
4. 500 योजन उँचे विमान कौनसे देवलोकमे ?
(सौधर्म देवलोकमे)
5. 500 योजन ऊँचे महल कौनसे देवलोकमे? **(सौधर्म देवलोकमे)**
6. 500 पाडाओका वध हररोज करनेवाला कौन ?
(काल सौरिक कसाई)
7. 500 योजन लंबी मछली कौन से समुद्रमे ? **(लवण समुद्रमे)**
8. 500 मंत्री कौन से राजा के थे ? **(वीरप्रभुके समय)**
(श्रेणीक राजा)
9. 500 सोनेकी ईंट वस्तुपालने किससे जीत ली थी ?
(खंभातके सदीक से)
10. 500 सागरोपमका पाप कैसे नष्ट होता है ?
(संपूर्ण नवकार गिनसेसे)
11. 500 धनुष्यकी अवगाहनावाले तीर्थंकर वर्तमानमें कहां है ?
(महाविदेहमे)
12. 500 योजन विस्तारवाली नदिया कौनसी ? **(सीता-सीतोदा)**
13. 500 योजन विस्तारवाला कौन सा ? **(पांडुक वन)**
14. 500 योजन तक दुर्गंध कनलोकि की उछलती है ।
(मनुष्य लोककि)
15. 500 मिट्टीके बर्तनोकी दुकान किस श्रावकको थी ?
(सद्दाल पुत्रको)
16. 500 योजन चौडा कौनसा पर्वत है ? **(वक्षस्कार)**

17. 500 सोनामुहर सत्य बात कहनेवालेको कौनसा राजादेता ?
(विक्रमराजा)
18. 500 श्लोक एक ही दिनमे बनानेकी शक्ति किसमें थी ?
(मदन कीर्ति-मुनि दिगंबर)
19. 500 सिंहासन किस मंत्रीने बनाये ? (वस्तुपाल मंत्री)
20. 500 पालखिया किसके संघमे थी ? (वस्तुपालके)
21. 500 ब्राह्मण वेदपाठ कौनसे मंत्रीके मठमे करते थे ?
(वस्तु पालके)
22. 500 पुरुषोके साथ दीक्षा किसभगवानने ली थी ?(सुपार्श्वनाथ)
23. 500 सोनेके जिनालय किस राजाने बनाये ? (सोमदेव राजा)
24. 500 मुमुक्षोके साथ किस आचार्यने संयम लिया था ?
(रत्नप्रभसूरि)
25. 500 श्लोक सिर्फ छ घडीमे कौन आचार्य करते थे ?
(धर्मघोष सूरि)
26. 500 जिनालयोका कारबार गृहस्था वस्थामें किस आचार्य ने किया?
(धर्मघोष सूरि)
27. 500 अर्थ एक श्लोकके किसने किये थे ?
(उपा. लाभ विजयने)
28. 500 चौरोके साथ दीक्षा किसने ली थी ? (हरिदत्तद्रसूरि)
29. 500 साधुओकी वैयावच्च पूर्व भवमें किसने की थी ?
(बाहुबली)
30. 500 कथाएँ कौनसेग्रंथमे आती है ? (प्रबंध पंचशती)
31. 500 घोडे किस राजाने साधर्मिक को भेंट मे दिए ?
(कुमारपाल राजा)
32. 500 गांवोका स्वामी कौनसा राजा ? (श्रीधर राजा)
33. 500 गोदामके मालिक कौन शेठ थे ? (गंधारके रामजी शेठ)
34. 500 क्षत्रियोके साथ संयमी कौन बने थे
(वीरप्रभुके समय) (जमाली)

35. 500 पुत्रोको किस चक्रवर्तीने दीक्षा दिलाई थी ?(**भरत चक्री**)

36. 500 योजन उँचा नारकीको कौन परमाधामी उछालता है? (**अंब**)

37. 500 शिष्य किस आचार्य घाणी मे पिले गये ?

(**स्कंधकाचार्य**)

38. 500 वाहन, रथ, दुकान, घोडे, किन शेठके पास थे ?

(**धन्नाशेठ**)

39. 500 रानियोके साथ कौन राजा वीरप्रभुको वंदन करने गया ?

(**प्रदेशी राजा**)

40. 500 प्रकारके वाद्य कौनसे शेठके पास थे ? (**महेश्वर दत्त**)

41. 500 हाथी दांतके जिनालय किस राजाके संघमे थे ?(**विक्रमराजा**)

42. 500 सोनेके जिनालय किस राजाके संघमे थे ?

(**कृष्णमहाराजा**)

43. 500 भटोके साथ-कौन शेठ शत्रुंजयमे केवली बने ? (**धनशेठ**)

44. 500 चोरोको किसने प्रतिबोध किया था (**जंबुस्वामी**)

45. 500 योजन लंबी (4) अभिषेक शिलाए कहां आई ?

(**पांडुकवनमे**)

46. 500 धनुष्य विस्तारवाले मांडले तमिस गुफा में कितने ? (**49**)

47. 500 हलचालकोको अंतराय पूर्वभवमे किस ने किया ?

(**ढंढणऋषि**)

48. 500 गाडे भरकर पूर्वभवमे किसके जीवने खींचे थे ?

(**शूलपाणी यक्षके**)

49. 500 धनुष्य प्रमाण देहवाले नारकी जीव कौनसी नरकमे ?

(**सातवी**)

50. 500 धनुष्य प्रमाण चौडी पद्मवर वेदिका कहां आई ?

(**जगती पर मध्यमे**)

51. 500 हस्ति भक्षक बौद्ध तापसोको कौन प्रभु के पास ले जाता है?

(**आर्द्रकुमार**)

52. 500 पदस्थ साधुओको श्रेष्ठ वस्त्र किसने दिए थे

(**देसल संघवी**)

53. 500 साधुओको मारनेके लिए पानी मे जहर किसने डाला के ?
(रुद्र क्षुल्लकमुनिने)

54. 500 अखंड आंबिल तपकी आराधना किसने की थी ?
(चंद्रकेवलिने सुलसके भवमे)

55. 500 साधु हररोज किसके घर लेने जाते थे **(वस्तुपालमंत्रीके)**

56. 500 चौर किसके दर्शनसे संयमी बने थे ? **(कपील केवली)**

57. 500 जिनमंदिर किस नगरीमे थे ? **(तक्षशीलामे)**

58. 500 साधुओके साथ शत्रुंजय तीर्थमे किसने मोक्ष पाया था ?
(सेलकाचार्य)

59. 500 धनुष्य प्रमाण ऊँची शाश्वती प्रतिमाए कहां है ?
(तिर्च्छालोकमें)

60. 500 धनुष्य प्रमाण लंबे झरोखे कहां आये ।
(जंबुद्वीपकी जगती पर)

61. 500 ग्रंथके रचयिता कौन ? **(उमास्वातिवाचक)**

62. 500 शिष्य किस गणधरके थे **(गौतम गणधर)**

63. 500 पंडित और प्रधान किसके दरबारमे थे ?
(अकबर बादशाह)

64. 500 सेनाका अधिपति कौन ? **(रामदास कच्छवाह)**

65. 500 चिडियाकी जीभ खानेवाले अकबरको किसने छुडाया ?
(आ. हीरसूरिने)

66. 500 घोडे हंमेशके लिए साथमे रखनेवाला कौन ?
(वीरजी पोरवाल)

67. 500 जिनालय किस आचार्यने उपदेश देकर बनवाया ?
(विजयहीरसूरिजी)

68. 500 साधु किस युग प्रधान आचार्यके थे ? **(स्थूलभद्र सूरि)**

69. 500 मंत्रियो एंव रानि पर क्रोध करके किसने तलवार चलाई ?
(महाराजा अशोक)

70. 500 भाटचारन किस बादशाहकी बिरुदावली बुलाते थे ?
(अकबर बादशाह)

71. 500 विसलप्रिय सिक्के हररोज कौनसे जिनालयमे आते ?
(पालनपुर जिनालयमे)

72. 500 पत्निया होते हुए भी अप्सरा युगल को प्राप्त करने अग्निमे प्रवेश किसने किया ? (कुमारनंदि सोनी)

73. 500 जहाज, गाडे, दुकान, गोकुल किस शेठकेपास थे ?
(महेश्वरदत्त)

74. 500 घर, दुकाने, हजारो से ज्यादा न रखनेका नियम किस राजाने लिया था ? (कुमारपाल राजाने)

75. 500 मांस-पेशीयो किसके शरीरमे होती है ? (पुरुषके)

76. 500 साधुओको पंडित पद जिस आचार्यने दिया ?
(विजय देवसूरिने)

77. 500 गांव बाहड मंत्रीको जिस राजाने भेंटमे दिए थे ?
(सिद्धराजजयसिंह)

78. 500 हल वीर प्रभुके किस श्रावकके पास ? (आनंद श्रावक)

79. 500 द्रमक हररोज कौन दानमे देता था ? (अंबड श्रावक)

80. 500 घोडे और भैंसे किसके संघमे थे ? (गुणराज श्रावकके)

81. 500 उक्कड ढेढ जातिके संघपति किस तीर्थमे गये थे ?
(शत्रुंजयतीर्थ)

82. 500 सुंदर सलाट किसके वहाँ काम करते थे ?
(वस्तुपालमंत्रीके)

83. 500 ब्राह्मण हररोज किसके घर भोजन लेते थे ?
(वस्तुपाल मंत्रीके)

84. 500 मुनियोको निर्दयतासे पिलनेवाला पापी प्रधान कौन ?
(पापी पालक)

85. 500 मंत्री किस राजाके थे ? (नेमिनाथ प्रभुके समयमे)
(सेलक राजर्षि)

86. 500 वर्षके आयुवाले कौनसे श्रावकको 32 पत्नियो थी ?
(जूठल श्रावकको)

87. 500 वर्षकी केवल पर्याय किस साध्वीकी थी ?
(राजीमति साध्वीको)

88. 500 महल अपनी पुत्रवधुये के लिए किसने बनवाया ?
(अदीनशत्रुराजाने)

89. 500 योजन ऊँची मणिपिठीका किस विमान मे है
(सर्वार्थ सिद्ध विमानमे)

90. 500 धनुष्यकी अवगाहनवाले तीर्थंकर परमात्मा कहां विचरते है ?
(महाविदेहमे)

91. 500 गाडे भरकर आहार किसने मंगवाया था ?
(भरतमहाराजाने)

92. 500 सोनामुहर से वेश्याके यहां कौनसी राजकुमारी बिकाई ?
(वसुमती)

93. 500 योजन विस्तारवाला वन कौनसा ? **(नंदनवन)**

94. 500 हल (खेती के लिए) रखनेकी छुट्टी किस श्रावक को थी ?
(आनंद श्रावक)

95. 500 गाडे किस तीर्थंकरके जीवको पूर्वभवमे थे ?
(ऋषभदेव प्रभुको धन्ना सार्थवाहनाके भवमे)

96. 500 गाडे नदीकी बाढमे से पार उतारनेवाले बैल मृतप्राय कौनसे गाँवमे हुआ था ? **(वर्धमान गांवमे)**

97. 500 गाडे (यात्राके लिए) रखनेकी छुट्टि किस श्रावकको थी ?
(आनंद श्रावक)

98. 500 अखंड आंबिल की आराधना पूर्वभवमे किस सतीने की थी ?
(दमयंतीने)

99. 500 वर्ष तकका काल कुमारावस्थामे किस चक्रवर्तीका था ?
(महापद्मचक्री)

100. 500 साल तकका काल मांडलिकवर्षमे किस चक्रवर्तीका था ?
(महापद्मचक्री)

101. 500 साल तकका दिग्विजय काल किस चक्रवर्ती का था ?
(सुभुमचकी)

102. 500 योजन उँचाई कौनसे विमानकी है ? **(पालक विमान)**

103. 500 पत्नियो कौनसे चक्रवर्तीको पूर्वभवमे थी ? **(सनत्कुमार)**

104. 500 योजन उँचा इशानका महल कहां आया है ?

(भद्रशाल वनमे)

105. 500 शिष्योके गुरु जिन्होने प्रमादका सेवन किया था ?

(शेलक राजर्षि)

106. 500 शिष्योके गुरु जिनके आठ कर्मोका संशय था ?

(अग्निभूति)

107. 500 शिष्योके गुरु दशवैकालिक सूत्रके रचयिता ?

(शय्यंभवसूरि)

108. 500शिष्योके गुरु को अभव्य आचार्य थे ? **(अंगारमर्दकाचार्य)**

109. 500 शिष्योके गुरु जिनके शिष्य बहोत दुर्बल थे ?

(गर्गाचार्य)

110. 500 राजकुमारोके साथ नाटक करते किसको केवलज्ञान हुआ ?

(अषाढाभूति)

111. 500बडी उम्रवाले साधुओको छोटी उम्रवाले कौनसे साधुने पढाया था? **(वज्रस्वामी)**

112. 500 शिष्योके साथ कौनसे गुरु मोक्षमे गये ? **(सेलकराजर्षि)**

113. 500 साध्वी कौनसे तीर्थंकर के साथ मोक्षमे गई ? **(मल्लीनाथ)**

114. 500 भाईयोने अेक साथ कौनसे तीर्थंकरके पास दीक्षा लीथी ?

(ऋषभदेव)

115. 500 चौदह पूर्वधर साधु कौनसे तीर्थंकरके परिवारमे थे ?

(मुनिसुव्रतस्वामी)

116. 500 मनः पर्यवज्ञानी कौनसे तीर्थंकरके परिवारमे थे ?

(महावीर प्रभुके)

117. 500 देव मंत्री कौनसे इन्द्रके होते है ? **(शकेन्द्र महाराजा)**

118. 500 धनुष्यकी उवगाहनवाले एक समयमे कितने सिद्ध होते है ?

(दो)

119. 500 शिष्योके जमालीगुरु शुद्ध चरित्र पालने पर भी किल्बीषक देव

क्यो बना ? **(उत्सूत्र प्ररुपना से)**

120. 500 शिष्योके गुरु जो विमलनाथ भ. के प्रशिष्य थे ?
(धर्मघोषमुनि)

121. 500 शिष्योके गुरु जिनके सभी शिष्य अविनयंवत थे ?
(कालिकाचार्य)

122. 500 शिष्योके गुरु जिन्होने प्रज्ञा परिषह सहा था ?
(कालिकाचार्य)

123. 500 साधु कौनसे आचार्यके पास श्रुत पढने नेपाल गये थे ?
(भद्रबाहुस्वामी)

124. 500 सैनिकोको कौनसे राजाने अपने पुत्र मुनि होने से रक्षणके लिए भेजे थे ? **(खंधक ऋषिके पिताने)**

125. 500 द्वारपाल कौनसे राजाने अपना पुत्र भाग न जाय इसलिए रखे थे? **(आर्द्रक राजाने)**

126. 500 अभ्यंतर परिषद के देव कौनसे इन्द्रके होते है ?
(सहस्त्रेन्द्र)

127. 500 मध्यम परिषदके देव कौनसे इन्द्रके होते है ? **(प्राणतेन्द्र)**

128. 500 बाह्य परिषदके देव कौनसे इन्द्रके होते है ? **(अच्युतेन्द्र)**

129. 500 ब्रह्यपरिषदकी देविया कौनसे इन्द्रकी होती है **(शक्रेन्द्र)**

130. 500 योजनकी चौडाइवाला पद्म द्रह(कुंड) कहां आया हुआ है ?
(चुल्ल हिमवंत पर्वत)

131. 500 योजनका चौडा पुंडरिक द्रह कहां आया है ? **(शिखरी पर्वत)**

132. 500 योजन तकका अवधि ज्ञान किस श्रावक को हुआ था ?
(आनंद श्रावक)

133. 500 योजन उँचा इन्द्र ध्वजवाला विमानमे बैठकर कौन इन्द्र प्रभुका जन्मोत्सव करता है ? **(चमरेन्द्र)**

134. 500 धनुष्य चौडा, लंबा शाश्वता सिंहासन कहा है ? **(पंडगवनमें)**

135. 500 मंत्रियोके नायक जिनके नीचे 1,71,000 गांव थे ?
(अभयकुमार)

136. 500 शिष्योने कौनसे आचार्यकी आशातना की थी ?

(गर्गाचार्य)

137. 500 शिष्योके गुरु जो पार्श्वनाथजी के गणधर थे ?

(केशीगणधर)

138. 500 चोरोका सरदार जो भागते भागते भगवान हो गया ?

(चिलाती चोर)

139. 500 भैंस बराबर किसका बल होता है ? **(एक हाथी का)**

140. 500 हाथी बराबर किसका बल होता है ? **(एक सिंहका)**

141. 500 तापस जो 1 उपवासकी तपस्या करते उनके गुरु कौन ?

(कोडिनी तापस)

142. 500 तापस जो 2 उपवासकी तपस्या करते उनके गुरु कौन ?

(दिन्नतापस)

143. 500 तापस जो 3 उपवासकी तपस्या करते उनके गुरु कौन ?

(सेवाल तापस)

144. 500 धनुष्यकी अवगाहना वाले हाथी कहां होते है ?

(महाविदेहमे)

145. 500 शिष्योके गुरु कौन जिनको पद्मावती देवी प्रसन्न थी ?

(विद्यासागर सूरि)

146. 500 सुथार किसके संघमे साथमे थे ? **(वस्तुपालमंत्रीके)**

147. 500 देव विमानोका स्वामी कौन जिसने वीरप्रभुके पास दीक्षाली थी ? **(धन्ना शेठ)**

148. 500 देवता एक साथ कौनसे घंटको बजाते है ?**(सुघोषा घंट)**

149. 500 तापसोको प्रतिबोध जैनी दीक्षा किसने दी थी ?

(समितसूरिने)

150. 500 शिष्योके गुरु सांडेर गच्छीय के कौनसे आचार्य थे ?

(ईश्वरसूरि)

151. 500 पंडित किस राजाकी सभामे आते थे ? **(भोजराजा)**

152. 500 बडे अन्नक्षेत्र किसने करवाये थे ? **(भरतचक्री)**

153. 500 हाथ उँचा खंभको लीलामात्रमे किसने उखाड दिया था ? (नलराजाने)

154. 500 तापसो को किस महासतीने बोध दिया था ? (दमंयती)

155. 500 योजन ऊँचे कौनसा विमान होता है ? (पालकविमान)

156. 500 आचार्य किसके संघमे थे ? (पेथडमंत्री)

157. 500 पत्निया किस राजाके थी रघुवंशमे ? (दशरथ राजा)

158. 500 योजन उँचे किला किस देवका है ? (सूर्याभदेव)

159. 500 धनुष्य देहप्रमाणवाले तीर्थंकर अभी कहां विचरते है ? (महाविदेहमे)

160. 500 परिवारोको किसने प्रतिबोध दिया था ? (विजयदेवसूरिने)

161. 500 पोषधशालाए किसमंत्रीने बंधवाई थी ? (वस्तुपालमंत्री)

162. 500 पाठशालाएँ किस मंत्रीने बंधवाई थी ? (वस्तुपालमंत्री)

163. 500 उपाश्रय किस मंत्रीने बंधवाये थे ? (वस्तुपालमंत्री)

164. 500 धनुष्यका कायावला मत्स्य कौन हुआ था ? (सागरशेठ)

165. 500 जहाजको किसने तैराये थे ? (श्रीपालरजा)

166. 500 उच्च कोटिके घोडे भीमदेव राजाने किसको दिये थे ? (विमलशाह)

167. 500 सालतकका पर्याय किसका था ? (रहनेमी और राजीमति का)

168. 500 हाथी, उँट और घोडे किसके संघमे थे ? (सं.हैमराज)

169. 500 गाडे किसके संघमे थे ? (सं.देवराज)

170. 500 स्त्री-पुरुषोको दीक्षा किसने दिलवाई थी ? (हेमविमलसूरिने)

171. 500 मुमुक्षोके साथ किस विद्यार्थीने संयम ग्रहण किया था ? (रत्नचूड विद्याघर)

172. 500 धनुष्य लंबे सिंहासन पर किसका जन्माभिषेक होता है ? (जिनेश्वरका)

173. 500 योजन ऊँची 11 कुट कौनसे पर्वत पर है ? (चुल्ल हिमंवत)

174. 500 योजन चौडा कौनसा द्रह है ? **(पद्मद्रह)**

175. 500 गांवोका अधिकार किस मंत्रीके पास था ?

(विजयवर्धनमंत्री)

176. 500 गाडे किसके संघमे थे ? **(दिल्लीके रथपति)**

177. 500 पुरुषोको एक ही साथ किसने दीक्षा दी ? **(जिनदत्तसूरि)**

178. 500 मुनियोके साथ किस भगवानने निर्वाण पद पाया ?

(मल्लीनाथ)

179. 500 हल गाडे किस श्रावकके परिग्रह प्रमाण व्रतमे थे ?

(आनंद श्रावक)

180. 500 वाहन व्यापारके लिए किसके पास थे ? **(समुद्रदत्त)**

181. 500 सालका आयुष्य पूर्ण करके दूसरे नरकमे कौन गया ?

(गोत्रासपुत्र)

182. 500 सौनेया देकर एक गाथा किसने ग्रहण की थी ?

(सागरचंद्र)

183. 500 सौनेया उत्पन करनेकी शक्ति किसमे थी ? **(वयरसेन)**

184. 500 सवाल जवाब कौनसे प्रश्न पर हुए थे ?

(नारी देह मोक्ष नही)

185. 500 पत्नियां किस तीर्थंकरके पूर्वभवमे थी ? **(मल्लीनाथभव)**

186. 500 पत्नियोका त्याग करके 12 वर्षका संयम पालकर मोक्ष कोन गया ? **(सारणकुमार)**

187. 500 पत्नियोका पति जिसने सुव्रत अणगारको वहोराया था ? **(सुबाहु)**

188. 500 पत्नियोका पति जिसने पूर्वभवमे युगबाह तीर्थंकरको वहोराया था ? **(भद्रनंदी)**

189. 500 पत्नियोका पति जो एक पत्नीमे आसक्त बनकर सभीपत्नी को मारडाली ? **(सिंहसेनराजा)**

190. 500 रानिया किस राजाके थी जिसने वीरप्रभुके पास दीक्षा ली ?

(दशार्ण भद्रराजा)

191. 500 सुवर्ण मुहरो से हर कन्याको खरीद कर 500 कन्याका स्वामी कौन बना ? **(कुमारनंदी सोनी)**

192. 500 रथमे 500 रानियोको बिठाकर वीरप्रभुको वंदन के लिए कौन गया ? **(दशार्णभद्रराजा)**

193. 500 वर्षकी केवल पर्याय कौनसे देवर भोजाईकी थी ?
(रहनेमि-राजीमती)

194. 500 वर्षके आयुष्यवाले किस श्रावकने उनकी पत्नियोको जलाई ?
(जुठल श्रावक)

195. 500 गांव अपनी कुमारीके साथ शतानीक राजाने किसको दिया था ?
(धन्यकुमारने)

196. 500 गांव पुरस्कारमे मिलने पर भी किस राजाने लिए नही लिये ?
(नलराजा)

197. 500 राजकुमारोके साथ मुनिसुव्रत के पास कौन संयमी बना ?
(स्कंधकुमार)

198. 500 श्लोक एक रातमे किसने कंठस्थ किये थे ?
(धर्मसिंहमुनि)

199. 500 चोरोका सेनापति कौन जिसको 8 पत्नियां थी ? **(अभग्गसेन)**

200. 500 चोरोका प्रमुख कौन जिसने कपील केवलीको नाचने गानेके लिए कहा था ? **(बलभद्र)**

201. 500 शिष्योका गुरु कौन जो धर्मकी खातिर शहीद हो गये ?
(कालकाचार्य दूसरे)

202. 500 धनुष्यका अंतर ज्योतिषी देंवोमे किस देवका होता है ?
(तारादेवका)

203. 500 सोनामुहर गुरु भगवंतके सामने गहुँली पर किसने रखी थी ?
(सोमदेव श्रावक)

204. 500 मील ऊँचा चांदी से निर्मित किसका विमान है ?
(शुक्रका)

205. 500 मील विस्तारवाला किसका विमान है ? **(मंगलका)**

206. 500 पत्नियों छ भाषाओको जाननेवाली किस राजाको थी ?
(शालीवाहन)

207. 500 शिष्योके गुरु कौन जो अनार्य देशमे जन्मे थे ?
(सुमंगलाचार्य)

208. 500 टके देकर मुस्लिम से प्रतिमा किसने प्राप्त की **(मेघाशाह)**

209. 500 धनुष्यकी अवगहना वाले मानव अभी कहा है ?
(महाविदेहमे)

210. 500 धनुष्यकी अवगाहनवाले जीव कौनसे आरेमे होते है ?
(चौथे आरमे)

211. 500 चौदहपूर्वी किस भगवानके थे **(मुनिसुव्रत स्वामी)**

212. 500 मन:पर्यवज्ञानी किस तीर्थंकर के थे ? **(वीरप्रभु)**

213. 500 योजन मूलमे चौडे कौनसे पर्वत है ? **(गजदंतापर्वत)**

214. 500 योजन पूर्व-पश्चिम लंबे कौन पर्वत है ? **(16 वक्षस्कार)**

215. 500 योजन ऊँचे वक्षस्कार पर्वत कैसे है ? **(रत्नमय)**

216. 500 योजन ऊँचे शिखर किस पवर्तके है ? **(16 वक्षस्कार)**

217. 500 योजन ऊँची 9 कूट किस पर्वतकी है ? **(नीलवंत)**

218. 500 योजन दक्षिण-उत्तर चौडा कौनसा द्रह है ? **(पुंडरिकद्रह)**

219. 500 शिष्योके गुरुकौन ? जो इर्ष्याके कारण कालकरके नाग बने ?
(नयशीलसूरि)

220. 500 साधुओके साथ विचरते किस आचार्यने 'छ'विगई का त्यागकिया ? **(सोमसुंदरसूरि)**

221. 500 मंत्री देवलोक किसको होते है ? **(इन्द्रमहाराजा)**

222. 500 आंबिलके आराधक कौन ? जो शंखेश्वर तीर्थके अधिष्ठायक देव हुए ? **(वर्धमानसूरि)**

223. 500 सालसे अधिक पल्योपम जितना उत्कृष्ट किस देवी का आयुष्य है ? **(सूर्यकी देवी)**

224. 500 घरके मनुष्योको किसने प्रतिबोधा था कोरंट गाँवमे ?
(देवसूरिने)

225. 500 घोडे लेकर रातमे पाटण से कौनसा मंत्री निकला था ?
(विमलमंत्री)

226. 500 पंक्तिमे सोनेके बर्तन रखकर संघकी भक्ति किसने की ?
(आभूसंघवी)

227. 500 पंक्तिमे चांदीके बर्तन रखकर संघकी भक्ति किसने की ?
(आभूसंघवी)

228. 500 शिष्य किस गणधरके शिष्य थे ? **(शुभदत्त गणधर)**

229. 500 बार पुंडरिक कुंडरिक अध्ययनहररोज स्वाध्याय पूर्वभवमे किसने किया था ? **(वज्रकुमार)**

230. 500 चोर चोरी करने किसके घर आये थे ?
(जंबुस्वामी के)

231. 500 पौषध हीर सूरिजीकी निश्रामे किस नगरमे होता था ?
(दीव बंदर)

232. 500 दुकान मकान-वाहन गाडे किसके परिग्रह व्रतमे थे ?
(कूबेरशेठ)

233. 500 राजपुत्रोके साथ संयम ग्रहण करके पार्श्वनाथ का गणधर कौन हुआ ? **(सोमराजकुमार)**

234. 500 पंडितो का राजा कौन जिसने बहुश्रुत पदकी आराधना की ?
(महेन्द्रपाल)

235. 500 श्रेष्टीपुत्रोके साथ किसने दीक्षाली जो तीर्थंकरहोगा ?
(वीरभद्र)

236. 500 रोहिणी आदि महाविद्या 14 पूर्वके कौनसे पूर्वमे आती है ?
(विद्याप्रवाद)

237. 500 धनुष्य प्रमाण देहमान किसका है ? **(20 विहरमान)**

238. 500 मुमुक्षो के साथ किस गणधरने दीक्षाली ? **(केशीगणधर)**

239. 500 मुनियोके साथ कौन आचार्य तैलंग देशकी और गये ?
(वैकुंठाचार्य)

240. 500 मुनियोके साथ कौन आचार्य सिंध सौवीरकी और गये थे ?
(गर्गाचार्य)

241. 500 मुनियोके साथ कौन-आचार्य काशी कौशलकी और गये थे ?
(यवाचार्य)

242. 500 मुनियोके साथ कौन आचार्य अंग वंग कलींग की और गये ?
(अर्हन्नाचार्य)

243. 500 मुनियोके साथ कौन आचार्य मथुराकी ओर गये ?
(काश्यपाचार्य)

244. 500 मुनियोके साथ कौन आचार्य अवन्तीकी ओर गये ?
(शिवाचार्य)

245. 500 मुनियोके साथ कौन आचार्य कोंकणकी और गये ?
(पालकाचार्य)

246. 500 अंतेउरी छोडकर जैन दीक्षा किसने ली थी ? **(महाबलराजा)**

247. 500 शिष्यके साथ नेपाल देशमे कौन गये थे ?
(भद्रबाहुस्वामी)

248. 500 शिष्योके साथ पांचाल देशमे कौन गये ? **(देवगुप्तसूरि)**

249. 500 तापसो को प्रतिबोधकर किसने दीक्षालीथी ?
(आचार्यसमितसूरि)

250. 500 राजकुमारोके साथ नाटक करते 500 राजकुमारोके साथ दीक्षा किसने लीथी ? **(अषाढाभूति)**

251. 500 क्षत्रियोके साथ नाटक करते 500 राजकुमारके साथ दीक्षा किसने ली थी ? **(विश्वकर्मा)**

252. 500 धनुष्य लंबी चौडी मणिपीठिका कहां है ? **(जंबुक्षपर)**

253. 500 धनुष्य प्रमाणवाली 108 जिन प्रतिमाए कहां है ?
(मणिपीठिका पर)

254. 500 गच्छमे कौन साधु घूमघूम कर वापस आये थे ?
(निम्बकसाधु)

255. 500 सोनामुहर जुगारमे कौन हारा था ? **(कुन्द)**

256. 500 पंख तोते के किसने खीचे थे ? **(रत्नवतीने)**

257. 500 कहानिया रत्नवतीको किसने कही थी ? **(तोताने)**

258. 500 दिनोका आयुष्य बाकी है एसा सुनकर दिक्षा किसने ली ?
(सिंहकेसरी)

259. 500 मुनियोके साथ कौन आचार्य पांडवोको प्रतिबोध करने गये ?
(धर्मघोषसूरि)

260. 500 राजपुत्रोके साथ मथुरा पर चढाई करने कौन गया था ?
(कालकुंवर)

261. 500 गांवोका अधिपति पूर्वभवमे कौन था ? **(मृगापुत्र)**

262. 500 योजन चौडी अंतरनदी कहां है ? **(पुष्कारार्ध)**

263. 500 हाथियोके बच्चोसे घिरा हुआ सूर स्वप्नमे किसने देखा था ?
(विजयसेन सूरिके शिष्यने)

264. 500 मुनियोकी आचार्य पदवी किस तीर्थमे हुई थी ?
(भोरोल तीर्थ)

265. 500 साधु किस तीर्थकी प्रतिष्ठाके समय हाजर थे ?
(राणकपुर)

266. 500 साधुओको वंदन वेयावच्च करनेके बाद ही आहार पानी करना एसा अभिग्रह छ महिने तक किसने पाला था ? **(गुणागर)**

267. 500 रानियो को पूर्वभवमे किसने मारी थी ? **(गंगदत्त)**

268. 500 तापसोका स्वामी पूर्वभवमे कौन हुआ था ?
(चंडकौशिकनाग)

1000 की संख्यावाले ज्ञान प्रश्न

1 1000 उपवासका पुण्य कैसे प्राप्त होता है ?**(परमात्माको देखते)**

2 1000 पुरुषोके साथ कितने तीर्थंकरोने दीक्षाली ? **(12 तीर्थंकर)**

3 1000 वर्ष छद्मस्थकाल कौनसे तीर्थंका था ?**(ऋषभदेव प्रभुका)**

4 1000 वर्षका आयुष्य किस नारदका था ? **(उन्नतमुखका)**

5 1000 गाँवोका दान पुजारीको किस राजाने दिया था ?
(विक्रम राजाने)

6 1000 वर्ष तक तप करनेका फल प्राप्त कब होता है
(प्रभुको विलनेपन करनेसे)

7 1000 थंभेवाला जिनालय शत्रुंजय पर किसने बनाया था ?
(रणवीर राजाने)

8 1000 द्रम वस्तुपाल मंत्रीने किसके पदमहोत्सवमे खर्च किए ?
(बालचंद्रसूरि)

9 1000 श्लोंक बचपनमे कौन सूरिने कंठस्थ करते थे ?
(मुनिसुंदरसूरि)

10 1000 अखंडआंबिल तपकी आराधना किसने की थी ?
(चंद्रकेवली की पूर्वभवकी पत्नी भद्राने)

11 1000 तोला मणिरत्नका परिग्रह परिमाण व्रत किस को था ?
(कुमारपाल राजा)

12 1000 बंदिवानोको बंदिखानेमे से किसने छुडवाये ?
(सिंधावा सराफने)

13 1000 गायकोको शत्रुंजय उद्धारके समय किसने इकठ्ठे किये थे ?
(समराशा संघवीने)

14 1000 सूर्योके नामका स्त्रोत हर रविवार को कौन सुनता ?
(अकबर बादशाह)

15 1000 टांक द्रव्य सिर्फ एक ध्रुवपदसे खुश होकर दानमे किसने दिया ? **(समरसिंह)**

16 1000 राजपुत्रियोके साथ किसने दीक्षा ली ? **(सुदर्शना)**

17 1000 योजन लंबे मच्छ कौनसे समुद्रमे होते है ?
(स्वयंभूरमण समुद्र)

18 1000 पल्योपम जितना पाप कब नष्ट होता है ?
(शत्रुंजयके ध्यानसे)

19 1000 रसोइये किसके संघमे थे ? **(वस्तुपालमंत्रीके)**

20 1000 श्लोक कौनसे आचार्य कंठस्थ करते थे ? **(बप्पभट्टीसूरि)**

21 1000 घोडेके स्वामी किसके संघमे थे ? **(झांझण मंत्री)**

22 1000 लुहारकिसके संघमे थे ? **(वस्तुपालमंत्री)**

23 1000 मुनिवरोके साथ कौनसे भगवानने मोक्षपद प्राप्त किया ?
(संभवनाथ)

24 1000 श्रावक भोजन कर सके इतनी रसोईमे 8000 श्रावको को

भोजन करानेकी मंत्र शक्तिका किसने उपयोग किया ?

(उपा. देवचंद्रजी)

25 1000 गायोको ब्राह्मणोको किसने दान मे दी ? **(वस्तुपालमंत्री)**

26 1000 खंभेवाला उपाश्रय किस राजाने बनाया था ?**(आमराजाने)**

27 1000 भिक्षुक ब्राह्मण हररोज किनके यहां भोजन लेते थे ?

(वस्तुपाल मंत्री)

28 1000 श्रावकोके साथ किस राजाने गिरनार तीर्थ यात्रा करनेका अभिग्रह किया था ? **(आमराजाने)**

29 1000 बार संघपूजाकिसने की थी ? **(वस्तुपाल मंत्री)**

30 1000 दान शालाए किसने खोली थी ? **(वस्तुपाल मंत्री)**

31 1000 सिंहासन महात्मा के लिए किसने बनवाया ?

(वस्तुपाल मंत्री)

32 1000 बार चंडालकुलमे जन्म कब लेना पडता है ?

(होली मे लकडे डालने से)

33 1000 बार म्लेच्छकुल मे कब उत्पन्न होना पडता है ?

(होलीका व्रत करने से)

34 1000 आचार्योको (षड्दर्शनवाले) किस राजाने इक्कट्ठे किए थे ?

(भोजराजा)

35 1000 मुनिवरोके साथ शत्रुंजय तीर्थ पर किसने मोक्ष पाया था ?

(भरत)

36 1000 मुनिवरोके साथ थावच्चा गणधर कौनसे तीर्थ पर मोक्षमे गये?

(शत्रुंजय)

37 1000 मुनिवरो के साथ शत्रुंजय तीर्थ पर कौन मोक्ष में गये ?

(थावच्चा पुत्र)

38 1000 रानिया किस राजाको थी ? आचारप्रदीप **(सहस्त्रवीर्य)**

39 1000 पुत्र किस राजाके थे ? आचारप्रदीप **(सरहस्त्रवीर्य)**

40 1000 मंत्री किस राजाका थे ? आचारप्रदीप **(सहस्त्रवीर्य)**

41 1000 योजन उचा कौनसा ध्वज होता है देवलोकमें **(महेन्द्रध्वज)**

42 1000 खंभेवाला महल किस वासुदेवका था ? **(रावणका)**

43 1000 खंभे किसके जिनालयमे थे (रावणके)
44 1000 खंभे किसके जिनालये थे ? (विभीषण)
45 1000 स्त्रियोके साथ किसने दीक्षा ली थी ?
(मुनिसुव्रतके समय) हनुमानने)
46 1000 घोडे किस राजाको कुंतीकी शादीके समय भेंटमे मिले ?
(पांडु राजाको)
47 1000 योजन जाडे पाताल कलश कहां है ? (पद्मद्रह)
48 1000 साल वीरप्रभुके बाद किस श्रुतका विच्छेद हुआ
(पूर्वश्रुतका)
49 1000 मनः पर्यवज्ञानी किसके थे ? (नेमिनाथ)
50 1000 साधु किन आचार्य की आज्ञामे थे ? (जिनदत्तसूरि)
51 1000 सालकी आयुष्य किस भगवान का था ? (नेमनाथकी)
52 1000 वर्षमे आहारकी इच्छा किस देवको होती है
(1 सागरोपम आयुष्यवाले)
53 1000 वर्ष का आयुष्य किन प्राणियो का होता है ?
(सिंह, मत्स्य)
54 1000 कुंड किस लोकेमें है ? (तिर्च्छालोकमे)
55 1000 सूर्यकी किरणे किस मासमे होती है ? (पोष मासमे)
56 1000 मील विस्तार वाला विमान किसका है ? (शुक्रका)
57 1000 मील से कुछ कम विस्तारवाला किसका विमान ?
(गुरुका)
58 1000 हाथी परिग्रह परिमाण व्रतमे किस राजाके थे ?
(कुमारपाल)
59 1000 श्लोकेप्रमाण हेमचंद्राचार्यने कौनसा ग्रंथ लिखा था ?
(वेदांकुश)
60 1000 चौदहपूर्वी किस भगवानके थे ? (अनंतनाथ)
61 1000 के परिवार के साथ किस भगवानने मोक्ष प्राप्त किया
(कुथुंनाथ-अरनाथ)
62 1000 वादी किस भगवानके थे ? (नेमिनाथ)

63 1000 के परिवारके साथ किसभगवानने निर्वाण पाया ?
(मुनिसुव्रत-नेमिनाथ)

64 1000 अवधिज्ञानी किस तीर्थंकरके थे ? **(पार्श्वनाथ)**

65 1000 केवली किस तीर्थंकरके थे **(पार्श्वनाथ)**

66 1000 योजन पूर्वपश्चिम विस्तारवाला कौनसा द्रह है ?
(पुंडरिक द्रह)

67 1000 केवल जाडी-ठीकरी कौनसे कलशोकी है ?
(पाताल कलश)

68 1000 योजन गहरे - चौडे कौनसे कलश है ?
(4 छोटेपाताल कलश)

69 1000 मानवोका संघ किसकी परीक्षाके लिए थराद आया था ?
(आभूसंघवी)

70 1000 उपवासका प्रायश्चित कब आता है ?
(गर्भहत्या करने से)

71 1000 मुनिवरोके साथ शत्रुंजय पर कौन मोक्ष में गये ?
(सुभद्रमुनि)

72 1000 के परिवारोके साथ शत्रुंजय पर किसने मोक्ष पाया
(शुक्रपरिव्राजक)

73 1000 वर्ष से अधिक पल्योपम जितना आयुष्य उत्कृष्टसे किन देवोका
(सूर्यदेवोका)

74 1000 सागरोपम जितनी काय स्थिति किसकी ? **(पंचेन्द्रिय)**

75 1000 योजन ऊँचा लवण समुद्रमे कौनसाद्वीप है ? **(गौतमद्वीप)**

76 1000 व्यापारियोके स्वामी कौन शेठ थे ? **(कार्तिक शेठ)**

77 1000 व्यापारियोके साथ मुनिसुव्रत पास किसने दीक्षा ली थी ?
(कार्तिक शेठ)

78 1000 यक्षोसे अधिष्ठित 14 रत्न किसके होते है ? **(चक्रवर्तीके)**

79 1000 वर्ष के नरकका आयुष्य कब तूटता है **(पोरिसीकरनेसे)**

80 1000 करोड वर्षके नरकका आयुष्य कब तुटता है ?
(आंबिल करनेसे)

81 1000 याज्ञिक शिष्योके साथ संवेगी दीक्षा किसने स्वीकार कीया था ? **(लोहित्याचार्य)**

82 1000 हाथी किस श्रावकको परिग्रह परिमाण विरमण व्रतमे थे **(कुबेरशेठ)**

83 1000 वर्षका घोर तप करके चारित्र पालनेवाला कौन था **(कुंडरिक मुनि)**

84 1000 वर्षतक छद्मस्थकाल किसका होता है **(20 विहरमानका)**

85 1000 साधु-साध्वियो को दीक्षा किसने दी थी ? **(यक्षदेवसूरिने)**

86 1000 गज लंबी घोडे दौडानेके लिए जगह किसके पास थी ? **(चंद्रगुप्त राजा)**

87 1000 मूर्तियोकी अंजनशलाका किसने करवाई थी ? **(कक्क सूरिने)**

88 1000 चारकोणे वाली पीठीका देवलोकमे उत्तर दिक्षामे कौनसी सभामें है ? **(सुधर्मा सभामे)**

89 1000 वर्ष दुष्कर तप पूर्वभवमे किसने किया था **(त्रिपृष्ठ वासुदेव)**

90 1000 पागल हाथी किनके चरणोदकसे ठीक हुए थे ? **(क्षमाऋषि)**

91 1000 धनुष्य चौडा सोनेका जिनालय शत्रुंजय पर किसने बनाया था? **(भरतचक्री)**

92 1000 योजन उँचाई किसकी होती है ? **(प्रथम नरकके 16 पटलकी)**

93 1000 योजन ऊँचे और चौडे वक्षस्कार पर्वत कहां है ? **(धातकी खंडमे)**

94 1000 कंचनगिरि पर्वत कहाँ है ? **(ढाई द्वीपमे)**

95 1000 योजन गहरा कौनसा समुद्र है ? **(कालोदधि)**

96 1000 हाथियोका स्वामी कौनसा राजा था ? **(धारामगरीका सिंधुल राजा)**

97 1000 रानियोके स्वामी बादके भवमे कौन हुए **(गंगदत्त)**

98 1000 योजन जाडे पाताल कलश कहां है ? **(लवण समुद्रमे)**

99 1000 वर्ष वीरप्रभुके बाद किस श्रुतका विच्छेद हुआ (पूर्वश्रृत)
100 1000 देवद्रव्यकी कांकणी उपभोग किस किया था ?
(सागर शेठने)

पद्मावती नामके प्रश्न

1 पद्मावती कौनसे बुद्धके माताजी थे ? (करकंडु)
2 पद्मावती कौनसे विहरमान तीर्थंकर प्रभुके माताजी थे ?
(श्रीचंद्रानन)
3 पद्मावती कौनसे तीर्थंकर प्रभुके माताजी थे ?
(श्रीमुनिसुव्रतस्वामी)
4 पद्मावती किस बलदेव के एक पुत्र के पूर्वभवमे माता थे ?
(बलभद्र पुत्र निषधकुमारके)
5 पद्मावती किस चक्रवर्तीके पूर्वभवमे माता थे ? (जय चक्रवर्ती)
6 पद्मावती श्रेणिक राजाके किस पौत्रके माता थी ? (पद्मकुमार)
7 पद्मावती किस विहरमान तीर्थंकर प्रभुकी पत्नी थी ?
(श्रीदेवयश 19मे)
8 पद्मावती किस वासुदेवकी पत्नी थी ? (श्रीकृष्ण वासुदेव)
9 पद्मावती किस तीर्थंकरके पूर्वभवमे पत्नी थी ?
(श्री पार्श्वनाथ प्रभुके किरणवेगके भवमे)
10 पद्मावती किस इन्द्रकी अग्रमहिषी हुई थी ? (शक्रेन्द्र)
11 पद्मावती की सास किस सतीजी हो गई ? (मृगावतीजी)
12 पद्मावती किस तीर्थंकर प्रभुके शासनदेवी थे ? (पार्श्वनाथ)
13 पद्मावती (साध्वी)ने किस पिता पुत्रकी लडाई होती हुई रोक दीथी?
(दधिवाहन करकंडु)
14 पद्मावती ने साध्वी अवस्थामे किस पुत्रको जन्म दिया था ?
(करकंडु)
15 पद्मावती ने साध्वी अवस्थामे पुत्रको जन्म दिया था इस पुत्रका लालन पालन किसने किया था ? (मकर)
16 पद्मावतीके कौनसे पुत्रने दीक्षा लेकर छोड दी थी ? (कुंडरिक)

17 पद्मावती अपने पति दधिवाहन से कौनसे निमित्त से अलग हो गई थी ? **(एक हाथी के निमित्त)**

18 पद्मावती रानी किस राजाकी रानी थी ? कि जिसके निमित्तसे एक करोड और 80 लाख मनुष्योकी मौत हुई थी ?**(कोणिक-राजा)**

19 पद्मावती रानीने अपने पतिसे छुपकर एक पुत्रका लालन पालन क्यो करवाया था ?**(राज्यके लोभसे पति उसके पुत्रका जन्म होते ही विकलांग बना देता था)**

20 पद्मावती नामक एक दिशाकुमारीका निवास स्थान कहां आया हुआ है ? **(पश्चिम रुचक पर्वत पर)**

21 पद्मावती रानीके पति कौनसे राजा थे, कि जिन्होने दीक्षा लेकर प्रमादका सेवन किया था ? **(सेलक राजर्षि)**

22 पद्मावती रानीके पति कौनसे राजा थे, कि जो मल्लि कुंवरी के साथ शादी करने तैयार थे ? **(प्रतिशुद्ध राजा)**

23 पद्मावती रानीके पति कौनसे राजा थे कि जिन्होने श्रीवीरप्रभुके पास अंतिम दीक्षा ली थी ? **(उदायन राजा)**

24 पद्मावती की शादी वसुदेवके साथ किस नगरमे हुई थी ? **(सालेग्रह नगर)**

25 पद्मावती के जमाईअंतिम केवली हुई उनका नाम क्या ? **(जंबु कुमार)**

26 पद्मावती कौन से तीर्थंकर की प्रथम शिष्याथी **(अनंतनाथ)**

'माता' से प्रारंभ होने वाले प्रश्न

1	किस माताने अपने दो पुत्रोको एक हाथी के लिए लडते रोका ?	**मयणरेहा**	**चंद्रयश और नमिराज**
2.	किस माताने अपने पुत्रको एक गांवके लिएउसके पिताके साथ लडते रोके थे?	**पद्मावती**	**करकंडु राजा**
3.	किस माताका पुत्र (मुनि) घर गौचरिके लिएआये लेकिन पहचाना नही ?	**भद्रा**	**शालिभद्र**

4.	किस माताने साध्वी अवस्थामे जन्म दिया उसका लालन पालन एक स्मशान रक्षकने किया था ?	**पद्मावती**	**करकंडु**
5.	किस माताने जंगलमे पुत्रको जन्म दिया जिसका लालन पालन पद्मरथ राजाके यहां हुआ था ?	**मयणरेहा**	**नमिकुमार**
6.	किस माताने पुत्रका जन्म होते ही दासी के द्वारा उखर भूमि में रखा दिया ?	**चेलणा**	**कोणिक**
7.	किस माताने पुत्रका जन्म होते ही उखर भूमि मेंडालकर दूसरी ही क्षणमे वहां से उठवा लिया ?	**सुभद्रा**	**उज्झित**
8	किस माताने अपने पुत्रका जन्म होते ही उसका लालन-पालन पतिसे छुपाकर करवाया था ?	**पद्मावती**	**कनकध्वज**
9.	किस माताने पुत्रका जन्म होते ही उस पुत्रकी दूसरी माताकी मृतपुत्रीके साथ अदल-बदल किया था ?	**पद्मावती**	**कनकध्वज**
10	किस माताने अपने पुत्रको जिन्दा जलाने लाक्षागृह बनाया था ?	**चूलनी**	**ब्रलदत्त**
11	किस माताके आंसुने पुत्रको वैरागी बनाया ?	**मेनावती**	**गोपीचंद**
12	किस माताने अपने (मुनि होनेवाले) पुत्रोके लड्डू दिलवाये थे	**देवकी**	**अनेकसेनादि छ भाई**
13	किस माताने पुत्रको राज्यके पुरोहित होने उसके पिताके मित्रके पास पढने भेजा था ?	**यशा**	**कपिल**
14	किस माताने पुत्रके बराबर सोना लेकर बेचा था ?	**भद्रा**	**अमरकुमार**

15 किस माताने पुत्रके जन्म होतेही, एक विद्याधर द्वारा अपहरन हुआ था जो पुत्र माताको सोलह वर्षके बाद वापस मिला? **रुक्मिणी** **प्रद्युम्नकुमार**

16 किस माताके पुत्रका जन्म होते ही एक विद्याधर द्वारा अपहरन हुआ था, जो बडेहोते ही अपनी बहनके साथ शादी करने तैयार हुआ था ? **विदेहा** **भामंडल**

17 किस माताने अपने पुत्र ब्राह्मण संबंधी चौदह विद्या प्राप्त करने पर भी उसको दृष्टिवाद पढने उसके मामाके पास भेजा था ? **सोमा** **आर्यरक्षित**

18 किस माताने अपने पुत्रका दीक्षा महोत्सव करने मुकुट, छत्र, चामर आदि देने जितशत्रु राजाको विनंती की थी ? **भद्रा सार्थवाहिनी** **धन्नाकुमार**

19 किस माताने अपने पुत्रका दीक्षा महोत्सव करने मुकुट छत्र चामर , आदि देने श्रीकृष्ण महाराजको विनंती की थी? **थावच्चा थावच्चाकुमार (गाथापतिके)**

20 किस माताने अपने छ सालके पुत्रको दीक्षा लेने छुट्टी दी थी ? **श्रीदेवी** **अइमुत्ताकुमार**

21 किस माताने अपने पुत्र (मुनि बनेहुए) का एक स्त्रीके संगमे पतन होतेहुए उपालंभ देकर सुधारा था ? **भद्रा** **अरणिक**

22 किस माताने अपने पुत्रको, मुनि गौचरी आतेही दे दिया था **सुनंदा** **वज्रकुमार**

23 किस माताने अपना पुत्र (पूर्वभवका) जो दूसरे भवमे मुनि हुआ था उसको दही वहोराया था ? **धन्या** **शालिभद्र**

24 किस माताने पुत्रका साथ लेकर अपने **सूरिकंता** सूर्यकान्तकुमार
पतिको मार डालनेका सोचा था

25 किस माताने अपने मुनि पुत्रसे कहाथा **देवकी** गजसुकुमाल
कि अब तू मुझे छोडकर दूसरी माता
मत करना।

गजराज (हाथी) शब्द प्रश्नोत्तरी

1. हाथीपर सवार होकर कौनसे तीर्थंकरप्रभु लडने गये थे ? **(श्री पार्श्वनाथ प्रभु)**

2 हाथी पर सवार होकर कौनसे राजा श्री वीरप्रभुको वंदन करने गये थे ? **(श्री दशार्ण भद्र)**

3 हाथीको किस राजाने कुबडा रुपसे वश किया था ? **(नलराजा)**

4 हाथीने हार पहनाकर किस कुमारको राजा बनाया था ? **(करकंडु कुमार)**

5 हाथियोमे सबसे श्रेष्ठ हाथी कौनसा कहलाता है ?**(ऐरावत हाथी)**

6 हाथी (ऐरावत) किस इन्द्रका वाहन है ? **(शक्रेन्द्र महाराजा)**

7 हाथी (ऐरावत) कि जो इन्द्रके वाहन रुपसे है वह पूर्वभवमें कौन था ? **(तापस)**

8 हाथी के तुम महावत हो जाओ और मै पीछे अंबाडीमे तुम्हारी रानीकी गोदमे बैठुं ऐसा वचन अभयकुमारने किसके पास मांगा था ? **(चंड प्रद्योत राजाके पास)**

9 हाथी के द्वारा किस सतीजीको उपसर्ग हुआ था ? **(मयणरेहा)**

10 हाथीके लिए कौनसे दो भाई लडने तैयार हुए ? **(चंद्रयश और नमिराज)**

11 हाथी जैसे मजबूत प्राणीको कौनसा पंखी उठाकर उपर उड सकता है? **(भारंड पक्षी)**

12 हाथी प्रमाण शाही से कितना ? लिखा जाता है । **(एक पूर्व)**

13 हाथी प्रमाणशाही जो एकपूर्वकी लिखा सकने लिए बताया गयाहै वह

हाथी किस क्षेत्रका समझना चाहिए **(महाविदेह क्षेत्रका)**

14 हाथी किस वासुदेवके पास थो जो गंधहस्ति था ?
(श्रीकृष्ण वासुदेव)

15 हाथी के पाँवतले अकबर बादशाहने किसको कुचलवाया था ?
(कवि गंगको)

16 हाथी किस राजाके पास था कि जो श्वेत वर्णका था ?
(नमिराजाके पास)

17 हाथी श्वेत वर्णके किस देशमे देखने मिलते है **(थाईलेन्डमे)**

18 हाथी उपर से नीचे उतरकर श्रीकृष्ण वासुदेवने किसको वंदन किए थे ? **(ढंढण मुनिको)**

19 हाथी जो महासेन राजा का था वह उत्पात करता था तब कौनसे चक्रवर्तीने वश किया था ? **(महापद्म)**

20 हाथीकीझपटमे आये हुए एक श्रेष्टि पुत्रीको कौनसे चक्रवर्तीने वश किया था ? **(ब्रह्मदत्त)**

21 हाथी किस मुनिको देखतेही बंधन मुक्त हुआ और उस मुनिको वंदन करने लगा था ? **(आर्द्रकुमार)**

22 हाथी भक्षक तापसोंको प्रतिबोधकर किस मुनिने अपने शिष्य बनाये थे ? **(आर्द्रकुमार)**

23 हाथी बनावटी बनवाकर चंड प्रघोत राजाने किसका अपहरन करवाया था ? **(उदायनकुमार)**

24 हाथीका स्वप्न किस माताको आया कि जिसका पुत्र पूर्वभवमे हाथी था ? **(धारिणी)**

25 हाथी का स्वप्न श्रेणिक राजाकी किस रानीको आया था ?
(धारिणी माता)

26 हाथी (श्वेत) जो मेरु पर्वत पर था उस पर खुद बैठा हुआ एसा स्वप्न किस राजाको आया था ? **(नमिराजा)**

27 हाथियोंसे (500) घेरे हुए एक भुंडको स्वप्नमे किस राजाने देखा था ? **(जितशत्रुराजा)**

28 हाथियो रुप करके इन्द्रमहाराजाने किसके मदका खंडन किया था ?
(दशार्ण भद्र राजा का)

29 हाथी के वाहन वाले महायक्ष नामके शासनदेव किस तीर्थंकर के शासनमे हुए ? **(अजितनाथ प्रभु)**

30 हाथीपर बैठे बैठे किसको केवलज्ञान हुआ ? **(मरुदेवी माताको)**

31 हाथी कितने इक्कट्ठे होते इतनी स्याही से चौहदपूर्व लिखा जाय ?
(16383)

32 हाथी महाविदेहका कितना ऊँचा होता है ? **(500 धनुष्यप्रमाण)**

भाई - भाई के प्रश्न

1 भाईने मुनिवेश छोड देते किस भाईने मुनिवेष अंगीकार किया था ?
(पुंडरिक)

2 भाईके समझोतेके बाद किस भाईने निदान करके संसार बढाया ?
(संभूतिमुनि)

3 भाई, छोटे भाईकी पत्नी पर आसिक्त होते, उस ने छोटे भाईका वध किया था उसका नाम क्या था **(युगबाहु)**

4 भाईजो मुठ्ठी उठाकर मारने जाता उसी मुट्ठीसे लोच किस भाईने किया ? **(बाहुबल)**

5 भाईके क्षमामांगने जानेवाला किस भाईने भाइको शीलासे मार डाला था ? **(कमठ)**

6 भाईने, किस भाईको प्रतिबोधकर परमात्मा बनाया था ?
(विजयघोष)

7 भाईयोकी सहायता लेकर किस भाईने पिताको केद मे डाला था ?
(कोणिक)

8 भाई,की गैरहाजरीमे किस भाईने अनासक्त रीतिसे राज्यकिया ?
(भरत, रामके भाई)

9 भाई-भाई देवीके पाशमेसे भाग जाने से कौनसा एक भाई भूलका भोग बनकर चल बसा **(जिनरक्षित)**

10 भाई (पूर्वभवका) जिससे जल रहे नाग-नागिनको किस भाईने नवकार मंत्र सुनाया था ? **(पार्श्वनाथ)**

11 भाई भाईके बीच एक हाथीके लिए लडाई, किस माताने निपटाई थी ? **(मयणरेहा)**

12 भाईका सामर्थ्य कम करने किस भाईकी युक्तिसे शादी करने तैयार हुआ **(श्रीकृष्ण)**

13 भाई-भाई पाँच भवसे साथमे थे, वे छठे भवमे अलगहुए वह कौन ? **(चित्रसंभूति)**

14 भाईसे कौनसा भाई जुआ खेलकर राज्य हारनेसे वनमे गया ? **(नलराजा)**

15 भाईने किस भाईका असत्य पक्ष रणभूमिमे छोडा था ? **(रावण)**

16 भाईने किस जुआरी भाईको अंतिम समयमे नवकारमंत्र सुनाकर देवलोक भेजा था ? **(जिनदास)**

17 भाईको मृग समझकर, उसका किस भाईने वधकिया था ? **(जराकुमार)**

18 भाईके हाथी एवं हारके लिए किस भाईने लडाईकी थी ? **(कोणिक)**

19 भाई-भाई वृक्षपर बैठकर जागृत हुए वे कौन ? **(देवभद्र-यशोभद्र)**

20 भाई-भाईके स्नेहकी देवसे परीक्षा होने से किस भाईकी मृत्यु हुई थी ? **(लक्ष्मणकी)**

21 भाई (वासुदेव) का शंख किस भाईने बजाकर भाईको भयभीत किया था ? **(नेमकुमार)**

22 भाई (मुनि)ने किस भाईकी इच्छा बिना दीक्षा दिलवाई थी ? **(भवदेव)**

23. आई राज्य ले लेगा एसे डर से कौन सा भाई भयभीत हुआ **(कृष्ण)**

24 भाईने किस भाईका वेश्यासे अपहरन करवाया था ?**(वल्कल चीरी)**

25 भाईने पिताको कैदमे डालते हुए उसका दु:ख देकर किस भाईने दीक्षा ली थी ? **(अतिमुक्तक कुमार)**

जैन शासनके ज्योतिर्धर

1 दीक्षाके दिन ही केवलज्ञान और मोक्ष पानेवाला कौन ?
(गजसुकुमाल)

2 माताके संतोषके लिए द्रष्टिवाद सूत्र पढनेवाला कौन ?**(आर्यरक्षित)**

3 गुरुदेव की टकोर से महलका उपाश्रय किसने बदला ?
(शान्तनु)

4 जहरको दूर करनेके लिए वनस्पतिका उपयोग करके उसके प्रायश्चितके लिए 'छ'विगई त्याग किसने किया ?
(धर्मघोष सूरि)

5 शिखरजीके जिनालयमे जूते पहनकर प्रवेश करनेवाले, पर केस किसने किया ? **(लालभाई)**

6 माया करके 80 चोवीशी तक संसार किसने बढाया ?
(लक्ष्मणा साध्वी)

7 रुप उपरका अभिमान किसको वैराग्यका कारण बना ? **(सनत्कुमार)**

8 हरिभद्र सूरिकी सहायता के लिए उपाश्रयमे रत्न किसने लगवाये थे ?
(ललिग)

9 काउसग्ग ध्यानमे सहभे की पूजा किसने रची ?
(सकलचंद्र उपा.)

10. शिष्यको प्रतिबोध देनेको लिए शिष्यकी पालखी किस गुरुने उठाई थी ? **(सिद्धसेन दिवाकर)**

11 कौनसे दिगंबर साधु बहनके वचनसे श्वेतांबरमे आचार्य बने ?
(मानदेवसूरि)

12 जिस श्लोकका अर्थ मुझे नही आता, जो मुजे अर्थ समझाएगा उसका शिष्य बनूंगा एसा नियम किसको था ? **(हरिभद्रभट्ट)**

13 गुरुने रत्नकं बल लेने से क्रोधमे आकर वस्त्र छोडकर दिगंबर मत किसने चलाया ? **(सहस्त्रमल्ले)**

14 इक्कीस बार बौद्धोकी परीक्षा लनेकी इच्छा किसने की थी ?
(सिद्धर्षिगणी)

15 गुरुदेवश्री की यादगिरि केलिए पालिताना किसने बसाया ?
(नागार्जुनने)

16 स्तुतिएँ बनानेमे लीन बने हुए किस साधुने गौचरीमे पत्थर लिया ?
(शोभन मुनि)

17 पुनमिया गच्छकी शरुआत किसने की थी **(चंद्रप्रभसूरि)**

18 100 वर्षकी आयुमे युद्ध करनेवाला कौन ? **(उदायनमंत्री)**

19 सोनेकी मुहरे जमीन पर बिछाकर देरासरके लिए जमीन किसने खरीदी से ? **(विमलशा)**

20 जिनालयमे तिराडे पडगई एसे समाचार देनेवालेको दुगुना इनाम किसने दिया ? **(बाहडशा)**

21 आयड में तपा का बिरुद किस आचार्यको मिला था ?
(जगत्चंद्रसूरि)

22 धवलक्क श्रावकने किस आचार्यको परिग्रहकी आसक्तिसे दूर किए?
(रत्नाकरसूरि)

23 धर्मगुरुका अपमान करनेवालाका हाथ किसने कटवाया ?
(वस्तुपाल)

24 सोनेकी पौषधशाळा बनानेके लिए कौन तैयार हुआ था ?
(देदाशा)

25 ब्रह्मचारी की ओरसे शाल भेंटमे मिलने से 32 वर्षकी आयुमे ब्रह्मचर्यका किसने स्वीकार किया ? **(पेथडमंत्रीने)**

26 पांच दिनमे सारे गुजरातको किसने भोजन कराया ?**(झांझणशा)**

27 किसके तपके पारणे पर श्रावक जिनालय बनाते ? **(कृष्णर्षि)**

28 कौन साधु-श्रावकको क्षमामांगने श्रावकके घर गये ?
(उपा. धर्मसागर)

29 पूर्वभवमे पुंडरिक कुंडरिक अध्याययनका 500 बार अध्ययन करनेवाला कौन ? **(वज्रस्वामी)**

30 गुरुवंदन से तीर्थंकर नाम कर्म किसने बांधा ?
(कृष्ण महाराजा)

31 मृत्युके समय साधुकी झंखना करनेवाला कौन ?
(उदायन मंत्री)

32 अपने गुरुको 108 हाथ लंबा पत्र लिखने वाला कौन ?
(मुनि सुंदरसूरि)

33 भीनमाल से सांचोर आकर पूजा करने वाला कौन ? **(वीरवणिक्)**

34 84 वादियोमे विजय प्राप्त करनेवाला कौन ? **(वादिदेवसूरि)**

35 शंखेश्वर तीर्थके अधिष्ठायक देव कौन से आचार्य बने ?
(वर्धमानसूरि)

36 इन्द्रको निगोदका स्वरुप कहनेवाला कौन ? **(कालकाचार्य)**

37 360 साधर्मिकोको अपने जैसे धनी बनानेवाला कौन ?
(आभूसंघवी)

38 गिरनार तीर्थको श्वेतांबरके कब्जेमे करनेवाला कौन **(पेथडमंत्री)**

39 साधर्मिकको जिमानेके बाद ही भोजन करने वाला नियमधारी कौन था ?
(दंडवीर्य राजा)

40 हर साल साधर्मिकके पीछे 1 करोड द्रव्यका खर्च करनेवाला कौन
(कुमारपाल राजा)

41 हररोज 500 साधुओको गौचरी देकर भक्ति किसने की थी ?
(वस्तुपाल - तेजपाल)

42 शत्रुंजयका अंतिम उद्धार किस आचार्यके हाथसे होगा ?
(दुप्पहसूरि)

43 सवा करोड सोनैयेसे बप्पभट्टी सूरिका गुरुपूजन किसने किया था ?
(आमराजा)

44 10 सालकी उम्रमे आचार्य पद पानेवाला कौन ? **(पादलिप्तसूरि)**

45 नवकारमंत्र बोलनेवाले को एक सुवर्ण टांक देनेवाला कौन ?
(सारंग शेठ)

46 किसकी शाल ओढनेसे बुखार उतर जाता ? **(पेथडमंत्रीकी)**

47 जिनमंदिर जाते वख्त कौन शेठानी दान देती थी ?
(हरकोर शेठानी)

48 शरमके कारण संयम लेनेवाला कौन ? **(भवदत्त)**

49 49 गुन केसर चूनेमे मिश्र करके उपाश्रय बनानेवाला कौन ?
(देदाशा)

50 संपत्ति गाडनेजाते संपत्ति किसको प्राप्त हुई ?
(वस्तुपाल तेजपाल)

51 दीक्षाके दिनसे छ विगईका त्याग करनेवाला कौन ?
(शीलभद्रसूरि)

52 एकही दिनमे पाँच रुप करके पाँच गाँवकी प्रतिष्ठा करानेवाला कौन ? **(यशोभद्रसूरि)**

53 केवली बननेके बाद छ महिने तक घर पर रहनेवाला कौन
(कुर्मापुत्र)

54 पत्नीके बोधसे बैराग्य पानेवाला कौन ? **(तेतलीपुत्र)**

55 वीर प्रभुके समाचार पानेके लिए पोस्टमेन किसने रखा था ?
(कोणिक)

56 किसका गीत सुनकर 500 चोर संयमीबने ? **(कपीलकेवली)**

57 24 भगवानके 84 जिनालय किसने बनवाये ? **(पेथडमंत्री)**

58 सत्यपुरमे वीर स्वामीका जिनालय किसने बनवाया ?
(नाहड राजा)

59 पेथड मंत्रीने कितने उपाश्रय बनावाये थे **(700)**

60 11 लाख लोगोको जेलसे किसने छुडवाये थे ? **(समराशाहने)**

61 700 कीमती वस्त्र एवं सोनैया साधर्मिकोको किसने दिया ?
(जगतसिंह)

62 उपाश्रयमे सफाई करते कवि कौनबना ? **(ऋषभदास)**

63 चंद्रावती नगरीके जिनालयमे हररोज कितना केसर आता था ?
(सवासेर)

64 नौलाख पुष्पोसे जिनपूजा किसने की थी ?
(धाईदेव श्रावकने)

65 किसकी दीक्षाके समय आकाशसे पुष्पवृष्टि हुई थी ?
(कृष्णराव)

66 एक वर्षमे सिर्फ 38 दिन पारणे करनेवाला कौनसे ऋषि हो गए ?
(कृष्णर्षि)

67 पेथडमंत्री के संघमे कितने यात्री थे ? **(छ लाख)**

68 रावण और लक्ष्मण कितने भवोके बाद मोक्षमे जायेगे ?
(चौदह भव)

69 पेथडमंत्रीने व्रत स्वीकार किया तब कितने साधर्मिकको प्रभावना की थी **(सवालाख)**

70 84 शिष्योको एक साथ आचार्य पदवी किसने दी थी
(उयोतन सूरि)

कुमारपालका संक्षिप्त परिचय

- जन्म — वि.स. 1149 दधिस्थली (देथली)
- राज्यप्राप्त — वि.स. 1199
- 12 व्रत लिए — वि.स. 1216
- स्वर्ग गमन — वि.स. 1230
- राज्य भोग — 30 वर्ष उपर
- पिता — त्रिभुवनपाल
- माता — काश्मीरादेवी
- भाई — कीर्तिपाल और महिपाल
- बहन — प्रेमलदेवी और देवलदेवी
- पुत्र — नृपसिंह
- बहनोई — कृष्णदेव और अर्णोराज
- धर्मपत्नी — भोपलदेवी
- कुल — चौहाण
- वंश — चौलुक्य

कुमारपाल राजा यहांसे आयुष्य पूर्ण करके व्यंतरदेव होंगे, वहांसे च्यवन होकर इस भरतक्षेत्रमे भद्दिलपुर नगरमे शातानंद राजा और

धारिणीरानी के पुत्र शतपत्र नामके होगे । वहा राज्यका पालन-करके अंतमे पद्मनाथ तीर्थंकरकी देशना सुनकर राज्यका त्याग करके चारित्र लेकर और उनके ग्यारहवे गणधर होगे । केवलज्ञान प्राप्त करके इस भवसे तीसरे भवमे मोक्षको प्राप्त करेगे ।

भ. महावीर स्वामीका जीवन परिचय

1. पिता-सिद्धार्थराजा
2. माता-त्रिशलादेवी
3. भाई - नंदिवर्धन
4. बहन-सुदर्शना
5. पत्नी-यशोदादेवी
6. पुत्री-प्रियदर्शना
7. नगरी-वैशाली
8. गाँव-क्षत्रिय कुंड
9. जन्मदिन-चैत्रसुद-13
10. जाति-क्षत्रिय
11. नाम-वर्धमान कुमार
12. वर्ण-सोने जैसा
13. गोत्र-काश्यपगोत्रीय
14. ससुर-समरवीरराजा
15. सास-धारिणीरानी
16. जमाई-जमालि
17. भाभी - जयेष्ठा
18. चाचा-सुपार्श्व
19. मामा -चेटक राजा
20. मामी-सुभद्रादेवी
21. दीक्षा -30वे वर्षमे
22 दीक्षादिन-कार्तिकवद-10
23. तप-12 1/2 साल और 15 दिन तक
24. केवलज्ञान-वैशाखसुद-10.
25. ज्ञानप्राप्ति-42 सालमें
26. आयुष्य-72 साल
27. साधु-14 हजार
28. साध्वी-36 हजार
29. मोक्षगमन-आसोकृष्ण-अमावस (दिवाली)
30. स्थल-पावापुरी (बिहार)

जगदगुरु हीरसूरिश्वरजी का परिचय

- दीक्षा पहलेका नाम — हीरकुमार
- दीक्षा के बाद नाम — हीरहर्षमुनि
- आचार्यकी पदवीके बाद — विजय हीरसूरिश्वरजी
- गोत्र — खीमसरा
- पिताका नाम — कुराशा (कुवरजी) ओसवाल

- माता का नाम — नाथीदेवी
- जन्मभूमि — पालनपुर
- बडे तीनभाई — संघजी, सूरजी, श्रीपाल
- बडी तीन बहने — रंभा, रानी, विमला
- दीक्षा स्थळ — पाटण
- पंडितपद स्थल — नाडलाई (1607)
- उपाध्याय पद स्थल — नाडलाई (1608)
- आचार्य पद स्थल — सिहोरी (1610)
- जगदगुरु बिरुद स्थल — दिल्ही
- (स्वर्गवास) मृत्यु — भा.सु.11 उना-1652
- जन्म — 1583 मृगशिर शुक्ला
- दिक्षा — 1596 कार्तिक कृष्णा -2
- 1619-1620मे शत्रुंजय पर अनेक प्रतिमाजीकी प्रतिष्ठा करवाई थी ।
- 1628 मे लोकामत विद्वान अनुयायी मेघजीऋषि आदि 20 साधुओको संवेगी दीक्षा दीथी
- 1630 मे जगमाल ऋषिके द्वारा उपद्रव हुआ ।
- 1630 मे पाटणके सूबा कलाखानको प्रतिबोध करके आहिंसा पालक बनाया ।
- 1634मे तीन महिने तक गुप्त रहे ।
- 1638 मे खंभातमे सं. उदयकरणमें चंद्रप्रभ जिनालयकी प्रतिष्ठा करवाई।
- 1638मे मृगशिर कृष्णा के दिन अकबरके पास जानेके लिए प्रयाण किया
- 1639 जेठ वद -13 अकबरके साथ प्रथम मुलाकात
- 1639 मे अकबरको अहिंसक बनाया ।
- 1639मे सरोतरके ठाकोर अर्जुनको प्रबोध कर दारु मांस छुडवाया था।
- 1640 मे 1 करोड रुपयोका खर्च करके दिल्ही मे महामहोत्सवपूर्वक 'जगद्गुरु' का बिरुद अर्पण किया ।

- हीरसूरिजीके उपदेश सें. 303 संघपतियोने संघ निकाला था ।
- दक्षिणमे अभ्यास करके गुरुके प्रथम दर्शन किए उस समय खडे खडे नये 108 काव्योकी स्तुति की थी ।
- हीर सूरिजीने 50 जिनालयोकी प्रतिष्ठाकरवाई थी ।
- हीर सूरिजीके समुदायमे 2500 साधु, 160 पंडित 8 उपाध्याय, 300 साध्वीये थी ।
- सूरिजी दसवैकालिक सूत्रका हररोज स्वाध्याय करते थे ।
- वि.स. 1639 जेठ सुद -13 को दिल्ली आये तब लाखोकी संख्यामे लोग जुलुस में सामिल थे ।
- हीरसूरिजीके शिष्य धन विजयजी एक दिनमे 30 कोषका विहार कर सकते थे ।
- आचार्य पदका प्रसंग राणकपुर जिनालयको बंधवानेवाले धन्ना पोरवाल के वंशज चांगा महेताने मनाया था ।
- शत्रुंजय पर तेजपाल सोनीने बनवाया हुआ नंदिवर्धन प्रसादकी प्रतिष्ठा के प्रसंग पर 72 यात्रा संघ गंधार आदि से आये थे । 1650 मे हीरसूरिने प्रतिष्ठा करवाई थी ।
- हीरसूरिके गीतगान करनेवालेकोअकबरने 1 लाख रुपये दानमें दिये थे।
- हीरसूरिजीने दीक्षा ली तब उसके साथ अमीपाल, अमरसिंह, कपूरा अमीपालकी माता, धर्मशीऋषि रूडाऋषि, विजय हर्ष और कनकश्री एसे आठ व्यक्तिने साथमे दीक्षा ली थी ।
- हीरसूरिजीके पाट महोत्सवका लाभ सूबा शेरखान मंत्री समरथ भणशालीने किया था ।
- सूरिजी अकबरके पास गये तब उनके साथ 67 साधु थे ।
- पं. भानुचंद्रजीने अकबरको सूर्यके 1000 नाम सिखाये थे और अकबर हर रविवारको उनको रत्नजडित बाजोठ पर बिठाकर स्तोत्र सुनता था।
- एक बार खंभातमे नगर प्रवेशके समय हीर सूरिजीके पांव पांव पर दो-दो सोनामुहर एवं रुपया और मोतीके स्वस्तिक के द्वारा गुरुपूजन

किया था। भक्तोने प्रभावना आदि देकर 1 करोड रजत द्रव्यका व्यय किया था।

सम्राट अकबरके समयके भाव

- हल्के से हल्का चावल — 1 रुपये का 111 रतल
- गेहूंका आटा — 1 रुपये का 148 रतल
- दूध — 1 रुपये का 89 रतल
- घी — 1 रुपये का 21 रतल
- सफेद चीनी — 1 रुपये का 17 रतल
- श्याम चीनी — 1 रुपये का 39 रतल
- नमक — 1 रुपये का 137 रतल
- ज्वार — 1 रुपये का 122 1/2 रतल
- बाजारी — 1 रुपये का 277 1/2 रतल

(सूरिश्वर सम्राट हीरसूरि रास)

समेत शिखर तीर्थके मुख्य 21 उद्धार

1 **पहला उद्धार :** दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ मोक्षमे जानेके बाद अयोध्या नगरी के चक्रवर्ती सागरके पौत्र राजा भगीरथने आचार्य सागरसूरिके उपदेशसे कराया था ।

2. **दूसरा उद्धार :** संभवनाथ के मोक्षमे जानेके बाद हेमनगर के राजा हेमदत्तने गणधरश्री वारुकके उपदेशसे कराया था ।

3. **तीसराउद्धार :** अभिनंदन स्वामीके मोक्षमे जानेके बाद धातकी खंडके पुरणपुरके रत्नशेखर राजाने कराया था ।

4. **चौथा उद्धार :** सुमतिनाथ भ. के मोक्षमे जानेके बाद पद्मनगरके आनंदसेन राजाने कराया था ।

5. **पांचवा उद्धार :** पद्मप्रभ स्वामी के मोक्षमे जानेके बाद बंगाल देशके प्रभाकर नगरके सुप्रभ नामके राजाने कराया था ।

6. **छठा उद्धार :** सुपार्श्वनाथ भ.के मोक्षमे जानेके बाद उद्योत राजाने कराया।

7. **सातवा उद्धार :** चंद्रप्रभ स्वामी के मोक्षमे जानेके बाद पुंडरिक नगरके ललितदत्त राजाने कराया था ।
8. **आठवा उद्धार :** सुविधीनाथ भ.के मोक्षमे जानेके बाद श्रीपुर नगरके हेमप्रभ राजाने कराया था ।
9. **नौवा उद्धार :** शीतलनाथ भ.के मोक्षमे जानेके बाद मालवाके भद्दिलपुर नगरके मेघरथ राजाने कराया था ।
10. **दसवा उद्धार :** श्रेयांसनाथ भ.के मोक्षमें जानेकेबाद मालवाके बालनगरके आनंदसेन राजाने कराया ।
11 **ग्यारहयवा उद्धार :** विमलनाथ भ.के मोक्षमे जानेकेबाद पूर्वमहाविदेहके कनकावती नगरीके कनकरथ राजाने कराया था ।
12. **बारहवा उद्धार :** अनंतनाथ भ.के मोक्षमे जानेके बाद कौशाम्बी नगरीके बालसेन राजाने विद्याचरण मुनिके उपदेशसे कराया था ।
13 **तेरहवा उद्धार :** धर्मनाथ भ. के मोक्षमे जानेके बाद पंजाबके श्रीपुरनगरके भवदत्तने मासोपवासी धर्मघोष सूरिके उपदेशसे कराया था।
14. **चौदहवा उद्धार :** शांतिनाथ भ.के मोक्षमे जानेके बाद मित्रपुर नगरके सुदर्शन राजाने चक्रायुध गणधरके उपदेशसे कराया था ।
15. **पंद्रहवा उद्धार :** कुंथुनाथ भ. के मोक्षमे जानेकेबाद वत्सदेशके शालीभद्र नगरके देवधर राजाने कराया था ।
16. **सोलहवा उद्धार :** अरनाथ भ. के मोक्षमे जानेके बाद भद्रपुर नगरके आनंदसेन राजाने कराया था ।
17. **सत्तरवा उद्धार :** मल्लीनाथ भ.के मोक्षमे जानेके बाद कलिंग देशके श्रीपुर नगरके अमरदेव राजाने कराया था ।
18. **अठारहवा उद्धार :** मुनिसुव्रत स्वामीके मोक्षमें जानेके बाद रत्नपुरी नगरीके अमरदेव राजाने कराया था ।

19. **उन्नीसवा उद्धार :** नेमिनाथ भ. के मोक्ष जानेके बाद श्रीपुर नगरके मेघदत्तने कराया था ।

20. **बीसवा उद्धार :** पार्श्वनाथ के मोक्षमे जानेके बाद आनंद देशके गंधपुर नगरके प्रभसेन राजाने बीस स्थानक तप करके दिनकरसूरिके उपदेशसे कराया था ।

21. **इक्कीसवा उद्धार :** मुर्शिदाबादके खुशालचंद शेठने तपागच्छके भट्टारक धर्मसूरिके उपदेशसे 1825 के आसपास कराया था । (जैनतीर्थ इतिहास)

समेत शिखर पर मोक्षमे गये हुए मुनिवर

क्र.न.	टुंकका नाम	कोनसे भ. मोक्षमें गये	दूसरे कितने मुनि मोक्षमेंगये	यात्राकरनेसे पौषध/उपवास का फल
1	सिद्धवर टुंक	अजीतनाथजी	9 कोडाकोडी, 72 लाख 42 हजार, 500	32 करोड
2.	धवलदत्त	संभवनाथजी	9 कोडाकोडी, 72 लाख 42 हजार, 500	42 लाख
3.	आणंदटुंक	अभिनंदनस्वामी	72 कोडाकोडी, 70 करोड, 70 लाख, 42 हजार, 700	1 लाख
4	अचलगिरि	सुमतिनाथजी	1 कोडाकोडी, 84 करोड, 72 लाख, 81 हजार, 781	1 करोड
5.	मोहनगिरी	पद्मप्रभस्वामी	99 करोड, 87 लाख 43 हजार, 727	1 करोड
6.	प्रभासगिरि	सुपार्श्वनाथजी	46 कोडाकोडी, 84 करोड 72 लाख 7 हजार 742	32 करोड
7	ललितघट्ट	चन्द्रप्रभस्वामी	984 अरब 72 करोड, 80 लाख, 84 हजार, 565	16 लाख
8.	सुप्रभ	सुविधीनाथजी	1कोडाकोडी, 99 लाख, 7 हजार, 480	1 करोड

9.	विद्युत	शीतलनाथजी	18 कोडाकोडी, 42 करोड, 32 लाख, 42 हजार, 105	1 करोड
10.	संकुलगिरि	श्रेयांसनाथजी	96 कोडाकोडी 96करोड 96 लाख, 9 हजार, 542	1 करोड
11.	विमलगिरि	विमलनाथजी	70 कोडाकोडी, 17 करोड 60 लाख 6 हजार, 742	1 करोड
12.	हिमगिरि	अंनतनाथजी	69 कोडाकोडी, 17 करोड 70 लाख, 70 हजार, 700	1 करोड
13	दत्तवर	धर्मनाथजी	29 कोडाकोडी, 19 करोड, 9 लाख, 9 हजार, 795	1 करोड
14.	प्रभासगिरि	शांतिनाथजी	9 कोडाकोडी, 9 लाख, 9 हजार, 999	1 करोड
15.	ज्ञानधर्	कुंथुनाथजी	96 कोडाकोडी, 96 करोड, 32 लाख, 96 हजार, 742	1 करोड
16.	नाटिकागिरि	अरनाथजी	99 करोड, 99 लाख, 99 हजार, 999	1 करोड
17.	सबलगिरि	मल्लीनाथजी	96 करोड	1 करोड
18.	निर्जनगिरि	मुनिसुव्रतस्वामी	96 कोडाकोडी, 97 करोड 9 लाख 999	1 करोड
19.	मित्रधर	नमीनाथजी	1 अरब, 45 लाख 7 हजार, 942	1 करोड
20.	स्वर्णभद्र	पार्श्वनाथजी	82 करोड, 84 लाख 45 हजार, 742	1 करोड

भद्रेश्वर तीर्थके 16 जीर्णोद्धार

1. पहला जीर्णोद्धार — वीर सं. 223मे श्रीसंप्रत्ति राजाने कराया
2. दूसरा जीर्णोद्धार — श्री कालिकाचार्यके भाणजाने
3. तीसरा जीर्णोद्धार — श्री वनराज चावडाने
4. चौथा जीर्णोद्धार — 621 मे कनकराज चावडाने

5. पांचवा जीर्णोद्धार — 1134 मे श्रीमाली श्रेष्ठियोने
6. छठा जीर्णोद्धार — कुमारपाल महाराजाने
7. सातवां जीर्णोद्धार — 1208 मे जगत्चंद्र सूरिके उपदेशसे
8. आठवां जीर्णोद्धार — 1287 मे वस्तुपाल तेजपालने
9. नौवा जीर्णोद्धार — स.1312 मे दानवीर शेठ जगडु शाह
10. दशवा जीर्णोद्धार — वाघेला श्री सारंगदेवने
11. ग्यारहवा जीर्णोद्धार — 1596 मे जामरावलने
12. बारहवा जीर्णोद्धार — 1622मे महाराजा भारमलने
13. तेरहया जीर्णोद्धार — 1659 मे श्री जैन संघने
14. चौदहवा जीर्णोद्धार — स. 1682मे शेठवर्धमानसिंह पद्मसिंहने
15. पंद्रहवा जीर्णोद्धार — स. 1920 मे श्री संघका
16. सोलहवा " — स. 1939 मे महासुद10 शुक्रवार मांडवी नगरके वासी श्रेष्ठिवर्य श्री मोणसी तेजसीजी धर्मपत्नी मीठाबाईने कराया था।

गिरनार तीर्थके उद्धार

1 पहला उद्धार — ऋषभ देवके पुत्र भरत महाराजने स्फटिक रत्नमय जिनालय 11 मंडप वाला बंधवायाथा जिसका नाम 'सुरसुदंर प्रसाद' रखा था।
2. दूसरा उद्धार — दंडवीर्य राजाने करवाया था।
3. तीसरा उद्धार — दूसरे देवलोकके इन्द्र श्री ईशानेन्द्रने कराया था
4. चोथा उद्धार — चौथे देवलोकके इन्द्र श्री महेन्द्रने कराया था
5. पांचवा उद्धार — पांचवे देवलोकके इन्द्र श्री ब्रह्मेन्द्र कराया था।
6. छठा उद्धार — भवनपतिकाय इन्द्रने कराया था

7. सातवां उद्धार — अजितनाथ भ. के समयमे सगर चक्रवर्तीने कराया था ।

8. आठवां उद्धार — अभिनंदन स्वामीके समयमे व्यंतर निकायके इन्द्रने कराया था ।

9. नौवा उद्धार — चन्द्रप्रभ स्वामीके समयमे चंद्रयशा राजाने कराया था ।

10. दसवा उद्धार — शांतिनाथ भगवानके समयमे श्री चक्रधर राजाने कराया था ।

11. ग्यारहवा उद्धार — मुनिसुव्रत स्वामीके समयमे रामचंद्रजीने कराया था ।

12. बारहवा उद्धार — नेमिनाथ भ. के समयमे वरदत्त गणधरकी निश्रामे पांडवोने शत्रुंजय गिरनारका संघ निकाला । संघ पूर्ण होनेके बाद गिरनारका उद्धार कराया था।

13. तेरहवा उद्धार — वीर निर्वाणके पहले रेवानगरके राजा नेबुसदनेझरने कराया था ।

14. चौदहवा उद्धार — कांपिल्यपुर नगरके रत्नाशाह एवं अजित शाहने कराया था ।

15 पंद्रहवा उद्धार — विक्रमकी नौवी सदीके कान्यकुब्जके आमराजाने कराया था ।

16. सोलहवा उद्धार — सं1185 के सिद्धराजके समयमे सज्जन मंत्रीने कराया था ।

- बादमे तेरहवी सदीके वस्तुपाल तेजपालने उद्धार कराया
- चौदहवी सदीमे - अमरसिंहने
- सत्रहवी सदीमे वर्धमानसिंहने एव पद्मसिंहनामके दो भाईयोने उद्धार कराया था ।
- वीसमी सदीमे श्री नरशीकेशवजीने उद्धार कराया था ।
- इसके अलावा राजा संप्रति, कुमारपाल, सामंतसिंह, संग्राम सोनी आदि अनेक राजाओने इस तीर्थका उद्धार कराया था । (गिरनारतीर्थ इतिहास)

ऋषभ देवके 100 पुत्र के नाम

1. भरत
2. बाहुबलि
3. शंख
4. विश्वकर्मा
5. विमल
6. सुलक्षण
7. अमल
8. चित्रांग
9. ख्यातकीर्ति
10. वरदत्त
11. सागर
12. यशोधर
13. अमर
14. रथवर
15. कामदेव
16. ध्रुव
17. वत्स
18. नंद
19. सूर
20 सुनन्द
21. कुस
22. अंग
23. वंग
24. कोशल
25. वीर
26. कलिंग
27. मागध
28. विदेह
29. संगम
30 दशार्ण
31. गंभीर
32. वसुवर्मा
33. सुवर्मा
34. राष्ट्र
35. वृद्धिकर
37. विविधकर
38. सुयज्ञा
39. यशःकीर्ति
40. यशस्कर
41. कीर्तिकर
42. सूरण
43. ब्रह्मसेन
44. विक्रान्त
45. नरोत्तम
46. पुरुषोतम
47. चन्द्रसेन
48. महासेन
49. नभसेन
50 भानु
51. सुकांत
52. पुष्पयुत
53. श्रीधर
54. दुर्धर्ष
55. सुसुमार
56. दुर्जय
57. अजेयमान
58. सुधर्मा
59. धर्मसेन
60. आनंदन
61 आनंद
62. नंद्र
63. अपराजित
64. विश्वसेन
65. हरिषेण
66. जय
67 विजय
68. विजयंत
69. प्रभाकर
70. अरिमदन
71. मान
72. महाबाहु
73. दीर्घबाहु
74. मेघ
75. सुघोष
76. विश्व
77. वराह
78 सुसेन
79. सेनापति
80 कपिल
81. शैलविचारी
82. अरिंजय
83 कुंजरबल
84. जयदेव
85. नागदत्त
86. काश्यप
87. बल
88. धीर
89. शुभमति
90. सुमति
91. पद्मनाभ
92. सिंह
93. सुजाति
94. संजय
95. सुनाभ
96. नरदेव
97. चित्तहर
98. सुरवर
99. द्रढरथ
100. प्रभंजन

(कल्प सूत्र - सातवां व्याख्यान)

- ऋषभदेवको दो पुत्रियो - ब्राह्मी, सुंदरी
- ऋषभदेवके प्रभुके 20000 शिष्य एवं 4000 साध्वीया मोक्षमे गई

- ऋषभदेव प्रभुके 22900 मुनि अनुत्तर विमानमे उत्पन्न हुए ।

(कल्पसूत्र)

संयमपर्याय पालने से कौनसे देवो का सुख

1.	माह	वाणव्यंतर
2.	माह	भवनपति
3.	माह	असुरकुमार
4.	माह	ग्रह नक्षत्र ताराओका
5.	माह	सूर्यचंद्र
6	माह	1-2 देवलोकका
7	माह	3-4 देवलोकका
8	माह	5-6 देवलोकका
9	माह	7-8 देवलोकका
10	माह	9 से 12 देवलोकका
11	माह	नवग्रैवयकका
12	माह	अनुत्तर विमानके सुखको पार करनेवाला

(भगवती सूत्र)

श्रीपाल राजाका परिचय

श्रीपाल राजाको पूर्वभवका नाम – श्रीकान्त
प्रथम पुत्रका नाम – त्रिभुवनकाल
पिताका नाम – सिंहरथ राजा
माता का नाम – कमल प्रभा
चाचा का नाम – अजीतसेन
समुद्रमे फेंकनेवाला – धवल शेठ

श्रीपालकी नौ पत्नियाराजा

1 मयणा सुंदरी – उज्जैनी नगरी की
2. मदन सेना – बब्बर बंदर

3. मदन मंजूषा — रत्नसंचया
4. मदन मंजरी — धाणा नगरी
5. गुण सुंदरी — कुंडलपुर
6. त्रैलोक्य सुंदरी — कंचनपुर
7. श्रृंगार सुंदरी — दलपत नगर
8. जय सुंदरी — कोल्लापुर
9. तिलक सुंदरी — सोपारक नगर

64 इन्द्र-56 दिक्कुमारी एवं परमात्माके 250 अभिषेक

भवनपितके इन्द्र	— 20
व्यंतरनिकायके इन्द्र	— 16
वाणव्यंतरके इन्द्र	— 16
ज्योतिष के इन्द्र	— 2
वैमानिकके इन्द्र	— 10
	64

अधोलोककी	8	दिक्कुमारी सूतिकर्म करती है ।
उर्धवलोककी	8	दिक्कुमारी सुगंधी जल डालती है ।
पूर्वरुचककी	8	दिक्कुमारी आयना लाती है ।
दक्षिण दिशाकी	8	दिक कुमारी पंचामृत स्नान कराती है ।
पश्चिम दिशाकी	8	दिक् कुमारी वायु वींझती है
उत्तर दिशाकी	8	दिक्कुमारी चामर वीझती है ।
रुचकद्वीपकी	4	दिक्कुमारी रक्षा पोटली बांधती है ।
विदिशाली	4	दिक्कुमारी दीपक लाती है ।

56 दिक्कुमारिया

250 अभिषेक

लोक पालके -4 कलश
व्यंतरेंन्द्रकी इन्द्राणीके 4 कलश
भवनपतिके 20 इन्द्रोके 20 कलश

ज्योतिषकी इन्द्राणीके 4 कलश
व्यतन्तरेन्द्र के 32 इन्द्र के 32 कलश
सौधर्म देवलोक की इन्द्राणीके 8 कलश
वैमानिकके 10 इन्द्रोके 10 कलश
ईशान देवलोककी इंद्राणीके 8 कलश
मनुष्यक्षेत्रके सूर्यचंद्रके 132 कलश
सामानिक देवका 1 कलश
असुरकुमारी 10 इन्द्राणी के 10 कलश
उत्तर दिशाकी 1 इन्द्राणीका 1 कलश
अंगरक्षक देवका 1 कलश
दक्षिण दिशाकी 1 इन्द्राणी का 1 कलश
पर्षदा देवका 1 कलश
गुरुस्थानक का 1 कलश (त्रायस्त्रिंशक)
प्रकीर्ण देवका 1 कलश
नागेन्द्र इन्द्राणीका 1 कलश
अनिकाधिपति देवका 1 कलश
नौ निकायकी 9 इन्द्राणी के 9 कलश

250 कलश

- 250 को 64000 से गुनने से 1 करोड और साठ लाख कलश होते है।

जीरावला तीर्थका जिर्णोद्धार

- वीर संवत 327 में शेठ अमराशाहने भूगर्भमेसे निकली हुई पार्श्वनाथकी प्रतिमा की स्थापनाकी आचार्य देवसूरीश्वरजी अपने 100 शिष्योके साथ जीरावला आये उनके हाथोसे प्रतिष्ठा कराई थी ।
- बादमे 763 मे ओसवाल वंशके जेताशा खेताशा ने जिर्णोध्धार कराया था ।
- बादमे 1033 मे मालानगरके शेठ हरदासने जिर्णोध्धार कराया था।

जीरावला तीर्थमे हुए चातुर्मास

- सबसे पहले अंचलगच्छके आ. वि. मेरुतुंगसूरिजीने 152 शिष्योके साथ चातुर्मास किया था ।
- बादमे आगमगच्छके आ. वि. हेमराज सूरिजीने 75 शिष्योके साथ चार्तुमास किया था ।
- बादमे उपकेश गच्छके आ. वि. देवगुप्त सूरिजीने 113 शिष्योके साथ चार्तुमास किया था ।
- उसके बाद आगम गच्छके आ.वि. देवरत्नसूरिजीने 48 शिष्योके साथ चचर्तुमास किया था ।
- उसके बाद उपकेश गच्छकेसे आ. वि.कक्कसूरिजीने 71 शिष्योके साथचातुर्मास किया था ।
- उसके बाद खरतरगच्छके आ.वि. जिनतिलकसूरिने जीने 53 शिष्योके साथ चातुर्मास किया था ।
- उसके बाद तपगच्छके आ.वि. कीर्तिरत्नसूरिजीने 31 शिष्योके साथ चातुर्मास किया था ।
- उसके बादमे आ.वि. जयतिलक सूरिजीने 68 शिष्योके साथ चातुर्मास किया था ।
- उसके बादमे आ.वि. मुनिसुंदरसूरिजीने 41 शिष्योके साथ चातुर्मास किया था ।
- उसके बाद जीरापल्ली गच्छके खेमचंदगणिवरने 50 शिष्योकेसाथ चातुर्मास किया था ।
- उसके बाद जीरापल्लीगच्छ के आ.वि.रत्नप्रभसूरिजीने 65 शिष्योके साथ चातुर्मास किया था ।
- उसके बाद जीरापल्ली गच्छके देवचंद्र मुनिने 61 शिष्योके साथ चातुर्मास किया था ।

जीरावला तीर्थमे आये हुए बडे संघ

1 वीर सं. 763मे मेरुतुंगसूरिजी 10,000यात्रिकोके साथ संघ लेकर आये थे ।

2. वीर सं. 834 मे लक्ष्मणशाह 17,000 यात्रियोके साथ संघ लेकर आये थे ।

3 वीर सं. 834 मे देवसूरिजी 5000 यात्री जाल्हा शेठ साथ संघ लेकर आये थे ।

4. वीर सं. कक्कसूरिजी 5000 यात्रिकोके साथ संघ लेकर आये है ।

5. वीर सं. 1303 मे देवसूरिजी 8000 यात्रि के साथ संघ लेकर आये थे।

6. वीर सं. 1468 मे हर्षसूरिजी 5000 यात्रिकोके साथ ओसवाल खेमासा संघपति बने थे ।

7. वीर सं. 1468 मे जिनपद्मसूरिजी 11,000 यात्रिकोके साथ चोरडिया माना शाह संघ लेकर आये थे ।

8 वीर सं. 1475 मे हेमन्त सूरिजी 8000 यात्रिकोके साथ ओसवाल रांका संघपति बने ।

9. वि. स. 1033 मे सहजानंद सूरिजी तेतली नगर निवासी हरदासज़ी बडा संघ लेकर इस तीर्थमे आये थे ।

10. वि. सं. 1188 मे श्रीमदेवसूरिजी निश्रामे जाल्हा शेठने बडा संघ निकाला था ।

11. पोरवाड भीला शेठ राहेड नगरसे कक्कसूरिकी निश्रामें वि.स. 1393 मे इस तीर्थमे संघ लेकर आये थे ।

12. वि.सं. 1340 मे मालव मंत्री पेथडका पुत्र झांझण संघ लेकर जीरावला आये. तब छ मण कपूर और 1 करोड पुष्पोसे जिन पूजा की थी । और 1 लाख रुपयेका मोतीवाला चंदरवा भराकर जिनालयमे बांधा था ।

13 खंभात निवासी आल्हाक श्रावकका पुत्र राम और पर्वतने वि.स. 1468 मे यहां आकर बहुत द्रव्यका खर्चकिया था ।

14 मेवाडके राणा मोकल के मंत्री रामदेवकी स्त्री मेलादेवीने चतुर्विध संघके साथ यहां आकर यात्राकी थी ।

15 वि.सं. 1501 मे चित्रवालागच्छीय आचार्यश्री जीकी निश्रामे पोरवाल पुनासाने 3000 यात्रियोके साथ यात्रा की थी ।

16 सागंरपुर निवासी जयसिंहने आगराके संघवी रत्नाशाहने 88 संघोके साथ आबु एवं जीरावलाकी यात्रा की थी ।

17. ओसवाल वंशके धनजी, मनजी, पनजीने, 6 लाख द्रव्य खर्चकरके संघ निकाला था ।

18. वीर सं. 1491 मे भव्य विजयगणि 5000 यात्रिकोके साथ आये थे।

19 वीर सं. 1501 मे पोरवाल पुनाशाह 5000 यात्रिकोके साथ आये थे।

20 वीर सं. 1520 मे भानुचंद्रसूरिजी 5000 यात्रिकोके साथ शेठ खेमाशा आये थे ।

21 वीर सं. 1536 मे लक्ष्मीसागर सूरिजी 5000 यात्रिकोके साथ ओसवाल कर्माशा आये थे

22 वि.सं. 1891 मे अ. सु.पंचमी के दिन जिनमहेन्द्रसूरिके उपदेशसे जैसलमेर निवासी गुमानचंदजी बाफना के पांच पुत्रोने 23 लाख रुपये खर्च करके शत्रुंजय का संघ निकाला उसमे जीरावला खास गये थे ।

23. वि.सं. 1525 मे अहमदाबादके संघवी गदराज डुंगरशाहने जीरावला तीर्थकी सामुदायिक यात्रा की थी जिसमे 700 बैलगाडिया थी । यही गदाशाहने आबूके भीम विहारमे 120 मण पितल की मूर्ति भराकर प्रतिष्ठा कराई थी ।

(जीरावला इतिहास कापरडा तीर्थकाइति. -गुरुगुण काव्य)

जीरावला में चमत्कार

- जीरावला में अेक कडुकर नामका ब्राह्मण धर्मी एवं सेवाभावी था. उसके पास अेक सफेद गाय थी. वो गाय प्रतिदिन जंगल में एकही स्थान पर अपना दूध अपने आंचल से झराती (देती) थी घर पर आने के बाद नहि देती थी. यह बात ब्राह्मणने नगर के धनाढ्य शेठ धन्नाशाह को की. धन्नाशाह को रात्रि में स्वप्न आया कि जहां पर गाय दूध देती है उस स्थान पर पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। उस प्रतिमा को 5 दिन के बाद जीरावला मंदिर में स्थापन करना धन्नाशाह ने उसी तरह किया ।

- जीरापल्ली गच्छ के आचार्य गुणचन्द्रसूरिजी ने सं. 1421 में ज्येष्ठ शुक्ला दशमी के दिन प्रतिष्ठा की ।

(कापरडा स्वर्ण जयंतीग्रंथ)

वस्तुपाल तेजपालका वैभव

- हंमेशा वस्तुपालकी सेवामे — 1800 सुभट
- हंमेशा तेजपालकी सेवामे — 1400 सुभट
- उत्तम जातिके घोडे — 5000
- साधारण घोडे — 10,000
- उत्तम पवनवेगी घोडे — 5000
- उत्तम गाये — 30,000
- उत्तम बैल — 2000
- उत्तम भैंस — 1000
- उत्तम सांढनियो — 10,000
- उत्तम दास दासिया — 10,000
- भेंट हाथी — 300
- सुवर्ण — 84,00,00,000
- चांदी — 8,00,00,000
- नकद रुपये — 50,00,000
- तरह तरह के वस्त्र — 50,00,00,000
- द्रव्य भण्डार — 56

(प्राग्वाट इतिहास)

वस्तुपाल तेजपाल का परिवार

- दादाका नाम — सोमसिंह
- दादीका नाम — सीतादेवी
- पिताका नाम — अश्वराज
- भाईका नाम — लुणिग, महलदेव वस्तुपाल, तेजपाल
- बहन का नाम — जाल्हे, माउ, साउ, धनदेवी, सोहगा, वयजू, पद्मला
- लुणिगकी पत्नी — लुणादेवी
- महल देवकी पत्नी — लीलादेवी, प्रतापदेवी
- वस्तुपालकी पत्नी — अनुपमा, सोखु
- वंश — पोरवाल वंश
- मल्लदेवके पुत्र-पुत्री — पुर्णसिंह, सुजलदेवी, समलदेवी
- वस्तुपाल के पुत्र — जयंतसिंह, प्रतापसिंह
- तेजपाल के पुत्र — लावण्यसिंह वउलदेवी सुहड सिंह
- अश्वराजके भाई — विजयसिंह तिहुणपाल केलिकुमार

(प्राग्वाट इतिहास)

हमारे अन्य प्रकाशन

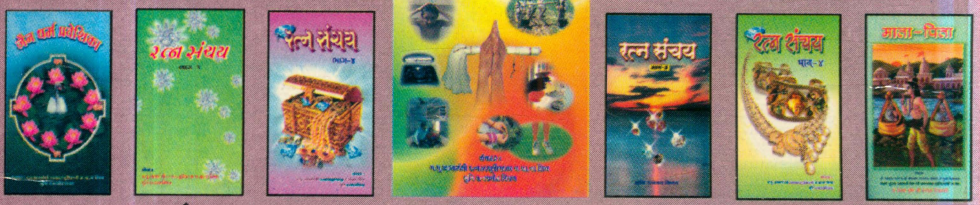

प्राप्ति स्थान

श्री पारस-गंगा ज्ञान मंदिर

बी-103,104, केदार टावर, राजस्थान होस्पीटल के सामने,
शाहीबाग, अमदावाद - 4. फोन : 22860247 (राजेन्द्रभाई)

NAVNEET PRINTERS M. 98252 61177